



वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय  
कोटा

एम.जे.एम.सी. 4  
जनसंचार के सिद्धान्त  
(Principles of Mass  
Communication)



पत्रकारिता एवं जनसंचार स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम  
(Master of Journalism & Mass Communication)

जनसंचार के सिद्धान्त

1





वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

एम. जे. एम. सी. - 4  
जनसंचार के सिद्धान्त

## पत्रकारिता एवं जनसंचार स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम

जनसंचार के सिद्धान्त - 1

---

## पाठ्यक्रम विशेषज्ञ समिति

---

* <b>प्रो. जी.एस.एल. देवड़ा</b> कुलपति कोटा खुला विश्वविद्यालय कोटा	(अध्यक्ष समिति)	* <b>प्रो. ए.के. बनर्जी</b> पूर्व-अध्यक्ष पत्रकारिता विभाग बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी
* <b>डॉ. ए. डबल्यू. खान</b> कुलपति इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय नई दिल्ली		* <b>प्रो. जे.एस. यादव</b> निदेशक भारतीय जनसंचार संस्थान नई दिल्ली
* <b>राधेश्याम शर्मा</b> पूर्व-महानिदेशक माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय, भोपाल(म. प्र.)		* <b>डॉ. भंवर सुराणा</b> व्यूरो चीफ/ विशेष संवाददाता दैनिक हिंदुस्तान जयपुर
* <b>डॉ. ओ.पी. केजरीवाल</b> महानिदेशक, महानिदेशालय आकाशवाणी नई दिल्ली		* <b>डॉ. रमेश जैन</b> अध्यक्ष-जनसंचार विभाग कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा

---

### संयोजक

**डॉ. रमेश जैन**- अध्यक्ष, जनसंचार विभाग  
कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा

---

### पाठ-संपादक एवं भाषा-संपादक

पाठ-संपादक <b>डॉ. रमेश जैन</b> अध्यक्ष, जनसंचार विभाग कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा	भाषा-संपादक <b>डॉ. विष्णु पंकज</b> वरिष्ठ साहित्यकार-पत्रकार जयपुर
--	---

---

### अकादमिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था

<b>प्रो.(डॉ.) नरेश दाधीच</b> कुलपति वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा	<b>प्रो.(डॉ.)एम.के. घड़ोलिया</b> निदेशक(अकादमिक) संकाय विभाग	<b>योगेन्द्र गोयल</b> प्रभारी पाठ्य सामग्री उत्पादन एवं वितरण विभाग
---	--	---

---

### पाठ्यक्रम उत्पादन

**योगेन्द्र गोयल**  
सहायक उत्पादन अधिकारी,  
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

---

### उत्पादन - अप्रैल 2012

**सर्वाधिकार सुरक्षित** : इस सामग्री के किसी भी अंश की वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में अथवा मिमियोग्राफी (चक्रमुद्रण) द्वारा या अन्यथा पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है। कुलसचिव व.म.खु.वि. कोटा द्वारा वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा (राज.) के लिये मुद्रित एवं प्रकाशित।

पाठ्यक्रम - चतुर्थ  
खण्ड- 1

# 1

इकाई 1	
संचार-जनसंचार : अवधारणा एवं स्वरूप	8-25
इकाई 2	
जनसंचार : लक्ष्य, कार्य और प्रक्रिया	26-43
इकाई 3	
जनसंचार माध्यम एवं सामाजिक परिवर्तन	44-59
इकाई 4	
जनसंचार माध्यम विशेषज्ञों के विशेष प्रतिवेदन (मैकब्राईड प्रतिवेदन)	60-76

---

## पाठ लेखक

---

- |  |  |
|--|--|
| 1. <b>डॉ. जवरीमल पारख</b><br>रीडर, हिन्दी विभाग<br>इन्दिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली                              | 4. <b>प्रतुल अथड्या</b><br>स्वतंत्र पत्रकार<br>मंडावा (राजस्थान)                         |
| 2. <b>डॉ. पवन अग्रवाल</b><br>हिन्दी विभाग<br>लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ  | 5. <b>डॉ. विजय कुलश्रेष्ठ</b><br>सहआचार्य-हिन्दी विभाग<br>सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर |
| 3. <b>महेश्वरदयालु गंगवार</b><br>वरिष्ठ पत्रकार<br>सदस्य, भारतीय प्रेस परिषद<br>सचिव, नेशनल यूनियन ऑफ जर्नलिस्ट<br>नई दिल्ली | 6. <b>डॉ. रमेश जैन</b><br>अध्यक्ष, जनसंचार विभाग<br>कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा        |
|  | 7. <b>डॉ. मुक्तिनाथ झा</b><br>वाराणसी  |
- 

## खंड एवं इकाई परिचय

---

### खंड परिचय

पत्रकारिकता एवं जनसंचार स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम का प्रश्नपत्र चतुर्थ 'जनसंचार के सिद्धांत' है। आज का समय जनसंचार का है। जनसंचार माध्यमों ने देश और व्यक्ति की दूरियां कम कर दी हैं। एक दूसरे को निकट ला दिया है। भारत एक विकासशील देश है। यहां संचार प्रघोषिकी का विस्तार अमरीका और यूरोपीय देशों की तुलना में पीछे हैं। लेकिन गत पांच-दस वर्षों में इस क्षेत्र में हमने विशेष प्रगति की है।

प्रस्तुत खंड का उद्देश्य जनसंचार के सिद्धांत के विभिन्न पहलुओं से अवगत कराना है। हम जनसंचार की अवधारणा एवं स्वरूप को समझने का प्रयत्न करेंगे। साथ ही जनसंचार क्या है इस का हमने व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक जीवन से क्या संबंध है, आदि को भी जानेंगे। आशा है 'जनसंचार के सिद्धांत' विशेषक खंड की सभी इकाइयां आपको जनसंचार के विभिन्न पहलुओं से परिचय कराएंगी।

### इकाई परिचय

इकाई 1 'संचार-जनसंचार : अवधारणा एवं स्वरूप' की है। इसमें संचार और जनसंचार, संचार के विविध रूप, जनसंचार की अवधारणा, जनसंचार का स्वरूप की निर्धारित तत्वों की विवेचना की गई है। संचार के विविध रूप में अंतर्व्यक्तिक संचार, अंतर वैयक्तिक संचार, लघु समूह संचार एवं जनसंचार पर भी यथेष्ट प्रकाश डाला गया है।

इकाई 2 'जनसंचार : लक्ष्य कार्य और प्रक्रियाएं' से संबद्ध है। इसमें जनसंचार के लक्ष्य-राजनीतिक लक्ष्य, आर्थिक लक्ष्य, सामाजिक लक्ष्य, सांस्कृतिक लक्ष्य की विवेचना की गई है। जनसंचार के कार्य-सूचना, शिक्षा एवं मनोरंजन से भी अवगत कराया गया है। जनसंचार की प्रक्रिया के अंतर्गत प्रसारण के विभिन्न चरणों को बताया गया है।

इकाई 3 'जनसंचार माध्यम एवं सामाजिक परिवर्तन' की है। इसमें जनसंचार माध्यमों की विकासात्मक भूमिका, जनसंचार तथा सामाजिक परिवर्तन और जनसंचार आदि बिन्दुओं के व्याख्या की गई है। इस इकाई में विभिन्न माध्यमों का जनसंचार से क्या संबंध है? जनसंचार माध्यमों की

सामाजिक परिवर्तन की भूमिका कैसी होती है? सामाजिक परिवर्तन का वर्तमान परिप्रेक्ष्य कैसा होता है? आदि की यथेष्ट जानकारी दी गई है।

जनसंचार माध्यम विशेषज्ञों के विशेष प्रतिवेदन-मैकब्राइड प्रतिवेदन इकाई 4 है। 1997 में युनेस्को ने विश्व के संचार माध्यमों की समस्या का अध्ययन करने की लिये सीन मैकब्राइड की अध्यक्षता में अंतर्राष्ट्रीय आयोग नियुक्त किया था। आयोग ने 1979 के अंत में अपनी रपट दी थी। प्रस्तुत इकाई में रपट के मुख्य अंशों से परिचय कराया गया है।

---

## इकाई 1 संचार-जनसंचार : अवधारणा एवं स्वरूप

---

### इकाई की रूपरेखा

- 1.0 उद्देश्य
- 1.1 प्रस्तावना
- 1.2 संचार और जनसंचार
- 1.3 संचार के विविध रूप
  - 1.3.1 वैयक्तिक संचार
  - 1.3.2 अंतर्वैयक्तिक संचार
  - 1.3.3 लघु समूह संचार
  - 1.3.4 जनसंचार
- 1.4 जनसंचार की अवधारणा
  - 1.4.1 जन और जनसंचार
  - 1.4.2 जनसंचार की विभिन्न विशेषताएं
  - 1.4.3 जनसंचार के सामाजिक संदर्भ
- 1.5 जनसंचार का स्वरूप
- 1.6 जनसंचार के स्वरूप के निर्धारक तत्व
  - 1.6.1 संप्रेषण को प्रभावित करने वाले तत्व
  - 1.6.2 संचार साधनों पर अधिकार का सवाल
- 1.7 सारांश
- 1.8 शब्दावली
- 1.9 निबंधात्मक प्रश्न

---

### 1.0 उद्देश्य

जनसंचार आधुनिक क्षेत्रों का अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय बनता जा रहा है। इधर पिछले वर्षों में भारत में भी इस विषय पर अध्ययन का विस्तार हुआ है। अगर विचार करें तो हम पाएंगे कि इसके अध्ययन की शुरुआत का संबंध जनसंचार के विस्तार से जुड़ा है। भारत एक विकासशील देश है। यहां संचार प्रौद्योगिकी का विस्तार अमरीका और यूरोपीय देशों की तुलना में पीछे है। लेकिन पिछले पंद्रह सालों में इस क्षेत्र में तेजी से विस्तार हुआ है। हम यह दावा करने की स्थिति में तो नहीं हैं कि जनसंचार के माध्यमों को हमने जन-जन तक पहुंचा दिया है लेकिन यह जरूर कह सकते हैं कि जनसंचार के आधुनिकतम और नवीनतम माध्यमों तक हमारे देश की पहुंच बन गई है। जनसंचार के इन माध्यमों का विस्तार तेजी से बढ़ रहा है। इसलिए यह जरूरी है कि हम यह समझें कि जनसंचार है क्या और इसका हमारे व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक जीवन से क्या संबंध हैं। जनसंचार माध्यमों के अध्ययन के परिप्रेक्ष्य में हम इस इकाई में जनसंचार की अवधारणा और स्वरूप को समझने का प्रयास करेंगे। इस इकाई में हमारा मकसद जनसंचार की मूलभूत अवधारणा को समझना है। स्पष्ट ही यह समझे बिना कि जनसंचार क्या है, हम जनसंचार से जुड़े पक्षों को नहीं समझ पाएंगे। हमारा यह पूरा पाठ्यक्रम जनसंचार के विभिन्न पहलुओं से ही संबद्ध है।



इस इकाई को पढ़ने के बाद हम आशा करते हैं कि आप :

- संचार और जनसंचार का अंतर समझ सकेंगे,
- संचार के विविध रूपों को व्याख्यायित कर सकेंगे,
- जनसंचार की अवधारणा के विभिन्न पहलुओं को समझ सकेंगे,
- जनसंचार के संदर्भ में 'जन' शब्द की व्याख्या कर सकेंगे,
- जनसंचार की विभिन्न विशेषताओं को पहचान सकेंगे,
- जनसंचार के विभिन्न घटकों का उल्लेख कर सकेंगे, और
- जनसंचार को निर्धारित करने वाले तत्वों को समझ सकेंगे ।

---

## 1.1 प्रस्तावना

---

जनसंचार के बारे में बात करने से पहले हमें यह समझना जरूरी है कि यह शब्द यहां किस संदर्भ में प्रयुक्त हो रहा है। जनसंचार दो शब्दों से मिलकर बना है-जन और संचार। यह शब्द अंग्रेजी के शब्द (Mass Communication)के अनुवाद के रूप में प्रचलित है। 'जन' शब्द पर विचार करने से पहले संचार शब्द पर विचार करेंगे। संचार का अर्थ है संचरण करना यानी एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाना। चर का अर्थ चलने या जाने से है। स्पष्ट ही संचरण शब्द में चलने या जाने का भाव निहित है। लेकिन जिस अध्ययन क्षेत्र के संदर्भ में इस पर विचार कर रहे हैं वहां अर्थ को इसी विशिष्ट क्षेत्र के संदर्भ में ही रखकर देखना होगा। अंग्रेजी के कम्युनिकेशन शब्द में भाव भेजने के अर्थ में है। इसलिए हिंदी में भी इस शब्द का एक और अर्थ प्रचलित है- संप्रेषण। बहरहाल, यहां संचार और संप्रेषण दोनों अंग्रेजी के कम्युनिकेशन के पर्याय के रूप में प्रयुक्त हुए हैं और यहां भी इसी रूप में इन पर विचार किया गया है। इसी संदर्भ में एक और शब्द संवाद की ओर भी संकेत करना जरूरी है। संवाद के लिए बातचीत शब्द का भी प्रयोग किया जाता है। जब आगे इकाई में हम संचार शब्द पर विचार करेंगे और जनसंचार की अवधारणा को समझने का प्रयास करेंगे तो हमें इस शब्द से संचार और जनसंचार के फर्क को जानने की भी जरूरत होगी।

जनसंचार की अवधारणा के संदर्भ में 'जन' शब्द का भी अत्यंत महत्व है। 'जन' के लिए अंग्रेजी के शब्द 'मास' (Mass)का प्रयोग किया गया है। मास का अर्थ हिंदी में जन किया गया है। जन हिंदी में जनता के अर्थ में प्रयुक्त होता है और जनता के लिए अंग्रेजी में एक और शब्द पीपुल का प्रयोग होता है। मास की तुलना में पीपुल ज्यादा गरिमामय शब्द है। मास में जनता एक विचारहीन समूह या भीड़ के रूप में सामने आती है जबकि पीपुल में जनता एक विचारवान जागरूक समूह के रूप में आती है। हिंदी का जन शब्द आमतौर पर इस दूसरे अर्थ में ही प्रयुक्त होता है। लेकिन यहां जन का प्रयोग मास के रूप में ही हुआ है। इस प्रकार जनसंचार शब्द को हम अंग्रेजी के मास कम्युनिकेशन के अर्थ में लेंगे और उस पर विचार भी उसी अर्थ में करेंगे। यह बात कहना इसलिए भी जरूरी है क्योंकि जनसंचार के अध्ययन की शुरुआत भले ही हमारे देश में हो गई हो लेकिन इससे संबंधित संकल्पनाओं की उत्पत्ति प्रायः पश्चिमी देशों में ही हुई है। हम भी अपने अध्ययन के दौरान उन संकल्पनाओं पर विचार करेंगे यद्यपि हमारे सामने विचारार्थ विषय अपने देश में जनसंचार माध्यमों का विकास भी होगा।

जनसंचार की अवधारणा और स्वरूप से संबंधित इस इकाई में हम अपनी बात को सिर्फ सैद्धांतिक रूप से ही नहीं प्रस्तुत करेंगे बल्कि कोशिश करेंगे कि विभिन्न माध्यमों के जो सर्वज्ञात अनुभव हैं, उनका हवाला देते हुए हम अपनी बात आप तक पहुंचाएं। हमारी कोशिश यह भी होगी कि आपको पारिभाषिक शब्दों के जाल में न फंसने दिया जाए और सहज ढंग से हम अपनी बात कह सकें।

## 1.2 संचार और जनसंचार

मैं अपनी बात हाल के एक अनुभव से शुरू करूंगा। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा चलाए जा रहे शैक्षिक कार्यक्रम सृजनात्मक लेखन में डिप्लोमा के विद्यार्थियों के लिए दो दिन का विस्तारित टेलिक्रान्फ्रेंसिंग का कार्यक्रम आयोजित किया गया था। टेलिक्रान्फ्रेंसिंग का अर्थ है टेलीविजन के माध्यम से लोगों से संवाद स्थापित करना। यानी कि इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के संचार केंद्र स्थित स्टूडियो से सीधे प्रसारित कार्यक्रम को उसी समय इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय केंद्रों और चुर्नीदा अध्ययन केन्द्रों पर मौजूद विद्यार्थियों द्वारा देखा गया और उनके द्वारा स्टूडियो में मौजूद अध्यापकों या विशेषज्ञों से सवाल पूछे गये और उनके जवाब भी उनको उसी समय दिए गए। यहां ध्यान देने की बात यह है कि सवाल पूछने के लिए विद्यार्थियों को एस.टी.डी. और फैक्स की सुविधा उपलब्ध थी लेकिन दृश्य माध्यम की नहीं। इस प्रकार यह टेलिक्रान्फ्रेंसिंग कार्यक्रम एकतरफा दृश्य और दुतरफा श्रव्य के रूप में उपलब्ध था।

इस विस्तारित टेलिक्रान्फ्रेंसिंग कार्यक्रम की दूसरी विशेषता यह थी कि स्टूडियो में भी लगभग बीस विद्यार्थी मौजूद थे जो दिल्ली और उसके आसपास के क्षेत्रों से बुलाए गए थे। उन्होंने कार्यक्रम के दौरान ही मौजूद विशेषज्ञों और अध्यापकों के सामने अपनी समस्याएं रखी थी और जिनका समाधान करने का प्रयास किया गया था।

इस कार्यक्रम की तीसरी विशेषता यह थी कि स्टूडियो में स्टेज पर मौजूद अध्यापक और विशेषज्ञ अपनी बात आपसी संवाद से रख रहे थे न कि व्याख्यान के जरिए।

चौथी विशेषता यह थी कि इस पूरे कार्यक्रम में ऐसे अध्ययन केंद्र भी बड़ी संख्या में शामिल थे जो इस कार्यक्रम को देख तो सकते थे लेकिन जिनके पास उसी समय अपने प्रश्न पूछने का या अपनी बात रखने की सुविधा उपलब्ध नहीं थी। अब पूरे देश पर विचार कीजिए और सोचिए कि इनमें संचार के कौन-कौन से रूप मौजूद थे?

संचार का सबसे पहला रूप व्यक्ति का स्वयं से बात करना होता है। जब वह किसी की ओर तत्पर होता है या किसी से संवाद करना चाहता है तो स्वयं उसके मन में कई सवाल उठते हैं और वह उनके जवाब ढूंढता है। मसलन इस विस्तारित टेलिक्रान्फ्रेंसिंग कार्यक्रम में भाग लेने वाले सहभागी के मन में यह सवाल तो जरूर पैदा हुआ होगा कि कार्यक्रम कैसा होगा? स्वयं उसकी भूमिका इसमें क्या होगी? यह जो खुद से बातचीत करना है यह संचार का सबसे पहला रूप कहा जा सकता है। संचार का यह रूप सभी तरह के मानव-संचार की बुनियाद है। इसके बिना कोई और संचार संभव ही नहीं है। जब तक हम दूसरे की बात को समझने की क्षमता हासिल नहीं करते और उस पर विचार कर अपनी बात को दूसरे तक पहुंचा सकने में सक्षम नहीं होते तब तक दूसरे संचार संभव नहीं है। इसलिए संचार के इस रूप को सभी संचार की बुनियाद कहा गया है। यह एक तरह की मानसिक प्रक्रिया है जिसमें हम सोचने, याद रखने, समझने और विश्लेषित करने की अपनी क्षमताओं का इस्तेमाल करते

हैं। यह सब हम भाषा के द्वारा करते हैं। संचार में भाषा की भूमिका पर विचार हम तब करेंगे जब हम इस बात पर विचार करेंगे कि संचार के लिए किसी माध्यम का होना क्यों जरूरी है।

संचार का वास्तविक प्रयोग हम तभी करते हैं जब एक व्यक्ति दूसरे तक अपनी बात पहुंचाता है जब यह बात का पहुंचना एक तरफा होता है, यानी एक व्यक्ति जब संदेश भेजता है और दूसरा उसे ग्रहण करते हैं तो वह संचार तो होगा लेकिन एकतरफा। लेकिन जब दो व्यक्ति या दो से ज्यादा व्यक्ति आपस में बातचीत करते हैं यानी जब एक कहता है, दूसरा सुनता है, फिर दूसरा जवाब देता है और पहला सुनता है तो यह संचार दुतरफा होगा और इसे हम संवाद कहेंगे। यह संवाद दो के बीच हो सकता है और दो से ज्यादा लोगों के बीच भी। जब दो से ज्यादा लोगों के बीच संवाद हो तो हम आमतौर पर उसे संवाद कहने की बजाए बातचीत कहते हैं। संचार यहां भी है।

लेकिन जब किसी जगह इतने लोग मौजूद हों जैसे किसी नेता के सार्वजनिक भाषण में मौजूद लोग नेता का भाषण तो सुनते हैं, लेकिन हजारों लोगों से नेता की बातचीत नहीं हो सकती, यह भाषण संचार के दायरे में तो आएगा, लेकिन संवाद के दायरे में नहीं।

अब हम: रेडियो से प्रसारित भाषण को या गीत को या दूरदर्शन से प्रसारित समाचार को संचार की परिधि में तो मानेंगे क्योंकि यहां श्रोता या दर्शक प्रसारित होने वाले भाषण, गीत और समाचार को देखता-सुनता है लेकिन वह उसी वक्त अपनी प्रतिक्रिया उन तक नहीं पहुंचा पाता या उसमें बराबर के सहभागी के रूप में भाग नहीं लेता। ध्यान देने की बात यह है कि ये सब संप्रेषण बड़े समूह के लिए हैं। विविध भारती से प्रसारित होने वाली फिल्मी गीतों को लाखों-लाख लोग सुन सकते हैं। दूरदर्शन से प्रसारित होने वाले समाचारों को लाखों-लाख लोग देख (और सुन)सकते हैं। अब ऐसे संचार को जो दो-चार लोगों के लिए न होकर लाखों-लाख लोगों के लिए हो तो उस संचार को जनसंचार की संज्ञा दी जाएगी। हां, संभव है कि उन्हें उतने लोग न देखें या सुनें जितने लोगों के लिए वह संप्रेषित हो रहा हो।

अब आप शुरू में दिए गए उदाहरण पर विचार करें। क्या इसे हम जनसंचार का उदाहरण कह सकते हैं? क्या इसमें संचार के वैयक्तिक रूप मौजूद हैं? क्या इसे संवाद कहा जा सकता है? सोचिए और तय कीजिए।

---

### 1.3 संचार के विविध रूप

---

ऊपर की बातचीत से आप कुछ हद तक संचार का तात्पर्य समझ गए होंगे। संचार का अर्थ है जब हम किसी विचार, सूचना और भाव को दूसरों तक संप्रेषित करते हैं। यह संप्रेषण व्यक्ति-व्यक्ति के बीच हो सकता है व्यक्ति और समूह के बीच हो सकता है और यह समूह छोटा और बड़ा हो सकता है। संचार एकतरफा हो सकता है और दुतरफा भी हो सकता है, लेकिन इस संचार के लिए किसी माध्यम की जरूरत होती है, ताकि वह एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक और एक स्थान से दूसरे स्थान तक जा सके। संचार के इन माध्यमों का बहुत महत्व है क्योंकि जनसंचार के अध्ययन की शुरुआत इन माध्यमों में होने वाले परिवर्तनों की वजह से हुई है। हम इस बारे में बातचीत आगे करेंगे। फिलहाल हम संचार के विविध रूपों को परिभाषित करें।

### 1.3.1 वैयक्तिक संचार

जब कोई व्यक्ति किसी भी मुद्दे पर अपने आप से बात करता है, उस विचार करता है, तो इस प्रक्रिया को संचार की परिभाषा में वैयक्तिक संचार (personal communication) कह सकते हैं। जैसाकि हम आरंभ में कह चुके हैं, वैयक्तिक संचार सभी मानव संचार रूपों की बुनियाद है। शुरू में हमने जो उदाहरण दिया था, उस पर विचार करें। यहां यानी विस्तारित टेलिकॉन्फ्रेंसिंग में भाग लेने वाला प्रत्येक सहभागी तब तक सक्रिय रूप से भाग नहीं ले सकता जब तक कि वह वैयक्तिक संचार की प्रक्रिया से नहीं गुजरता। मंच पर बैठे हुए विशेषज्ञ अपनी बात या दूसरों की बात पर अपनी प्रतिक्रिया तभी जाहिर कर सकते हैं जब वे इसी वैयक्तिक संचार प्रक्रिया से गुजरते हैं। यह प्रक्रिया हमारी ज्ञानेंद्रियों द्वारा संपन्न होती है। ज्ञानेंद्रियां हमें जो सूचनाएं प्रेषित करती हैं, हम अपने मानस में उन पर विचार करते हैं और फिर उस पर अपनी प्रतिक्रिया जाहिर करते हैं। इस प्रकार संचार की प्रत्येक प्रक्रिया इसी वैयक्तिक प्रक्रिया द्वारा संभव होती है। उदाहरण के लिए जब हम अपने सामने बैठे व्यक्ति की बात सुन रहे होते हैं तो हमारे कान उसकी बात पर और हमारी आंखें उसके चेहरे पर टिकी होती हैं। कान में जो शब्द पड़ते हैं और कहने वाले व्यक्ति के चेहरे पर जो भाव आते हैं उससे हम कही गई बात का अर्थ समझते हैं। यह संप्रेषण हमारी श्रव्य और चाक्षुष इंद्रियों द्वारा संपन्न हुआ है और इस पर प्रतिक्रिया इसी संप्रेषित संदेश पर हमारी मानसिक प्रतिक्रिया से तय होती है। इस प्रकार हमारी ज्ञानेंद्रियों द्वारा संचार की यह वैयक्तिक प्रक्रिया सामने आती है।

### 1.3.2 अंतर्वैयक्तिक संचार

टेलिकॉन्फ्रेंसिंग के इसी उदाहरण पर आगे विचार करें। जब कार्यक्रम आरंभ हुआ और विशेषज्ञ मंच पर आ गए तो पहले सत्र में मंच पर सिर्फ एक विशेषज्ञ और एक शिक्षक मौजूद थे। विषय था रेडियो के लिए लेखन। शिक्षक ने विशेषज्ञ से एक सवाल पूछा, विशेषज्ञ ने जवाब दिया इस तरह उन दोनों के बीच बातचीत का सिलसिला चल पड़ा। अब बातचीत के इस रूप पर विचार करें यहां दो व्यक्ति एक दूसरे के आमने-सामने बैठे हैं और आपस में बातचीत कर रहे हैं। संचार के इस रूप को हम अंतर्वैयक्तिक संचार (Inter personal communication) कह सकते हैं। क्योंकि यह एक से अधिक व्यक्तियों के बीच घटित हो रहा है। यहां दोनों सहभागियों में अंतर्वैयक्तिक संचार की प्रक्रिया भी साथ-साथ चल रही है और इसी के फलस्वरूप दोनों सहभागी एक दूसरे तक अपनी बात भी पहुंचा रहे हैं। यह संचार किस वजह से संभव हुआ है? क्योंकि दोनों भागीदार एक दूसरे की भाषा समझते हैं। इसलिए भी कि दोनों एक ही भाषा हिंदी का प्रयोग कर रहे हैं। यदि दोनों व्यक्ति अलग-अलग भाषाओं का प्रयोग करते तब दोनों को ही एक दूसरे की भाषा समझ में नहीं आती। ऐसे में क्या संचार संभव होता? दो या दो से अधिक व्यक्तियों में संचार के लिए यह जरूरी है कि वे एक ही माध्यम का प्रयोग करें। कई बार भाषा न जानने पर व्यक्ति अंगों का इस्तेमाल करता है। हाथ से इशारा कर या आंख के द्वारा अपनी बात दूसरे तक पहुंचाने की कोशिश करता है। ये शारीरिक संकेत भी माध्यम का ही एक रूप है।

जब दो व्यक्ति एक दूसरे से बात करते हैं तो उन्हें आपस के माहौल का भी ध्यान रखना होता है। यदि दूसरों की मौजूदगी में बातचीत हो रही है तो बातचीत का स्वरूप वही नहीं होगा जो व्यक्ति बिल्कुल कांत में करेंगे। यहां भी विशेषज्ञ और शिक्षक के बीच बातचीत को स्टुडियो में मौजूद

विद्यार्थी सुन रहे हैं और सीधे प्रसारण की वजह से क्षेत्रीय केंद्रों और अध्ययन केंद्रों पर मौजूद विद्यार्थी भी सुन रहे हैं। जाहिर है कि दो लोगों की ऐसी बातचीत जो दूसरे लोगों की द्वारा भी सुनी जा रही हो, उस बातचीत से नितांत भिन्न होगी जो नितांत निजी हो और किसी के द्वारा नहीं सुनी जा रही हो। इसी प्रकार बातचीत पर बाहरी शोर या दूसरी तरह की बाधाओं का भी असर होता है। अगर बात करने वाले एक ही भाषा इस्तेमाल कर रहे हैं तो भी जरूरी नहीं कि दोनों की बात दोनों पूरी तरह समझ सकें। अगर उनकी भाषा में ऐसे शब्दों का या ऐसे पदों का प्रयोग किया गया हो जो दूसरे के लिए अपरिचित हो तो भी उनके लिए बातचीत करने में मुश्किलें पेश आएंगी। इसका मतलब यह है कि लोगों की बातचीत के लिए उनकी भाषा का ही एक होना जरूरी नहीं है बल्कि उनके अनुभव क्षेत्र का भी एक समान होना जरूरी है। अब इसी उदाहरण को लें। यहां विशेषज्ञ और शिक्षक दोनों का क्षेत्र एक ही था। यानी कि वे रेडियो लेखन के बारे में जानते थे, इसीलिए उनके द्वारा आपस में बातचीत करना संभव हुआ। अब स्थिति इस को थोड़ा बदल कर देखें। रेडियो लेखन के विशेषज्ञ के साथ अगर किसी ऐसे व्यक्ति को बैठा दिया जाता जिसे कि रेडियो लेखन की थोड़ी भी जानकारी नहीं है तो क्या उसके लिए उस विशेषज्ञ से रेडियो लेखन पर बात करना मुमकिन होता? जाहिर है नहीं। इसका अर्थ यह भी नहीं हुआ कि इन दो लोगों की बातचीत का प्रभाव तभी होगा जब वे एक समान अनुभव क्षेत्र से जुड़े विषय पर बात करेंगे। जितनी उनकी जानकारी गहरी और विस्तृत होगी उतनी ही उनकी बातचीत भी प्रभावशाली होगी।

### 1.3.3 लघु समूह संचार

टेलिक्रान्फ्रेंसिंग के दूसरे सत्र में मंच पर विशेषज्ञों और शिक्षकों की संख्या बढ़कर चार हो गई और पहले सत्र की तुलना में स्टुडियो में मौजूद विद्यार्थियों की भागीदारी में भी इजाफा हुआ। अब बातचीत वहां उपस्थित लगभग बीस-पच्चीस लोगों के बीच हो रही थी। यह अवश्य है कि एक समय में एक ही व्यक्ति ही बोल रहा था, लेकिन सभी इस बातचीत में शामिल थे। इस तरह की बातचीत को हम लघु समूह संचार कह सकते हैं। जाहिर है कि लघु समूह बातचीत में लोगों की संख्या असीमित नहीं हो सकती। ऐसी कोई भी संख्या जिसे नियंत्रित करना नामुमकिन हो जाए वहां संचार भी असंभव हो जाएगा। या तो वह एक तरफा संचार होगा या फिर हो-हल्ला होगा।

### 1.3.4 जनसंचार

संचार का वह रूप जो एक साथ अनगिनत लोगों के लिए हो तो वह जनसंचार कहा जाएगा। जैसे किसी स्थान विशेष पर नेता द्वारा दिया गया भाषण जिसे कई लोग सुन सकते हैं। इसी तरह से रेडियो से प्रसारित होने वाला समाचार या टेलीविजन पर दिखाए जाने वाले धारावाहिक जनसंचार की श्रेणी में आएंगे। ध्यान देने की बात है कि जनसंचार के लिए किसी चैनल की, किसी माध्यम की आवश्यकता होगी। नेताजी द्वारा भरी सभा में भाषण तभी मुमकिन होगा जब वहां लाउडस्पीकर की सुविधा होगी, अन्यथा उस नेता की बात बहुत कम लोग सुन पायेंगे। इसी तरह रेडियो या टेलीविजन द्वारा प्रसारित होने वाले प्रसारण भी तभी लोगों तक पहुंच पाते हैं जब उनके प्रसारण की तकनीकी सुविधाओं का संयोजन हुआ और जिन्होंने रेडियो टेलीविजन के द्वारा स्थान और समय की सीमाओं को पार करते हुए संदेशों को लाखों करोड़ों लोगों तक एक साथ पहुंचाया। संचार के इस विराट रूप की वजह से ही जनसंचार शब्द की जरूरत महसूस हुई और हम यहां उसे समझने की कोशिश कर रहे

हैं। टेलिक्रान्फ्रेंसिंग के कार्यक्रम के बारे में हमने बताया था कि उसका सीधा प्रसारण सारे भारत में उपग्रह प्रणाली के जरिए विश्वविद्यालय के अध्ययन और क्षेत्रीय केन्द्रों पर किया जा रहा था और जिसे वहां मौजूद विद्यार्थी देख-सुन रहे थे, क्या उसे हम जनसंचार की श्रेणी में रख सकते हैं?

### बोध प्रश्न 1

- निम्नलिखित संचार रूपों को किस-किस श्रेणी में रखेंगे?
  - क. दो व्यक्ति बस में आपस में बात करते हुए जा रहे हैं।
  - ख. क्लास में अध्यापक पढ़ा रहा है।
  - ग. रामलाल अखबार पढ़ रहा है।
  - घ. नेहा के ससुराल वाले उसकी शादी की वीडियो फिल्म देख रहे हैं।
- संवाद को संचार की किस श्रेणी में रखेंगे और क्यों?
- वैयक्तिक और अंतर वैयक्तिक संचार का अंतर स्पष्ट कीजिए।

## 1.4 जनसंचार की अवधारणा

जनसंचार की अवधारणा का कुछ अनुमान अब तक हमारी बातचीत से आपने लगा लिया होगा। जनसंचार शब्द में जन और संचार दोनों ही महत्वपूर्ण हैं। जनसंचार यानी जन के लिए संचार। जनसंचार की जरूरत क्यों पड़ी, क्या आपने कभी सोचा है? आइए इस पर विचार करें।

जनसंचार का संबंध आधुनिक युग से है। पूंजीवाद के आगमन के साथ बाजारों का विस्तार हुआ। अपना माल ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचाने और उन्हें खरीदने के लिए लोगों को प्रेरित करने के लिए यातायात और संचार के जो साधन उपलब्ध थे वे पर्याप्त नहीं थे?। नए युग की जरूरतों के मुताबिक यातायात और संचार के नए साधनों की जरूरत पड़ी। पूंजीवाद के उदय के साथ यूरोप के देशों में जो लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं का आविर्भाव हुआ, उसका गहरा संबंध जनसंचार के उदय से है। लोकतांत्रिक शासन प्रणाली में लोगों के विचारों को अपने पक्ष में मोड़ने की जरूरत राजनीतिक दलों को होती है। इसके लिए संप्रेषण के माध्यमों का सहारा लिया जाता है। इसी तरह समाज के दूसरे वर्ग भी अपनी बात राजसत्ता तक पहुंचाने के लिए या जनता के ही दूसरे हिस्सों तक अपनी बात पहुंचाने के लिए संचार माध्यमों का सहारा लेते हैं। तार से लेकर टेलीफोन तक, रेडियो से लेकर टेलीविजन तक और प्रिंटिंग प्रेस से लेकर कंप्यूटर तक का आविष्कार इन्हीं जरूरतों की वजह से हुआ।

आज हमारे पास संचार के इतने साधन मौजूद हैं कि अगर हम सिर्फ दो साल पहले के संचार माध्यमों से इनकी तुलना करें तो हमें अभूतपूर्व प्रगति इस क्षेत्र में नजर आएगी। संचार की यह प्रगति बिना संचार प्रौद्योगिकी के विकास के संभव नहीं थी। जनसंचार की अवधारणा पर कोई बातचीत तभी सार्थक हो सकती है जब हम इस बात को भी ध्यान में रखें कि इस संचार प्रौद्योगिकी की जनसंचार की अवधारणा से क्या संबंध है? जनसंचार की अवधारणा को समझने के लिए यह समझने की जरूरत है कि जनसंचार समाज में क्या कार्य करता है। मोटे तौर पर तो हम कह सकते हैं कि जनसंचार माध्यम एक स्थान से दूसरे स्थान संदेश पहुंचाते हैं। लेकिन यह संदेश करते क्या हैं। यानी इन संदेशों की लोगों की जरूरत क्यों होती है? क्या वजह है कि जब दूरदर्शन पर 'रामायण', 'महाभारत' धारावाहिक का प्रसारण हुआ था तब हिंदुस्तान के कोने-कोने में लोग करोड़ों की संख्या में सब काम धंधा छोड़कर टेलीविजन सैट के सामने आकर बैठ जाते थे? या जब टी.वी. पर क्रिकेट का प्रसार होता है तो लोग

घंटों उसे देखते रहते हैं। आखिर जनसंचार के इन माध्यमों का हमारे जीवन पर किस तरह का असर पड़ता है? क्या हम ऐसे समय की कल्पना कर सकते हैं जब टेलीविजन नहीं होगा? क्यों ऐसा है कि हर सरकार इन जनसंचार माध्यमों को अपने नियंत्रण में रखना चाहती है? जनसंचार की अवधारणा को समझने के लिए यह जरूरी है कि हम इन सवालों पर विचार करें। लेकिन इससे पहले हम जन और जनसंचार को परिभाषित करने का प्रयास करेंगे।

#### 1.4.1 जन और जनसंचार

जनसंचार शब्द के लिए अंग्रेजी में 'मास कम्युनिकेशन' शब्द का प्रयोग किया जाता है। मास कम्युनिकेशन में 'मास' शब्द अत्यंत महत्वपूर्ण है। 'मास' का अर्थ हिन्दी में 'जन' किया गया है। जैसा कि कहा जा चुका है कि 'जन' शब्द अंग्रेजी शब्द पीपुल के लिए भी प्रयुक्त होता है। तब मास कम्युनिकेशन को पीपुल्स कम्युनिकेशन क्यों नहीं कहा जाता? मास या पीपुल का यह अंतर बहुत महत्वपूर्ण है। पीपुल यानी जनता का वही अर्थ नहीं हो जो मास का है। मास (जिसे हम आगे जन ही कहेंगे) जनता को नहीं वरन् लोगों के ऐसे समूह को कहा गया है जिसकी अपनी स्वतंत्र पहचान नहीं है। लेकिन क्या जनता वास्तव में इतनी अमूर्त होती है? क्या जन में समाज के सभी वर्गों के लोग समाहित होते हैं? क्या वर्ग, जाति, लिंग, धर्म, भाषा के आधार पर उनमें जो भिन्नता है, उनको इतनी आसानी से दरकिनार किया जा सकता है? जाहिर है नहीं। फिर भी, संचार माध्यमों के संदर्भ में जन को परिभाषित करने की यह परंपरा काफी रूढ़ हो चुकी है।

पूंजीवादी व्यवस्था के अस्तित्व में आने के बाद और खास तौर पर पिछले दो सौ सालों में कई ऐसे संचार माध्यम विकसित हुए हैं जो बहुत व्यापक जन समूह से संबंधित होते हैं जब कोई फिल्म निर्माता फिल्म बनाता है तो वह कुछ लोगों के लिए ही फिल्म नहीं बनाता बल्कि उसकी फिल्म सबके लिए होती है। या कह सकते हैं कम-से-कम उस भाषाई समूह के लिए तो होती ही है जिस भाषा में वह फिल्म बनाई गई है। वस्तुतः जनसंचार का गहरा संबंध जन उत्पाद (mass production) और जन उपभोग (mass consumption) से है। इस बात को उदाहरण से समझने की कोशिश करें। एक व्यक्ति जो कविता लिखता है उसे लिखने के लिए क्या चाहिए कागज और कलम। जाहिर है इन्हें जुटाना किसी भी आदमी के लिए मुश्किल काम नहीं है। लेकिन जब वही व्यक्ति अपनी कविताओं को किताब के रूप में जन-जन तक पहुंचाना चाहता है तो उसके लिए जो साधन चाहिए वह एक साधारण लेखक के बस की बात नहीं होती। तब उसे प्रकाशक के पास जाना पड़ता है। इसी प्रकार फिल्म बनाना कविता लिखने की तरह आसान काम नहीं है, इसके लिए जो साधन चाहिए वह प्रत्येक व्यक्ति को जो फिल्म बनाना चाहता है, आसानी से उपलब्ध नहीं हो जाते। संचार के ये कथित जन माध्यम अपने निर्माण और प्रसारण के लिए ऐसे साधनों पर निर्भर हैं जो किसी लेखक या कलाकार की वैयक्तिक क्षमता पर निर्भर नहीं हैं। समाचारपत्र, टेलीविजन, रेडियो और सिनेमा के लिए जिस व्यापक तंत्र की जरूरत होती है, वह इन्हें परंपरागत माध्यमों से काफी भिन्न बना देता है।

जनसंचार के माध्यम चाहे जैसे भी क्यों न हों और उन्हें प्रसारित करने वालों के मानस में जन की चाहे जो तस्वीर हो, लेकिन जनता न तो निष्क्रिय भागीदार होती है और न ही प्रत्येक संप्रेषित संदेश को आसानी से स्वीकार कर लेती है। सच्चाई यह है कि जनसंचार के इन माध्यमों का प्रभाव लोगों के जीवन पर जितना पड़ता है खुद जनता का इन माध्यमों पर उससे कम प्रभाव नहीं पड़ता।

ध्यान देने की बात यह है कि जनसंचार के आधुनिकतम साधन ऐसे हैं जिनमें लोग उनको ग्रहण समूह के सदस्य के रूप में नहीं करते बल्कि अकेले या दो-चार लोगों के बीच ही करते हैं। उदाहरण के लिए सिनेमा को लें। सिनेमा एक ऐसा माध्यम है जिसका आस्वादन दर्शक सिनेमाघर में जाकर करता रहा है। जहां कई सौ लोग एक साथ बैठकर फिल्म देखते हैं और वहां मौजूद ज्यादातर लोग एक दूसरे से अपरिचित होते हैं। लेकिन आज फिल्म देखना काफी भिन्न हो गया है। किसी भी फिल्म की वीडियो कैसेट लाकर, घर पर वीडियो कैसेट लाकर, घर पर वीडियो प्लेयर के सहारे अपने टेलीविज़न पर वह फिल्म देखी जा सकती है। इसी प्रकार की स्थिति दूसरे माध्यमों की भी है। कंप्यूटर और इंटरनेट के इस युग में कोई भी व्यक्ति अपने घर में बैठे हुए अपने निजी कम्प्यूटर पर दुनिया के किसी भी हिस्से से संपर्क कर सकता है, किसी भी तरह की सूचना हासिल कर सकता है, वेबसाइट के जरिए अपनी सूचना लोगों तक पहुंचा सकता है। कहने का मतलब यह है कि जनसंचार के किसी साधन का उत्पादन चाहे जन उत्पादन के रूप में ही क्यों न हुआ हो, लेकिन उसका उपभोग सामूहिक रूप से हो, यह आवश्यक नहीं है। इस वजह से उस उत्पादन के प्रति लोगों की प्रतिक्रिया में भी भिन्नता आ जाती है।

जनसंचार के एक और महत्वपूर्ण पहलू की चर्चा करना जरूरी है। जनसंचार से संबंधित प्रौद्योगिकी के विकास का एक पहलू यह है कि इसने संदेशों के उत्पादनों को भंडारित करने और उसका पुनरुत्पादन करने की क्षमता हासिल कर ली है। संदेश जिन्हें हम प्रतीकात्मक उत्पादन भी कह सकते हैं, संचार 'प्रौद्योगिकी की वजह से कई-कई बार पुनरुत्पादित किए जा सकते हैं और उन्हें भंडारित कर एक स्थान से दूसरे स्थान और एक समय से दूसरे समय में संप्रेषित किया जा सकता है। जनसंचार की यह क्षमता अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि इसी ने इनके व्यावसायिक उत्पादन की संभावनाओं को बढ़ाया है और संचार को उद्योग का दर्जा दिलवाया है। जनसंचार के इन सारे पहलुओं के संदर्भ में ही हम जनसंचार की अवधारणा को समझ सकते हैं।

#### 1.4.2 जनसंचार की सामान्य विशेषताएं

जनसंचार पर अब तक हम जो चर्चा कर चुके हैं उसके आधार पर हम इसकी एक व्यापक परिभाषा बना सकते हैं। जनसंचार प्रतीकात्मक वस्तुओं का संस्थागत उत्पादन है जिसे भंडारित और पुनरुत्पादित कर व्यापक जन समुदाय को संप्रेषित किया जा सकता है। इस दृष्टि से विचार करने पर हमारे सामने यह स्पष्ट हो जाएगा कि जनसंचार के वे कौन से पक्ष हैं जिसे जानना और समझना जरूरी है। ये जनसंचार की ऐसी विशेषताएं हैं जो जनसंचार की अवधारणाओं को स्पष्ट करने में मदद करेंगी।

##### 1. संस्थागत उत्पादन

जनसंचार की पहली विशेषता है उसका संस्थागत उत्पादन और प्रतीकात्मक वस्तुओं के रूप में उनका प्रसारण। जनसंचार में तकनीकी माध्यम की बहुत बड़ी भूमिका होती है। इसी के जरिए कोई प्रतीकात्मक रूप निर्मित और संप्रेषित होता है। इन तकनीकी माध्यमों से सूचनाओं के भंडारण की क्षमता होती है। उदाहरण के लिए कागज पर लिखित सूचनाओं को, रेडियो में आवाज को और वीडियो कैसेट में आवाज और दृश्यों को, लिखित सूचनाओं को, भंडारित करने की क्षमता होती है। अब अगर हम स्थिति की तुलना आधुनिक युग से पूर्व के युग से करें तो हम पाएंगे कि आवाज को



और दृश्यों को भंडारित करने की कोई प्रविधि पहले मौजूद नहीं थी, जबकि लिखे हुए शब्दों को भी कागज पर लिखकर सुरक्षित रखना काफी बाद में संभव हो सका। इस लिखे हुए की भी एक से अधिक प्रतियां बनाने में हर बार उतना ही समय लगता था। जनसंचार के अलग-अलग माध्यमों में भंडारण की क्षमता एक-सी नहीं होती। ध्यान दें तो संचार प्रौद्योगिकी ने इस क्षेत्र में उल्लेखनीय विकास किया है। अब जो नई तकनीक इस क्षेत्र में आई है और जिसका प्रयोग कम्प्यूटरों और दूसरे तरह के मल्टी मीडिया उपकरणों में खास तौर पर किया जा रहा है वे बहुत कम जगह पर बहुत अधिक सूचनाओं का भंडारण कर सकती हैं। इस क्षमता की वजह से जनसंचार के प्रसार पर गहरा असर पड़ा है।

## 2. पुनरुत्पादन की क्षमता

जनसंचार की दूसरी विशेषता है, पुनरुत्पादन की क्षमता। मुद्रण की मशीन के आविष्कार ने लिखी हुई सूचनाओं की हजारों प्रतिलिपियां बनाना इतना आसान बना दिया है कि कुछ ही घंटों में पूरे अखबार की लाखों प्रतियां निकाली जा सकती हैं। जान बी थाम्पसन का विचार है कि प्रतीकात्मक रूपों की पुनरुत्पादकता वह मुख्य लक्षण है जिसके कारण जनसंचार के संस्थानों द्वारा तकनीकी माध्यम का व्यावसायिक दोहन संभव हुआ है और जिसकी वजह से ही प्रतीकात्मक रूप को ऐसी जिस में बदला जा सकता है जिनको ये संस्थान बेचने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित कर सकें। पुनरुत्पादन की इसी विशेषता के कारण स्वयं पुनरुत्पादन पर नियंत्रण रखने के तरीकों का विकास हुआ है कापी राइट कानून, बौद्धिक संपदा कानून आदि इसी व्यावसायिकता के परिणाम हैं।

## 3. दिक् और काल में उपलब्ध होना

जनसंचार की तीसरी विशेषता है इसका दिक् और काल में उपलब्ध होना। मसलन एक पुस्तक लिखे जाने के बाद छपने पर ही अपने पाठकों तक पहुंचती है यानी उसके संप्रेषण में समयगत दूरी अवश्यंभावी है जबकि रेडियो पर प्रसारण तत्काल संभव है जहां संप्रेषण और आस्वादन की प्रक्रिया के बीच समयगत दूरी की आवश्यकता नहीं रहती। लेकिन रेडियो के माध्यम को टेपरिकार्ड के द्वारा प्रयुक्त करने पर हम आवाज को स्थान और समय दोनों दृष्टियों से अपने संदर्भ से दूर कर सकते हैं। यानी आज रिकार्ड की गई आवाज को आज के बाद कभी भी और यहां से किसी और जगह पर यथावत् सुना जा सकता है। सिनेमा और टेलीविजन ने इस दूरी को दृश्यों के लिए संभव बना दिया है। उपग्रह प्रणाली कंप्यूटर तकनीक के विकास ने समय और स्थान की रही-सही दूरियों को भी लगभग समाप्त कर दिया है। विश्व के किसी भी कोने में घटित होने वाली घटना को, उसी क्षण देखा और सुना जा सकता है। यही नहीं यह संप्रेषण द्विमागी भी है यानी एक से अधिक स्थानों और समय के आवश्यकतानुसार विस्तार तक दोनों ओर से संप्रेषण संभव है। दिक् और काल की दृष्टि से संप्रेषण में हुए इन परिवर्तनों से प्रतीकात्मक रूपों को किसी भी स्थान पर पहुंचाना और लंबे समय तक सुरक्षित रखना ज्यादा आसान हो गया है।

## 4. सामूहिक संबोधन

जनसंचार की चौथी विशेषता यह है कि इसमें जनता को सामूहिक रूप से संबोधित किया जाता है इसलिए इसमें प्रतीकात्मकता का अत्यधिक महत्व है। मसलन, टेलीफोन पर बातचीत करना एक निजी मामला है, इसलिए इसमें केवल आवाज का अबाध प्रवाह पर्याप्त है जबकि रेडियो से प्रसारित होने वाले समाचार, वार्ता या गीत को हजारों लोगों तक पहुंचाना होता है, इसलिए वहां इस बात का महत्व भी है कि बात को किस रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। यही बात सिनेमा पर भी लागू होता

है। जनसंचार के ये साधन इतने बड़े पैमाने पर उपलब्ध होने लगे हैं कि इस प्रतीकात्मकता को ठीक से समझने की जरूरत है। मसलन, सिनेमा को लें। एक फिल्म जिसको बनाने में लाखों और कई बार तो कई करोड़ रुपए लग जाते हैं, उसकी लागत पर यह लगने वाला पैसा तभी निर्माता को वापस मिल सकता है, जब उसे देखने के लिए ज्यादा से ज्यादा लोग आए। यह तभी संभव है जब फिल्म की प्रस्तुति इस ढंग से की गई हो कि हर वर्ग के व्यक्ति को वह पसंद आए यानी उनमें प्रयुक्त प्रतीकात्मक रूपों में अधिकतम लोगों को प्रभावित करने की क्षमता हो।

जनसंचार की इन विशेषताओं के संदर्भ में यह बात ध्यान देने की है कि ये सभी उत्पादन जिस तरह की प्रौद्योगिकी की मांग करते हैं और इनके निर्माण और प्रसारण के लिए जिस तरह के बड़े पैमाने के संस्थागत ढांचे की जरूरत होती है वह जनसंचार की अवधारणा को गहरे रूप से प्रभावित करता है। जनसंचार के इस पहलू का संबंध उसके सामाजिक संदर्भ से जुड़ा है। अगले उपभाग में हम इस पहलू पर विचार करेंगे।

### 1.4.3 जनसंचार के सामाजिक संदर्भ

जनसंचार के नए माध्यमों की उत्पत्ति सामाजिक परिवर्तन से हुई है। जहां एक ओर जनसंचार का विकास समाज के विकास का परिणाम है, वहीं वह सामाजिक विकास को प्रभावित भी करता है। लेकिन समाज और जनसंचार के बीच संबंधों की इस आधारभूत धारणा को सरलीकृत रूप में नहीं समझा जा सकता। जनसंचार के अलग-अलग रूपों का प्रभाव समाज के अलग-अलग वर्गों पर एक-सा नहीं पड़ता। उदाहरण के लिए, समाचारपत्र को लें। जब समाचारपत्रों का आरंभ नहीं हुआ था तब सूचनाओं के लिए लोगों के पास ऐसा जरिया नहीं था जिससे वे प्रत्येक सूचनाओं को उपलब्ध कर सकें। नतीजतन, सूचनाएं समाज के शक्तिशाली वर्ग तक ही सीमित थीं। इसी प्रकार ज्ञान के दूसरे रूप जो लिखित रूप में उपलब्ध थे वे भी सभी तक नहीं पहुंच सकते थे। लेकिन जब प्रेस का आगमन हुआ और किताबें बड़ी संख्या में छपने लगीं तब वह ज्ञान जो लिखित रूप में मौजूद था समाज के बड़े हिस्से तक पहुंच सका। जाहिर है जानने के अधिकार का प्रेस के आगमन से जो रिश्ता है उसे इसी संदर्भ में समझा जा सकता है। इस तरह मुद्रण प्रौद्योगिकी ने ज्ञान को समाज के किसी खास वर्ग की बपौती नहीं रहने दिया बल्कि उसे आम लोगों तक पहुंचाना है। यह ज्ञान के क्षेत्र में लोकतांत्रिक मूल्यों का प्रवेश है।

लेकिन क्या इसी से स्थिति में आधारभूत परिवर्तन हो गया है? यदि हम अपने देश का ही उदाहरण लें तो हमें वास्तविकता की बिल्कुल दूसरी तस्वीर मिलेगी। आजादी के पचास साल बाद भी देश की लगभग आधी आबादी निरक्षर है। यानी वह न तो अखबार पढ़ सकती है और न ही किताबें। इसका दूसरा मतलब हुआ कि मुद्रित ज्ञान के व्यापक पैमाने पर उपलब्ध होने का उनके लिए कोई अर्थ-मतलब नहीं है। वह तो शिक्षा-जैसे बुनियादी अधिकार से ही वंचित है। अब अगर इस उदाहरण को आगे बढ़ाएँ और इस बात पर विचार करें कि समाचारपत्रों में जो कुछ प्रकाशित होता है क्या वह लोगों के जानने के लोकतांत्रिक अधिकारों के अनुरूप है? हमारा अनुभव बताता है कि ऐसा नहीं है। एक ही समाचार को अलग-अलग अखबार अलग-अलग ढंग से पेश करते हैं। समाचारपत्र सूचनाओं को किस ढंग से पेश करेंगे, उस पर बहुत कुछ निर्भर करता है। सूचनाओं को पेश करने का मामला भी सरल नहीं है। वहां प्रेस के मालिक के वर्गीय हित से लेकर संपादक और संवाददाता तक की वैचारिक

समझ सभी का प्रभाव पड़ता है। इसलिये संचार माध्यमों के संदर्भ में मामला सिर्फ संप्रेषण तक सीमित नहीं है। वह किस तरह के संप्रेषण, किसके लिए संप्रेषण और किसलिए संप्रेषण सभी से जुड़ा है। यही कारण है कि जनसंचार माध्यमों पर वर्चस्व का मसला उठ खड़ा होता है।

जनसंचार के नए माध्यमों का प्रश्न इसलिए भी उठ खड़ा होता है क्योंकि इन माध्यमों का प्रभाव इतने व्यापक और जबर्दस्त ढंग से दिखाई देता है कि उसकी उपेक्षा करना लगभग नामुमकिन है। हम एक और उदाहरण से इस बात को समझने का प्रयास करेंगे। हम सभी जानते हैं टी.वी. एक ऐसा माध्यम है जो अपनी दृश्य-श्रव्य क्षमता के कारण एक साथ करोड़ों लोगों को प्रभावित कर सकता है। अगर इस माध्यम के द्वारा लोगों को लगातार ऐसे विचार परोसे जाएं जो उन्हें एक खास दिशा की ओर धकेलें तो क्या उन पर इसका असर नहीं होगा? हम इस बात को गणेश के दूध पीने की अफवाह से जोड़ कर देख सकते हैं! इस अफवाह को फैलाने में टी.वी. पर प्रसारित खबरों ने योग दिया था और इसका प्रभाव इतना व्यापक हुआ कि देशी-विदेशी चैनलों ने इन्हें दुनिया के हर कोने में पहुंचा दिया। नतीजतन, विदेश में बसे भारतीय भी इस अफवाह के फैलने के कुछ ही घंटों में गणेशजी की मूर्तियों को दूध पिलाने लगे। हम क्रिकेट की लोकप्रियता को भी इसी जनसंचार के प्रभाव के रूप में आक सकते हैं। यह जनसंचार ही है जिसने सचिन तेंदुलकर को किसी भी राष्ट्रीय नेता या फिल्मी अभिनेता जितनी लोकप्रियता प्रदान कर दी है। यहां यह भी उल्लेख करना जरूरी है कि इस लोकप्रियता का असर कई और रूपों में भी दिखाई देता है। सचिन की इस गढ़ी हुई लोकप्रियता का इस्तेमाल बड़ी कंपनियां अपना माल विज्ञापित करने के लिए कर रही हैं। यह सचिन के लिए अतिरिक्त आमदनी का जरिया भी बन गया है। इस लोकप्रियता की वजह से अन्य किसी खेल की बजाय क्रिकेट को वरीयता मिलती है। समाज में खेलों के प्रति एक संतुलित नजरिया बनने की बजाए असंतुलित नजरिया बन जाता है। सारा देश सिर्फ क्रिकेट खेलता, क्रिकेट देखता और क्रिकेट पर बात करता हुआ नजर आता है। इस प्रकार वे प्रतिभाएं जो क्रिकेट की बजाय अन्य खेलों में अपना प्रतिभा का प्रदर्शन कर सकने में सक्षम हो सकती थीं, शीघ्र ही कुंठित होकर खत्म हो जाती हैं।

जनसंचार के सामाजिक पहलुओं को समझने के लिए उपर्युक्त बातों का महत्व तो है लेकिन यह नाकाफी है। संचार के बारे में इससे नकारात्मक दृष्टिकोण पनप सकता है। जैसाकि रेमंड विलियम्स का कहना है, आज के युग में संपत्ति, उत्पादन और व्यापार की तरह समाज के चिंता के केंद्र में संचार ने भी प्रवेश कर लिया है। बहुत से लोग संचार को दूसरे स्तर पर रखते हैं। उनका मानना है कि सबसे पहला स्थान यथार्थ का है और उस यथार्थ का संप्रेषण दूसरे स्थान पर है। लेकिन यह मानने से हमारी समस्याओं का समाधान नहीं होता। सामाजिक परिवर्तन और विकास के जितने भी साधन और संस्थाएं मौजूद हैं उन्हें लोगों तक पहुंचाने और उनमें लोगों को शामिल करने के लिए जरूरी है कि जनसंचार के साधनों की हम सही समझ विकसित करें। यदि हम पहले से ही मानकर चलते हैं कि जनसंचार का उपयोग जनता को जागरूक बनाने और उन्हें सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में शामिल करने के लिए नहीं किया जा सकता तो इसका मतलब यह है कि हमने जनसंचार के साधनों को निहित स्वार्थों के भरोसे छोड़ दिया है।

इसका अर्थ यह नहीं है कि जनसंचार के साधनों का जनता के पक्ष में उपयोग इतना आसान है इसका संबंध राजसत्ता के चरित्र से जुड़ा है। राजसत्ता का जो वर्ग सबल होता है, उसी वर्ग का संचार के साधनों पर नियंत्रण और अधिकार होता है। इसका अर्थ यह भी है कि राजसत्ता के साधनों

का उपयोग अपनी सत्ता को बनाए रखने के लिए करता है। इसका अर्थ यह भी है कि संचार के साधनों का उपयोग सबल वर्ग जनता के पक्ष में करने के लिए राजसत्ता के वर्ग चरित्र को बदलने की कोशिश करनी होती है। इसका मतलब यह भी है कि जनसंचार के साधनों से जुड़े सवालों का संबंध समाज के बुनियादी ढांचे से है।

### बोध प्रश्न-2

1. पूंजीवाद से जनसंचार का क्या संबंध है?
2. जनसंचार के संदर्भ में भंडारण का क्या तात्पर्य है?
3. जनसंचार के संदर्भ में प्रतीकात्मक रूपों का तात्पर्य स्पष्ट कीजिए।

## 1.5 जनसंचार का स्वरूप

हम अब तक जनसंचार की अवधारणा के विभिन्न पहलुओं पर काफी बात कर चुके हैं। अब हम जनसंचार के स्वरूप को समझने का प्रयत्न करेंगे। अब तक हम इस बात को अच्छी तरह समझ चुके हैं कि जनसंचार के द्वारा संदेशों को किसी माध्यम के जरिए लाखों तक पहुंचाया जाता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि जो संदेश लाखों लोगों के लिए प्रेषित किया जाता है, उसे लाखों लोग ग्रहण करेंगे ही। इसका मतलब यह है कि इस संदेश को लाखों लोग ग्रहण कर सकते हैं। यदि संदेश उनको पसंद नहीं है तो संभव है कि उसके देखने या सुनने वाले बहुत कम हों। इसके बावजूद यह संदेश जनसंचार की श्रेणी में ही आएगा क्योंकि इसका संप्रेषण बहुत बड़े जन समुदाय के लिए किया गया है। अगर हम ध्यान दें तो माध्यम के द्वारा प्रस्तुत सभी संदेशों को माध्यम उपलब्ध रखने वाले सभी ग्रहण नहीं करते वरन् व अपनी पसंद के ही संदेश ग्रहण करते हैं।

जनसंचार की प्रक्रिया को संपन्न करने के लिए कई तरह के तकनीकी साधनों, सामाजिक संगठनों और संस्थाओं की जरूरत होती है। इस बात को थोड़ा और स्पष्ट करने के लिए यह देखें कि संचार की प्रक्रिया कैसे घटित होती है। संचार की प्रक्रिया को दो बिंदुओं और उनको जोड़ने वाली रेखा के द्वारा समझें। मान लीजिए, क और ख दो बिंदु हैं। क जहां से संदेश प्रेषित होना है और ख जहां संदेश ग्रहण किया जाना है। स संदेश है जो क ख रेखा के जरिए क से ख तक पहुंचता है।

क \_\_\_\_\_ स ख

•-----•

कख

इस प्रकार हम देखते हैं कि संचार की प्रक्रिया चार घटकों के संयोग से मिलकर घटित होती है। ये हैं -

1. संदेश प्रेषित करने वाले (यहां जिसे क द्वारा दर्शाया गया है)
2. संदेश को ग्रहण करने वाले (यहां जिसे ख द्वारा दर्शाया गया है)
3. संदेश (यहां जिसे स द्वारा दर्शाया गया है।
4. माध्यम यानी जिसके द्वारा संदेश क से ख तक पहुंचता है। (यहां जिसे क ख द्वारा दर्शाया गया है।

संचार के लिए उपर्युक्त चारों घटकों का होना जरूरी है। इनमें से किसी भी घटक के अभाव में संदेश प्रेषित नहीं होगा। हम सरलतम उदाहरण से इस बात को समझें। दो व्यक्तियों की बातचीत

पर विचार करें। हमने इकाई के आरंभ में इसे अंतर-वैयक्तिक संचार की संज्ञा दी थी। यहां पहला व्यक्ति जब अपनी बात कहता है तो वह संदेश प्रेषित करने वाला होता है। यानी दूसरा व्यक्ति इस संदेश को ग्रहण करता है। संदेश को ग्रहण करने वाला यह व्यक्ति ख है। अब हम संदेश पर विचार करें। मान लीजिए पहले व्यक्ति ने दूसरे से कहा 'तुम्हारी तबीयत कैसी है?' यह संदेश है जो क ने ख तक पहुंचाया। इस संदेश को हम से कह सकते हैं। लेकिन इस संदेश को पहुंचाने के लिए क ने किसका सहारा लिया? सबसे पहले अपनी बोलने की क्षमता का। यानी उसने मुंह से ध्वनि निकाली। यह खास तरह की ध्वनि थी जिसको हम भाषा कहते हैं। यानी भाषा वह माध्यम है जिसके जरिए संदेश क से ख तक पहुंचा। यानी भाषा यहां क ख के रूप में है। इस प्रकार ये चारों घटक दो व्यक्तियों की बातचीत में भी मौजूद हैं। ध्यान दें कि क ने जिस भाषा में संदेश पहुंचाया वह भाषा ख की समझ में आनी चाहिए अन्यथा वह इस बात को नहीं समझ सकेगा कि क ने क्या संदेश प्रेषित किया है। इसी प्रकार क में ध्वनि को निकालने की क्षमता होना जरूरी है और ख में उस संदेश को सुनने यानी ग्रहण करने की क्षमता का होना जरूरी है। ये दोनों काम मनुष्य की ज्ञानेंद्रियां करती हैं। इस प्रकार संदेश का संप्रेषण और ग्रहण बिना इनकी मदद के संभव नहीं है। दृश्य-संप्रेषण में देखने की क्षमता की जरूरत होती है।

अब इसी बात को अन्य मामलों पर लागू करें। मसलन, रेडियो का उदाहरण लें। मान लीजिए मेरे पास एक रेडियो सैट है और मैं सुबह उस पर फिल्मी गीत सुनता हूँ। मैं फिल्मी गीत सुनता हुआ फिल्मी गीत नामक संदेश को ग्रहण करने वाला ग्राहीता हो जाता हूँ। यह संदेश मेरे पास रेडियो सैट के जरिए पहुंचा है। यानी यह रेडियो सैट संदेश का वाहक यानी माध्यम है। लेकिन हमने पहले उदाहरण में भाषा को माध्यम कहा था। क्या भाषा यहां माध्यम नहीं है? है, लेकिन यहां भाषा नामक माध्यम को पहुंचाने के लिए भी इस रेडियो सैट की जरूरत है। यह रेडियो सैट गीत को हम तक कैसे पहुंचाता है। यह सैट वायुमंडल में विचरण करने वाली कुछ खास ध्वनि तरंगों को पकड़ता है और उन्हें विसंकेतीकरण करते हुए हम तक गीत के रूप में पहुंचाता है। अब प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि वायुमंडल में ये ध्वनि तरंगें कहां से आती हैं। इसके लिए हमें स स्थान पर पहुंचना होगा जहां से फिल्मी गीत को ध्वनि तरंगों के रूप में वायुमंडल में भेजा गया था। यानी रेडियो स्टेशन वह स्थान है जहां संदेश को कुछ तकनीकी यंत्रों द्वारा रिकार्ड किया जाता है। संदेश की यह रिकार्डिंग जिस तकनीकी विधि से होती है उसे हम कोडिंग करना यानी संकेतीकृत करना कहते हैं। यानी यह रिकार्डिंग संदेश को कोड में बदल देती है। अब वहां से वह इसी कोड के रूप में यानी ध्वनि तरंगों के रूप में और खास फ्रिक्वेंसी पर वायुमंडल में प्रेषित कर दी जाती है। इस रूप में ध्वनि तरंगें सारे वायुमंडल में व्याप्त हो जाती हैं। अब वायुमंडल में व्याप्त इस संकेतीकृत संदेश को वे सभी रेडियो सैट ग्रहण कर सकते हैं जो स खास संदेश को प्रसारित करने वाली फ्रिक्वेंसी पर स्थिर किया गया है। वह वायुमंडल में से सिर्फ उसी ध्वनि तरंग को ही ग्रहण करेगा जो फिल्मी गीत की वाहक है। रेडियो सैट इन तरंगों को ग्रहण करते हुए उन्हें विसंकेतीकरण भी करता जाता है और हमें वह गीत ठीक उसी समय उसी रूप में सुनाई देता है जिस रूप में वह प्रसारित किया गया था। इस प्रकार संदेश भेजने की जो साधारण प्रक्रिया हम दो लोगों की बातचीत में देखते हैं, वही रेडियो नामक जनसंचार में कई तकनीकी संसाधनों के जरिए बड़े पैमाने पर घटित होती है।

इस उदाहरण में हम देखते हैं कि जहां से संदेश प्रेषित किया जाता है और जहां संदेश ग्रहण किया जाता है वहां कई तरह के तकनीकी संसाधनों की जरूरत पड़ती है। रेडियो के मामले में रेडियो सैट संदेश ग्रहण करने वाला संसाधन है। लेकिन उसके बीच में कई और भी संवाहक हो सकते हैं जो रेडियो स्टेशन से संदेश को रेडियो सैट तक पहुंचाने में भूमिका अदा करे। मसलन अब उपग्रह प्रणाली के आने के बाद रेडियो स्टेशन से भेजा गया संदेश पहले उपग्रह तक जाता है, फिर संभव है स्थानीय रिले केंद्र उसे ग्रहण करे और फिर वह आप तक पहुंचे। कहने का तात्पर्य सिर्फ इतना है कि जनसंचार के स्वरूप पर विचार करते हुए हमें इन सभी घटकों को ध्यान में रखना होगा।

---

## 1.6 जनसंचार के स्वरूप के निर्धारक तत्व

---

जनसंचार के उपर्युक्त घटक ही संचार प्रक्रिया को संभव बनाते हैं। लेकिन इसी वजह से इन घटकों पर अन्य दृष्टियों से भी विचार करने की जरूरत है। पहला सवाल यह है कि क्या संदेश के संप्रेषण की पूरी प्रक्रिया निर्बाध रूप से घटित होती है? दूसरा सवाल यह है कि क्या संप्रेषण के सभी घटकों पर सभी का समान अधिकार होता है? इकाई के इस भाग में हम इन दोनों सवालों का उत्तर खोजने का प्रयास करेंगे।

### 1.6.1 संप्रेषण को प्रभावित करने वाले तत्व

आप अखबार तो जरूर पढ़ते होंगे। क्या आपने इस बात पर विचार किया है कि अखबार में दिए गए समाचार किस विधि से आप तक पहुंचते हैं? एक उदाहरण से इस बात को समझें। मान लीजिए किसी शहर में दंगा हुआ है। अगले दिन हम इस दंगे का समाचार अखबार में पढ़ते हैं। क्या यह संभव है कि समाचार ने घटना का बिल्कुल वस्तुपरक और यथातथ्य विवरण दिया होगा? ऐसा संभव भी है और नहीं भी। इस बात को समाचार के हमारे तक पहुंचने की प्रक्रिया द्वारा समझने की कोशिश करें। दंगाग्रस्त क्षेत्र का वह समाचार किसी संवाददाता द्वारा समाचारपत्र कार्यालय तक पहुंचाया जाता है। यह संवाददाता समाचारपत्र का भी हो सकता है और किसी समाचार एजेंसी का भी। यह जो संवाददाता है, यह घटना का विवरण प्रस्तुत करेगा। इसका विवरण इसके द्वारा हासिल किए गए तथ्यों और उन तथ्यों को देखने की उसकी समझ पर निर्भर करेगा। ये दोनों बातें समाचार के स्वरूप को निर्धारित करेंगी। पत्रकार बनते वक्त उसे बताया गया होगा कि तथ्यों को किस तरह हासिल करना और किस तरह प्रस्तुत करना चाहिए लेकिन इसके बावजूद उसके लिए कुछ हद तक आत्मगत होना कोई आश्चर्य की बात नहीं होगी। तथ्य एकत्र करने में और उसको भेजने में उसकी पत्रकारिता की क्षमता और उसकी जीवन दृष्टि भी अपना प्रभाव डालेगी। जाहिर है कि वह लंबे-लंबे विवरण और प्रत्येक तथ्य नहीं भेज सकता। उसे उन तथ्यों का चयन करना होगा जिसे वह सबसे ज्यादा जरूरी समझेगा। इस प्रकार वह समाचार अपने आरंभिक बिंदु पर ही घटित घटना से भिन्न हो जाएगा।

जब रिपोर्टर द्वारा भेजा गया समाचार समाचारपत्र के कार्यालय में पहुंचेगा तब उसको समाचारपत्र में देने से पूर्व संपादक मंडल के सहकर्मियों पढ़ेंगे और उसमें समाचार पत्र की दृष्टि से और संपादक के सहकर्मियों की समझ के अनुसार संशोधन होगा। यहां संशोधन का तात्पर्य उनके तथ्यों की तोड़-मरोड़ या कल्पित तथ्यों की सृष्टि से नहीं है बल्कि उन्हीं तथ्यों की ऐसी प्रस्तुति से है जिससे समाचार को पढ़ते हुए बिल्कुल भिन्न तरह का प्रभाव दिखाई दे। यहां फिर मूल घटना का स्वरूप बदल दिया गया है और अंत में जब समाचारपत्र के प्रेस में वह समाचारपत्र छपता है वहां उसमें हेरफेर संभव

है। जगह की कमी या और तकनीकी वजहों से। मसलन पहले पृष्ठ का समाचार तीसरे या चौथे पृष्ठ पर छापकर उसके प्रभाव को सीमित किया जा सकता है। साधारण-सी खबर का भड़काऊ शीर्षक देकर उसे महत्वपूर्ण बनाने की कोशिश की जा सकती है। साधारण लड़ाई-झगड़े को भीषण सांप्रदायिक दंगे और सांप्रदायिक दंगे को असामाजिक तत्वों की आपसी लड़ाई बनाकर पेश किया जा सकता है। यानी संदेश हम तक किस रूप में पहुंचेगा यह इस बात पर निर्भर करता है कि उसे भेजने वाले कौन हैं। यहां तात्पर्य सिर्फ रिपोर्टर और संपादक से ही नहीं अखबार के मालिक से भी है जो उस अखबार की नीतियों को तय करने में अहम भूमिका निभाता है। जो बात समाचार पत्रों पर लागू होती है वह अन्य संचार माध्यमों पर भी उसी तरह लागू होती है।

इस प्रकार कोई भी संदेश अपने आरंभ से ग्रहीता तक पहुंचने तक ही नहीं संदेश के निर्मित होने से ग्रहीता तक पहुंचने तक कई तरह के बाहरी प्रभावों से होकर गुजरता है और इस प्रक्रिया में वह अपने स्वरूप को रूपांतरित करता है। इनमें वे तकनीकी माध्यम तो अपना असर डालते ही हैं, उनसे जुड़े लोग भी अपना असर डालते हैं।

### 1.6.2 संचार साधनों पर अधिकार का सवाल

जैसाकि हम शुरू में कह चुके हैं, आधुनिक जनसंचार माध्यमों के विकास का इतिहास पूंजीवादी विकास से अभिन्न रूप से जुड़ा है। पूंजीवादी युग से पहले संचार के जो साधन उपलब्ध थे उनके द्वारा पूंजीवादी विकास से जुड़ी जरूरतों को पूरा नहीं किया जा सकता था। यह जरूरी था कि संचार के नए साधनों का विकास हो जिससे पूंजीपति वर्ग के लिए बाजार पर नियंत्रण बनाए रखना आसान हो सके। 1837 में तार के आविष्कार ने इस दिशा में महत्वपूर्ण योग दिया। इसके बाद तो जैसे संचार के क्षेत्र में क्रांति ही आ गई थी। हर नया आविष्कार संचार और प्रचार के नए-नए आयामों का प्रवर्तन कर रहा था। इन नए आविष्कारों ने संदेशों की उपलब्धता तो बढ़ा दी लेकिन इनके लिए जो तकनीकी यंत्र और मानव साधनों की जरूरत होती है, उस पर नियंत्रण बड़ी पूंजी के बिना संभव नहीं था। इसलिए जनसंचार के ये सभी साधन या तो सीधे-सीधे पूंजीपतियों के हाथों में हैं या सरकारी नियंत्रण में हैं। दोनों ही मामलों में उनसे प्रसारित होने वाले संदेश भी जन के लिए होकर भी जन के हित में हों यह जरूरी नहीं है। जनसंचार की अवधारणा और स्वरूप से इस बात का गहरा नाता है।

संचार के साधनों का महत्व लगातार बढ़ता जा रहा है। एक उद्योग के रूप में भी और जनता की चेतना को नियंत्रित और प्रभावित करने की दृष्टि से भी। सूचना और संचार के इस युग में मनुष्य सिर्फ उपभोक्ता बनकर रह गया है। वे लोग जिन तक इन संचार के नए साधन नहीं पहुंचे हैं वे शक्तिहीन हैं और जिन लोगों के पास ये साधन उपलब्ध हैं, वे अपने को शक्तिमान समझते हैं। लेकिन क्या यह सत्य है? जनसंचार की अवधारणा और स्वरूप के संदर्भ में इस प्रश्न का उत्तर आपको आगे की इकाइयों में प्राप्त होगा।

#### बोध प्रश्न-3

1. जब हम सिनेमा हाल में जाकर फिल्म देखते हैं तब वहां लगा प्रोजेक्टर और स्क्रीन किस श्रेणी में आएंगे-संदेश भेजने वाले की श्रेणी में ग्रहण करने वाले की श्रेणी में माध्यम की श्रेणी में या संदेश की श्रेणी में?
2. क्या माध्यम के बिना संदेश संप्रेषित किया जा सकता है ?

### 3. 'संचार के साधनों पर अधिकार' का क्या तात्पर्य है?

#### 1.7 सारांश

संचार का तात्पर्य है संप्रेषित करना। यानी जब कोई संदेश एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक, एक स्थान से दूसरे स्थान तक और एक समय से दूसरे समय में संप्रेषित किया जाता है तो वह चार कहा जाएगा। जो संचार बहुत बड़े पैमाने पर बहुत बड़ी संख्या तक पहुंचाने के लिए उत्पादित किया जाता है वह जनसंचार की श्रेणी आएगा। जनसंचार का संबंध पूंजीवादी और लोकतांत्रिक परिवर्तनों से है। पूंजीवाद के विस्तार के साथ जब बाजार का फैलाव हुआ और उसकी जरूरतों को पूरा करने के लिए यातायात और संचार के नए साधन आविष्कृत हुए तो इसी से जनसंचार के नए साधन सामने आए।

संचार कई रूपों में हमारे सामने आता है। वैयक्तिक संचार अंतर-वैयक्तिक संचार, लघु समूह संचार और जनसंचार। सभी तरह के संचार रूपों की बुनियाद वैयक्तिक संचार है।

जनसंचार की अवधारणा को समझने के लिए इसकी विशेषताओं को समझना जरूरी है। जनसंचार की पहली विशेषता यह होती है कि वह एक संस्थागत उत्पादन है जो प्रतीकात्मक वस्तुओं का उत्पादन करती है और उनका भंडारण कर सकती है। दूसरी विशेषता यह है कि यह उत्पादित वस्तुओं का लगातार और बड़ी संख्या में पुनरुत्पादन कर सकती है। तीसरी विशेषता यह है कि बहुत व्यापक क्षेत्र में और लंबे कालखंड में उपलब्ध हो सकती है। चौथी विशेषता यह है कि जनता को सामूहिक रूप में उपलब्ध होती है लेकिन प्रत्येक व्यक्ति इसे निजी तौर पर ग्रहण कर सकता है।

जनसंचार की अवधारणा का संबंध जन उत्पादन और जन उपभोग से है। ये दोनों संकल्पनाएं पूंजीवाद के युग में सामने आई हैं। जनसंचार के इस पहलू का संबंध संचार प्रौद्योगिकी से है। जनसंचार के द्वारा उत्पादित संदेश को लोग निष्क्रिय रूप में ग्रहण नहीं करते। जनसंचार का प्रभाव लोगों पर पड़ता है लेकिन यह भी सही है कि लोग भी जनसंचार को प्रभावित करते हैं।

जनसंचार के स्वरूप का संबंध उसकी प्रक्रिया से है। इस प्रक्रिया में चार घटक अनिवार्य होते हैं। पहला-संदेश दूसरा-संदेश को प्रेषित करने वाला तीसरा- संदेश को ग्रहीता तक ले जाने वाला माध्यम और चौथा-संदेश को ग्रहण करने वाला ग्रहीता। संदेश के संप्रेषण से उसके ग्रहण करने तक की प्रक्रिया के लिए कई तरह के तकनीकी साधनों, संस्थानों और लोगों की जरूरत होती है। ये सभी संप्रेषण की पूरी प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं। इनमें सबसे महत्वपूर्ण हैं- इन साधनों और संस्थानों का नियंत्रण। यह नियंत्रण किनके हाथ में है? पूंजीपति वर्ग के हाथ में सरकार के हाथ में या जनता के हाथ में। जनसंचार की सामाजिक भूमिका बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करती है इनका नियंत्रण किनके हाथ में है। जनसंचार की अवधारणा और स्वरूप का गहरा संबंध इस बात से है

#### 1.8 शब्दावली

**पूंजीवाद :** पूंजीवाद ऐसी व्यवस्था का नाम है जिसमें राजसत्ता का आधार पूंजी हो। पूंजीपति वर्ग का ही राजसत्ता पर वास्तविक अधिकार होता है।

**लोकतंत्र :** ऐसी व्यवस्था जहां शासन व्यवस्था चलाने वाले प्रतिनिधियों का चुनाव लोग वोट द्वारा करते हैं।



लोकतंत्र में सभी बालिग लोगों को मत देने का अधिकार होता है और जिस पार्टी (या पार्टियों)का बहुमत शासन चलाने के लिए बनाई गई प्रतिनिधि सभा जिन्हें संसद या सभा कहा जाता है, में होता है वह सरकार चलाती है। ये प्रतिनिधि एक तयशुदा अवधि के लिए चुने जाते हैं।

**संदेश :** संदेश संचार के क्षेत्र में एक पारिभाषिक शब्द है। संदेश यानी वह बात जो एक से दूसरे तक प्रेषित की जाती है। यह बात किसी भी रूप में हो सकती है। ध्वनि के रूप में, दृश्य के रूप में, संकेतों के रूपों में या अन्य किसी रूप में।

**प्रतीकात्मक रूप :** प्रतीकात्मक रूप संदेश का वह रूप है जो किसी खास माध्यम की जरूरत के अनुसार प्रतीकात्मकता का सहारा लेती है। मसलन भाषा भी एक तरह से प्रतीकात्मक है जहां प्रत्येक शब्द किसी न किसी वस्तु, भाव या विचार को संकेतित करते हैं। इसी प्रकार संगीत में अलग-अलग तरह की ध्वनियां, चित्रों में रंग, आकृतियां और रेखाएं आदि प्रतीकात्मक रूप ही हैं।

---

## 1.9 निबंधात्मक प्रश्न

---

1. मोहनलाल पेशे से अध्यापक हैं और हिंदी में कविताएं लिखते हैं। वह अपनी कविताएं अपने मित्रों को सुनते हैं। स्थानीय अखबारों में भी उनकी कविताएं यदा-कदा प्रकाशित हो जाती हैं। वह चाहते हैं कि उनकी कविताओं का एक संग्रह प्रकाशित हो और वह ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचे। इसके लिए उन्हें क्या करना होगा जिससे उनके उद्देश्य की पूर्ति हो? जनसंचार के संबंध में इस इकाई में कही गई बातों के संदर्भ में आप अपना मत इस मुद्दे पर प्रस्तुत कीजिए।
2. संचार की आवश्यकता मनुष्य को कब और क्यों पड़ती है? आज के समय की तुलना उस समय से कीजिए जब संचार के आधुनिक साधन उपलब्ध नहीं थे। आपकी दृष्टि में कौन-सा समय जनहित में ज्यादा बेहतर माना जा सकता है और क्यों?
3. जनसंचार के आधुनिक माध्यमों का उपयोग देश के चहुंमुखी विकास के लिए किया जाता है या नहीं? इसके लिए क्या-क्या कदम उठाने जरूरी हैं? भारत की खास परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए अपना जवाब लिखिए।
4. जनसंचार के आधुनिक साधनों की विशेषता यह है कि उनके द्वारा संदेशों का लंबे समय के लिए भंडारण और पुनरुत्पादन किया जा सकता है। इसके व्यावसयिक पहलू को ध्यान में रखते हुए बताइए कि इसने संचार पर किस रूप में प्रभाव डाला है? इसके राजनीतिक परिप्रेक्ष्य को भी स्पष्ट कीजिए।
5. संदेश को अधिकतम स्तर पर निर्बाध रूप से लोगों तक पहुंचाना क्या संभव है? यदि हां तो इसके लिए क्या किया जाना जरूरी है? और यदि नहीं तो ऐसी स्थिति में किस तरह के विकल्प का सुझाव देंगे?

---

## इकाई 2 जनसंचार : लक्ष्य, कार्य और प्रतिक्रियाएं

---

### इकाई की रूपरेखा

- 2.0 उद्देश्य
- 2.1 प्रस्तावना
- 2.2 जनसंचार के लक्ष्य
  - 2.2.1 राजनीतिक लक्ष्य
  - 2.2.2 आर्थिक लक्ष्य
  - 2.2.3 सामाजिक लक्ष्य
  - 2.2.4 सांस्कृतिक लक्ष्य
- 2.3 जनसंचार के कार्य
  - 2.3.1 सूचना
  - 2.3.2 शिक्षा
  - 2.3.3 मनोरंजन
- 2.4 जनसंचार की प्रक्रिया
  - 2.4.1 प्रसारण करना
  - 2.4.2 सीमित करना
  - 2.4.3 फैलाना
  - 2.4.4 व्याख्या करना
- 2.5 सारांश
- 2.6 शब्दावली
- 2.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें
- 2.8 निबंधात्मक प्रश्न

---

### 2.0 उद्देश्य

---

‘जनसंचार के सिद्धांत’ नामक पाठ्यक्रम से संबंधित यह दूसरी इकाई है। इस इकाई में हम जनसंचार के लक्ष्य, कार्य और प्रक्रियाओं का अध्ययन करेंगे। लक्ष्य का मतलब है कि किन उद्देश्यों को पूरा करने के लिए जनसंचार के साधनों का विकास हुआ है। वे लक्ष्य कौनकौन से हैं और उनका हमारे सामाजिक विकास से क्या संबंध है? जनसंचार के लक्ष्यों के निर्धारण से ही उनके कार्य भी निर्धारित होते हैं। क्या इन कार्यों के कुछ विशेष क्षेत्रों की पहचान की जा सकती है? अपने लक्ष्यों और कार्यों को संभव बनाने के लिए जनसंचार किन क्रियाओं का सहारा लेता है? इस प्रकार ये तीनों बातें एक दूसरे से संबद्ध भी हैं। इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप-

- जनसंचार के लक्ष्यों की पहचान कर सकेंगे
- जनसंचार के कार्यों को बता सकेंगे और उन कार्यों के विभिन्न पक्षों की व्याख्या कर सकेंगे और
- जनसंचार की विभिन्न प्रक्रियाओं का परिचय दे सकेंगे।

---

## 2.1 प्रस्तावना

---

जनसंचार के सिद्धांत के इस पाठ्यक्रम की यह दूसरी इकाई है। इससे पहले की इकाई में आपने जनसंचार की अवधारणा और स्वरूप का अध्ययन किया था। संचार क्या है संचार के विभिन्न रूप कौन-कौन से हैं और संचार और जनसंचार में क्या अंतर है, इन पहलुओं को आप समझ चुके हैं। जनसंचार को जनसंचार क्यों कहा जाता है और यहां जन से क्या तात्पर्य है इस बात पर भी हमने पहली इकाई में चर्चा की थी। जनसंचार की अवधारणा को समझने के सिलसिले में हमने जनसंचार की कुछ सामान्य विशेषताओं का अध्ययन किया था। जनसंचार के साधनों का हमारे समय से क्या संबंध है और इसकी सामाजिक भूमिका क्या है, इसे भी आप पहली इकाई में जान चुके हैं। अवधारणा के साथ हमने जनसंचार के स्वरूप की व्याख्या की थी। जनसंचार की अवधारणा और स्वरूप को समझने के बाद अब हमारे लिए यह जानना जरूरी है कि जनसंचार के लक्ष्य और कार्य क्या हैं।

जनसंचार के लक्ष्यों पर बात करने के लिए हमें यह देखना होगा कि जनसंचार के साधनों की जरूरत समाज में क्यों होती है? हमारे जीवन में जनसंचार की भूमिका क्या है? क्या इनके बिना हमारा आधुनिक जीवन संभव है? क्या जब मानव सभ्यता का विकास आरंभ हुआ था तब संचार के साधनों की जरूरत नहीं थी? ये और ऐसे कई प्रश्नों पर विचार करते हुए हम जनसंचार के लक्ष्यों की पहचान करेंगे।

जनसंचार के लक्ष्यों को समझने के बाद हम उसके कार्यों पर विचार करेंगे। इस भाग के अंतर्गत हम यह देखेंगे कि जनसंचार के साधन समाज के किन कार्य क्षेत्रों में प्रयुक्त होते हैं। मसलन, लोगों की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने, उनके जीवन स्तर को ऊपर उठाने, उनको कार्य कुशल बनाने, उनको सुसभ्य और सुसंस्कृत बनाने या उनके जीवन को सुखी और आनंददायक बनाने में जनसंचार की क्या भूमिका है? इन पर विचार करते हुए हम जनसंचार के कार्यों का विश्लेषण कर सकेंगे।

इस इकाई के अंत में हम जनसंचार की प्रक्रियाओं को समझने का प्रयास करेंगे। जनसंचार के माध्यमों से जो संदेश संप्रेषित किया जाता है उसका वह क्या करता है? क्या वह उनको यथावत भेज देता है या उनको काट-छांटकर, या उनको बढ़ा-चढ़ाकर या उनको पुनर्व्याख्यायित करके वह लोगों तक भेजता है। जनसंचार की प्रक्रिया को समझने से हम उसकी शक्ति और सीमाओं को समझ सकते हैं। आइए, जनसंचार के इन विभिन्न पहलुओं पर विचार करें।

---

## 2.2 जनसंचार के लक्ष्य

---

जनसंचार की अवधारणा पर विचार करते हुए हमने कहा था कि जनसंचार के नए साधनों के विकास का संबंध पूंजीवाद के विकास के साथ है। इस बात को थोड़ा भिन्न रूप में हम यहां समझने का प्रयास करेंगे। जब पूंजीवाद का उदय हुआ बड़े उद्योग स्थापित हुए तो यह सवाल पैदा हुआ कि बड़ी मात्रा में निर्मित माल के लिए बाजार कैसे पैदा किया जाए। दूसरा सवाल यह पैदा हुआ कि इसे ज्यादा लोगों तक पहुंचाया कैसे जाए और तीसरा सवाल यह पैदा हुआ कि इस माल की लोगों को जरूरत है, इसका एहसास कैसे कराया जाए। अगर हम ध्यान दें तो यातायात और संचार के नए साधनों का आविष्कार इन्हीं जरूरतों के मद्देनजर हुआ। बाजार के विस्तार के साथसाथ इनकी जरूरतें भी बढ़ती गईं और इसी क्रम में इनसे जुड़ी प्रौद्योगिकी में भी परिवर्तन होता गया। लेकिन ये सब काम आसानी

से नहीं हो गए थे। पूंजीवाद विकास ने केवल बाजार का विकास नहीं किया उन्होंने राजसत्ता, स्वरूप भी बदला। दुनिया सामंतवाद से निकलकर पूंजीवाद लोकतंत्र की ओर अग्रसर हुई। बहरहाल हमारी इस इकाई का संबंध इन सामाजिक परिवर्तनों पर विचार करना नहीं है। हम तो यहां उन उद्देश्यों पर विचार करेंगे जो जनसंचार के संदर्भ में महत्वपूर्ण हैं। जनसंचार ने हमारे जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित किया गया है- हमारे राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन को। जनसंचार के माध्यमों में प्रभावित करने की क्षमता का इतना विस्तार इसी वजह से हुआ है क्योंकि उसका स्वरूप और गठन इसी प्रक्रिया में हुआ है। आइए हम इन पर अलग-अलग विचार करें।

### 2.2.1 राजनीतिक लक्ष्य

जनसंचार के साधनों के विकास पर विचार करें तो देखते हैं कि वे देश जो राजनीतिक और आर्थिक दृष्टि से शक्तिशाली हैं, उन्हीं का संचार के आधुनिकतम साधनों पर अधिकार भी है। युनेस्को द्वारा प्रसारित मेकब्राइड की रिपोर्ट को पढ़ने से यह जाहिर हो जाता कि कैसे सारी दुनिया समाचारों के लिए अमरीका और यूरोप के विकसित देशों पर निर्भर है। इसी प्रकार की आधुनिक प्रौद्योगिकी पर भी इन्हीं देशों का वर्चस्व है- चाहे वह कंप्यूटर हो, उपग्रह हो या रेडियो, टेलीविजन, टेलिफोन तथा दूसरे साधन। इन सभी मामलों में विकासशील देश पूरी तरह से नहीं तो काफी हद तक विकसित देशों पर निर्भर हैं। अगर हमें आज दुनिया के किसी कोने में घटी घटना का विवरण चाहिए तो हमें उन संवाद एजेंसियों पर निर्भर रहना पड़ता है जो ये विकसित देश चलाते हैं। मसलन, इराक पर अमरीका और उसके मित्र देशों के हमले के सभी समाचार हमें अमरीका और इंग्लैंड की संवाद एजेंसियों के माध्यम से ही प्राप्त हुए। हमारे पास अपना कोई शक्तिशाली जरिया नहीं था जो सच्चाई को निष्पक्ष रूप में रख सके।

जो बात विश्व स्तर पर सही है हमारे अपने देश के अंदर भी सही है। हमारे अधिकांश राष्ट्रीय अखबार बड़े औद्योगिक घरानों द्वारा निकाले जाते हैं। इसी तरह रेडियो और दूरदर्शन सीधे सरकारी नियंत्रण में हैं। ऐसा क्यों है कि जनसंचार के साधनों को शासक वर्ग अपने नियंत्रण में रखना चाहता है? जब भारत में पहली बार अखबारों का प्रकाशन आरंभ हुआ उसी समय से अंग्रेजों ने उस पर नियंत्रण रखना शुरू कर दिया था। राजा राममोहन राय को अंग्रेजों की इस नीति के विरुद्ध कड़ा संघर्ष करना पड़ा था। आजादी की लड़ाई के दौरान समाचारपत्रों पर सरकार द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों के विरुद्ध संघर्ष आजादी की लड़ाई का हिस्सा बने रहे। ये सब उदाहरण इस बात को प्रमाणित करने के लिए काफी हैं कि संचार के माध्यमों का राजनीति से गहरा ताल्लुक है।

जनसंचार के माध्यम राजनीतिक लक्ष्यों को पूरा करने में बहुत मददगार साबित हो सकते हैं तो बहुत बड़ी बाधा भी। किसी समय की राजसत्ता का चरित्र किस तरह का है यह पता इस बात से लगाते हैं कि उस समय उत्पादन के साधनों पर किसका अधिकार था। जनसंचार के माध्यमों द्वारा संदेशों का उत्पादन किया जाता है। ये संदेश किसी न किसी विचार को लोगों तक पहुंचाते हैं। इस प्रकार जनसंचार के साधनों द्वारा विचारों का प्रसार किया जाता है। ये विचार मनुष्य जीवन से संबंधित होते हैं और उसको किसी-न-किसी रूप में प्रभावित अवश्य करते हैं। यह सिर्फ भौतिक उत्पादन नहीं है। यह विचार है जो एक बार देखने या सुनने के बाद भी लंबे समय तक हमारे मन-मस्तिष्क को झकझोरते रहते हैं। एक शहर में हुआ दंगा समाचारों के जरिए कई दूसरे शहरों में दंगों की वजह बन

सकता है। टी.वी. पर दिखाए जाने वाले खास तरह के धारावाहिक जीवन के प्रति ऐसा नजरिया दे सकते हैं जिसका राजनीतिक प्रतिफलन फासीवादी दर्शन पर आधारित राजनीतिक दल के समर्थन के रूप में दिखाई दे।

सत्तर के दशक में फिल्मों में राजनीतिक नेता और पुलिस को भ्रष्ट दिखाने से बचा जाता था, ताकि इन संस्थाओं के प्रति लोगों का विश्वास बना रहे। लेकिन सत्तर के बाद के दशक में जब राजनीति और पुलिस में भ्रष्टाचार में जबर्दस्त बढ़ोतरी हो गई, तब किसी भी नेता और पुलिस अधिकारी को भ्रष्ट दिखाने पर हर तरह की रोक हटा दी गई। यह दावा किया गया कि सेंसर बोर्ड ज्यादा उदार हो गया है। वह फिल्म निर्माताओं पर कम-से-कम प्रतिबंध लगाकर ज्यादा-से-ज्यादा स्वतंत्रता देना चाहता है। लेकिन वैचारिक रूप में इसका नतीजा वही निकला। पहले यह विचार फैलाया गया था कि राजनीति और पुलिस के लोग देशभक्त और ईमानदार होते हैं, इसलिए इस व्यवस्था का समर्थन जारी रखो। बाद में यह विचार फैलाया गया कि सभी राजनीतिक दल और सभी पुलिस वाले भ्रष्ट होते हैं, अर्थात् व्यवस्था बदलने से क्या होगा। इस प्रकार जनसंचार शासक वर्ग में राजनीतिक हितों को पूरा करने में मददगार बन कर उपस्थित होता है। अपनी व्यापकता और प्रभावित करने की क्षमता के चलते जनसंचार राजनीतिक उद्देश्यों को कहीं ज्यादा तीव्र गति से और कहीं ज्यादा गहरे रूप में पूरा करने में मददगार हो सकता है। लेकिन इसका अर्थ यह भी नहीं है कि लोग जनसंचार के द्वारा परोसे गए राजनीतिक नजरिए को यथावत स्वीकार कर लेते हैं। लेकिन जनसंचार के राजनीतिक लक्ष्य का यह प्रयत्न भी होता है कि लोगों को सोचने का मौका दिए बिना उन्हें अपने विचारों के जाल में फांस लिया जाए। ऐसा करने में वे किस हद तक कामयाब या नाकामयाब रहते हैं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि जनसंचार में वैकल्पिक राजनीतिक दृष्टिकोण को पेश करने के कितने अवसर मौजूद हैं।

उपर्युक्त विश्लेषण से साफ है कि जनसंचार के माध्यमों ने निम्नलिखित राजनीतिक लक्ष्यों को संभव बनाया है-

1. जनसंचार ने सूचना के अधिकार का विस्तार किया है, जिससे लोगों में राजनीतिक जागरूकता की वृद्धि हुई।
2. जनसंचार ने लोकतांत्रिक मूल्यों के विस्तार में मदद की है।
3. जनसंचार के साधनों पर अधिकार द्वारा शासक वर्ग अपने राजनीतिक हितों का प्रचार कर सकता है।
4. जनसंचार लोगों में राजनीतिक विभ्रम बढ़ाने का हथियार बन सकता है।
5. जनसंचार जनता के राजनीतिक हस्तक्षेप का माध्यम बन सकता है।

### 2.2.2 आर्थिक लक्ष्य

जनसंचार माध्यमों के आर्थिक लक्ष्य राजनीतिक लक्ष्यों से कहीं ज्यादा साफ नजर आते हैं। उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में जब पहली बार बतार के तार का आविष्कार हुआ था तो उसका उपयोग मुख्यतः आर्थिक लक्ष्यों को पूरा करने के लिए किया गया था। इसके बाद के सारे आविष्कार भी आर्थिक लक्ष्यों को पूरा करने के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए ही। अखबारों ने राजनीतिक प्रचार के कार्यों में ही मदद नहीं की है, व्यापारिक गतिविधियों के लिए भी उसने सशक्त मंच प्रदान किया है। इसी प्रकार टेलीफोन ने सारी दुनिया की व्यापारिक गतिविधियों को एक दूसरे से जोड़ दिया है। संचार के

इन नवीनतम साधनों का ही नतीजा है कि दुनिया के सारे शेयर बाजार आपस में इस कदर जुड़ गए हैं कि एक में होने वाली हलचल का असर दूसरों पर पड़े बिना नहीं रहता और वह भी लगभग साथ-साथ।

जनसंचार के साधनों का विस्तार इस हद तक हुआ है कि स्वयं उसने बहुत बड़े उद्योग का रूप ले लिया है। यह क्षेत्र अब बड़ी पूंजी के नियंत्रण में आ गया है। माइक्रोसॉफ्ट नामक कंप्यूटर कंपनी का अमरीकी मालिक बिल गेट जिसका सॉफ्टवेयर के क्षेत्र में एकाधिकार है। की गणना दुनिया के सबसे अमीर लोगों में की जाती है। भारत में भी गुलशन कुमार उदाहरण दिया जा सकता है जिसने केवल पंद्रह साल की छोटी अवधि में आडियो कैसेट की बिक्री के साधारण व्यवसाय से आरंभ कर उसने लगभग चार सौ करोड़ का पूंजी साम्राज्य खड़ा कर लिया था।

जनसंचार के साधनों के विस्तार से सेवा के क्षेत्र में काफी बदलाव आया है। जहां कई क्षेत्रों में नए सेवा अवसर पैदा हुए हैं तो कई क्षेत्रों में सेवा के अवसर कम भी हुए हैं। इसने कई परंपरागत क्षेत्रों के लिए संकट भी पैदा किया है। मसलन टेलिफोन, फैक्स, ई-मेल आदि के चलते अब पोस्ट की पुरानी व्यवस्था चौपट होती जा रही है। इसका नतीजा यह हो रहा है कि गरीब और कमजोर वर्गों के संचार के साधन बढ़ने की बजाए कम हुए हैं। इस प्रकार जनसंचार निम्नलिखित आर्थिक लक्ष्यों को पूरा करने में सहायक हुआ है

1. जनसंचार के नए साधनों ने आर्थिक गतिविधियों का विस्तार किया है।
2. इसने बाजार की शक्ति को स्थापित करने में मदद की है।
3. इसने लोगों को उत्पादों के प्रति जागरूक बनाया है।
4. इसने उपभोक्तावादी प्रवृत्ति को बढ़ावा भी दिया है।
5. इसने सेवा के नए अवसर खोले हैं और कई परंपरागत सेवा क्षेत्रों पर आघात भी पहुंचाया है।
6. इसने पूंजी के केन्द्रीयकरण को बढ़ावा दिया है।

### 2.2.3 सामाजिक लक्ष्य

जनसंचार के नए माध्यमों ने सामाजिक क्षेत्र पर भी अपना गहरा असर छोड़ा है। आज हमारा सामाजिक जीवन काफी हद तक संचार माध्यमों के प्रभाव से संचालित हो रहा है। जब डाक व्यवस्था का अभाव था तब किसी प्रियजन के दूर यात्रा पर जाने पर संदेश का माध्यम आने-जाने वाले दूसरे यात्री हुआ करते थे। नतीजतन, महीनों तक किसी तरह की सूचना नहीं मिलती थी। लेकिन जब डाक व्यवस्था की शुरुआत हुई तो चिट्ठीपत्री के जरिये समाचार मिलने लगे। बाद में तार ने समय का अंतराल और भी कम कर दिया। आज टेलिफोन के माध्यम से व्यक्ति हजारों मील दूर बैठे अपने रिश्तेदार से वैसे ही बात कर सकता है जैसे कि वह सामने बैठा हो। क्या इसने सामाजिक संबंधों को नहीं बदला? एक और उदाहरण देखें। टेलिविजन पर दिखाए जाने वाले कार्यक्रमों के प्रति लोगों का झुकाव इस हद तक बढ़ रहा है कि अपने मन-पसंद के कार्यक्रमों के वक्त हम न तो कहीं जाना पसंद करते हैं और न ही किसी का आना। यहां तक कि इस समय टेलिफोन पर बातचीत करना भी बुरा लगता है। इसका असर इस हद तक हुआ कि लोग सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन ऐसे समय करने से बचते हैं जब टी.वी. पर कोई लोकप्रिय कार्यक्रम आ रहा हो।

जनसंचार ने दुनिया को छोटा बना दिया है। अब हम पत्र-पत्रिकाओं, टी.वी. और रेडियो कार्यक्रमों के जरिए दूसरे समाजों के बारे में काफी कुछ जानने लगे हैं। इसका असर हमारे सामाजिक

व्यवहार में दिखाई देने लगा है। इन जनसंचार माध्यमों के द्वारा इतनी सूचनाएं प्राप्त होती हैं कि जिनको ये माध्यम उपलब्ध नहीं हैं, वे अपने को पिछड़ा हुआ और हीन समझने लगते हैं। जनसंचार के माध्यम लोगों को शिक्षित करने और उन्हें ज्ञान-विज्ञान के नए-नए क्षेत्रों से परिचित कराने का साधन हैं तो वह सूचना संपन्न लोगों का अभिजात वर्ग भी बना रहा है।

*जनसंचार ने जहां एक ओर जाति, धर्म, लिंग, नस्ल भाषा के भेदभाव से ऊपर उठकर संपूर्ण मानवजाति को एक समझने की भावना दी है तो इन संचार माध्यमों का उपयोग इन भेदभावों के जरिए लोगों में परस्पर शत्रुता को एक समझने की भावना दी है तो इन संचार माध्यमों का उपयोग इन भेदभावों के जरिए लोगों में परस्पर शत्रुता और विद्वेष पैदा करने के लिए भी किया जाता है।*

जनसंचार माध्यमों में दिखाए जाने वाले मनोरंजन के ज्यादातर कार्यक्रमों में अभिजात वर्ग को महिमामंडित और औरतों को उपयोग की वस्तु के रूप में पेश किया जाता है। मनोरंजन के कार्यक्रमों में इतनी ज्यादा हिंसा दिखाई जाती है कि लोगों में, खासकर बच्चों में संवेदनशीलता नष्ट होने लगती है। अमरीका में हुई हाल की दो घटनाओं का उल्लेख करना उपयोगी होगा जहां स्कूली बच्चों ने टीवी कार्यक्रमों से प्रेरित होकर बंदूकों से अंधाधुंध फायर करके दसियों बच्चों की जान ले ली थी। जनसंचार लोगों में सामाजिक भाईचारा बढ़ाने की बजाए उसको कम करने का माध्यम भी बन जाता है।

इस प्रकार जनसंचार के माध्यम निम्नलिखित सामाजिक लक्ष्यों को पूरा करने में सहायक बनते हैं :-

1. जनसंचार ने सामाजिक व्यवहार को प्रभावित किया है। ये प्रभाव सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह का होता है।
2. जनसंचार ने लोगों के सामाजिक दृष्टिकोण को विस्तृत किया है तो असामाजिक प्रवृत्तियों को भी बढ़ावा दिया है।
3. जनसंचार ने लोगों को शिक्षित और उदार बनने की प्रेरणा दी है तो उन्हें आत्मग्रस्त, संकीर्णतावादी और स्वार्थी भी बनाया है।

#### 2.2.4 सांस्कृतिक लक्ष्य

जनसंचार उद्योग कुछ खास तरह के उद्योगों का निर्माण करता है। एक स्तर पर वह अन्य उद्योगों की तरह वस्तुओं (कैसेट, पुस्तकें, फिल्म की रीलें) और सेवाओं (कलाकारों, तकनीशियनों) का उत्पादन करती है तो दूसरे स्तर पर वह इनसे ज्यादा भी कुछ करती है। वह लोगों को सुखद और संपन्न भविष्य का सपना भी बेचती है। जनसंचार ने जन संस्कृति को पैदा किया है। इसे जनसंचार की तरह नकारात्मक अर्थों में भी समझा जा सकता है। जन संस्कृति को प्रायः ऐसे लोगों की संस्कृति के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, जिनकी अभिरुचियां निम्न स्तर की होती हैं। यहां प्रायः दो तरह की धारणाएं देखने को मिलती हैं। एक तो यह कि साधारण लोगों को जन संस्कृति के ऐसे रूप में ही आनंद प्राप्त होता है। यानी आभिजात्य संस्कृति और जन संस्कृति का फर्क अपरिहार्य है क्योंकि दोनों वर्गों की अभिरुचियां एक-सी नहीं हो सकतीं। दूसरा दृष्टिकोण यह है कि जन संस्कृति निम्न या विकृत होती है लेकिन इसके लिए वे लोग उत्तरदायी नहीं होते बल्कि वे जिम्मेदार होते हैं जो अपने लाभ और छलपूर्ण उद्देश्यों के लिए साधारण लोगों पर इसे थोपते हैं।

सांस्कृतिक संदर्भ में जनसंचार एक स्तर पर आभिजात्य संस्कृति और जनसंस्कृति के अंतराल को कम करता है, तो दूसरे स्तर पर वह नए तरह के भेदभाव भी पैदा करता है। यह जनसंचार ही है जिसने कला के ऐसे रूपों को भी सब के लिए उपलब्ध करा दिया जो पहले सिर्फ उच्च वर्ग तक ही सीमित थे। वहीं दूसरी ओर इसने विकृत और मानव-विरोधी सांस्कृतिक 'रूपों' को घर-घर तक पहुंचा दिया है। इस प्रकार लोगों की सांस्कृतिक अभिरुचियों को विकृत भी किया है। इसने विभिन्न कलारूपों में जनता की भागीदारी को बढ़ाया है और लोगों को सृजनात्मकता के अवसर उपलब्ध कराए हैं। जनसंचार ने स्वस्थ और जनपक्षीय कलारूपों को पीछे धकेलने का भी काम किया है। जनसंचार की इन अंतर्विरोधी भूमिका को समझना जरूरी है।

अंत में जनसंचार निम्नलिखित सांस्कृतिक लक्ष्यों को पूरा करने में सहायक होता है-

1. जनसंचार के माध्यम विभिन्न संस्कृतियों को एक दूसरे के नजदीक लाने और इस तरह सांस्कृतिक सामंजस्य बढ़ाने में सहायक होते हैं।
2. जनसंचार आभिजात्य कलारूपों को आम लोगों तक पहुंचाने का माध्यम बनता है।
3. जनसंचार लोक और जन कलारूपों की उपलब्धता में भी वृद्धि करता है।
4. जनसंचार लोगों की सृजनात्मक क्षमता की पूर्ति के कहीं ज्यादा और बेहतर अवसर प्रदान करता है।
5. जनसंचार अपसंस्कृति को लोकप्रिय बनाने का माध्यम भी बनता है।
6. जनसंचार सांस्कृतिक वर्चस्व कायम करने का जरिया भी बनता है।

#### बोध प्रश्न- 1

1. निम्नलिखित लक्ष्य क्या जनसंचार द्वारा पूरे किए जा सकते हैं -
  - क. गरीबी समाप्त करना
  - ख. लोगों को राजनीतिक रूप से जागरूक बनाना
  - ग. जातिवाद मिटाना
  - घ. कलारूपों को जन-जन तक पहुंचाना
2. जनसंचार परस्पर विरोधी लक्ष्यों को पूरा करने में सक्षम होते हैं। सांस्कृतिक क्षेत्र के ऐसे दो लक्ष्यों का उल्लेख कीजिए जो अंतर्विरोधी हों।
3. जनसंचार के चार सकारात्मक लक्ष्यों का उल्लेख कीजिए।

### 2.3 जनसंचार के कार्य

जनसंचार के माध्यमों द्वारा जिन लक्ष्यों की पूर्ति होती है, उन्हें हम तीन भागों में बांट सकते हैं। ये लक्ष्य या तो लोगों को सूचना प्रदान करते हैं, या शिक्षित करते हैं या फिर लोगों का मनोरंजन करते हैं। ये ही जनसंचार के कार्य कहे जा सकते हैं। एक उदाहरण से इस बात को समझें। आपके पास रेडियो या ट्रांजिस्टर तो जरूर होगा। आपने या आपके माता-पिता ने उसे क्यों खरीदा? जाहिर है, घर में सजाने के लिए तो नहीं खरीदा होगा। आपके पिताजी उस पर समाचार सुनते होंगे। आपकी माताजी कोई हास्य धारावाहिक सुनती होंगी। आपकी छोटी बहन को फिल्मी गाने सुनने का शौक होगा और आपको विज्ञान संबंधी वार्ताएं सुनने का। रेडियो परिवार के हर सदस्य के लिए उपयोगी है। किसी के लिए वह सूचना का माध्यम है तो किसी के लिए मनोरंजन का और किसी के लिए ज्ञान का। ये



ही जनसंचार के कार्य हैं। इन्हीं तीन क्षेत्रों में कार्य करते हुए जनसंचार उन लक्ष्यों की पूर्ति करता है, जिनके लिए उसकी खोज की गई है।

जनसंचार के माध्यमों द्वारा संप्रेषित प्रत्येक कार्यक्रम इनमें से किसी-न-किसी कार्य को अंजाम देता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि जो कार्यक्रम शिक्षा देने के लिए है, उनसे मनोरंजन नहीं हो सकता और मनोरंजक कार्यक्रम कोई सूचना नहीं देता। अगर ध्यान दें तो आधुनिक युग में ही नहीं उससे पहले के युगों में भी संचार के साधनों ने यही तीन कार्य पूरे करने में अहम भूमिका निभाई है। उत्सवों पर बजाए जाने वाले बड़े-बड़े नगाड़े लोगों को सावधान करने और संकेत पहुंचाने के भी काम आते थे। इसी प्रकार कविता की रचना आनंद के लिए की जाती थी और लोगों को शिक्षित कराने के लिए भी। यही बात आज के युग के लिए भी सही है। अगर कोई फर्क है तो यही कि जनसंचार के इन कार्यों का आज जो व्यवसायीकरण हुआ है, वैसा इससे पहले के किस भी युग में नहीं हुआ।

### 2.3.1 सूचना प्रदान करना

जनसंचार का पहला कार्य है, सूचना प्रदान करना। आज के समाज में सूचना का महत्व किसी और जमाने से कहीं ज्यादा बढ़ गया है। सूचना ज्ञान का आधार है। सूचना सिर्फ तथ्यों या तथ्यों पर आधारित सामग्री का संयोजन नहीं है, वह हमारे जीवन की अनिवार्यता है। हमारे सामाजिक विकास का अनिवार्य घटक है, हमारे सामाजिक हस्तक्षेप के लिए हमारी विवेकशीलता को दिशा देने वाला कारक भी है। सूचना का महत्व आज इतना बढ़ गया है कि आज के समाज को सूचना समाज कहा जाने लगा है। सूचना की जरूरत सभी को होती है। किसान को मौसम और बाजार की, व्यापारी को माल के आमद और मोल-भाव की, यात्रा करने वालों को गाड़ियों के आने-जाने के सही समय की जानकारी जरूरी होती है। आज के युग में सूचना प्रदान करने वाले संचार माध्यमों का अभूतपूर्व विकास हुआ है। इससे सूचना को भी खरीदे और बेचे जाने वाली वस्तु में बदल दिया है। सूचना उत्पाद वस्तु होने के कारण अन्य उत्पादन के साधनों की तरह उन पर भी एक खास वर्ग का अधिकार है। सूचना का महत्व इतना बढ़ गया है कि प्रत्येक व्यवसाय में आज काम करने वालों का अच्छा खासा हिस्सा सूचनाओं का उत्पादन करने, उनको पुनरावर्तित करने और उनको बनाए रखने के काम में लगा हुआ है।

पिछले कुछ सालों में संचार प्रौद्योगिकी में जो परिवर्तन हुए हैं उन्होंने दुनिया का नक्शा ही बदल दिया है। सूचना प्रौद्योगिकी का विकास उन निगम क्षेत्र की जरूरतों में संचालित है जो इस प्रौद्योगिकी के फैलाव के जरिए अपने माल के लिए नए बाजारों की तलाश करना चाहता है। यदि हम सूचना प्रौद्योगिकी के विस्तार को इस आर्थिक मकसद के मद्देनजर देखें तो हमें इस प्रौद्योगिकी के विस्तार और दूसरे क्षेत्रों की गतिविधियों के पारस्परिक संबंधों को समझने में कोई कठिनाई नहीं होगी। यह आकस्मिक नहीं है कि संचार क्षेत्र के तेजी से विस्तार के साथ भारतीय राजनीति में उदारतावाद और मुक्त अर्थव्यवस्था की मांग भी बलवती होती जा रही है।

सूचना ही शक्ति है, यह इस युग की आम समझ बनती जा रही है। आज हमारे चारों ओर सूचनाओं का अंबार लगा है। कह सकते हैं कि सूचनाओं के पहाड़ के नीचे कहीं मनुष्य ही दब गया है। यह भी कहा जा रहा है कि सूचनाओं के अंबार के नीचे सूचनाओं का अर्थ ही खो गया है। आज ज्ञानी होने की परिभाषा बदल गई है। आज ज्ञानी वह है जिसके पास सूचनाओं का ढेर है, जो व्हाइट हाउस की लंबाई-चौड़ाई बता सकता है, जो एफिल टावर में लगी कीलों की कुल संख्या बता सकता है,

जो माइकल जैक्सन के एक-एक गीत का इतिहास बता सकता है, लेकिन जो यह नहीं जानता कि उसके घर के बर्तन साफ करने वाली स्त्री ने भरपेट खाना खाया या नहीं। सूचनाएं उन्हीं को उपलब्ध हैं जो शक्तिवान हैं, लेकिन यह एक बहुत बड़ा भ्रम भी है। सचचई यह है कि सूचना से न तो आर्थिक सत्ता प्राप्त होती है, न राजनीतिक सत्ता। न ही उससे उन समस्याओं का निदान हो सकता है जो भिन्न रूपों में विकसित और विकासशील देशों में व्याप्त हैं। सांस्कृतिक क्षेत्र में भी सूचना प्रौद्योगिकी ने मानवीय मूल्यों के विकास में मदद नहीं की है।

### 2.3.2 शिक्षा देना

जनसंचार का दूसरा महत्वपूर्ण कार्य शिक्षा प्रदान करना है। यहां शिक्षा का तात्पर्य औपचारिक शिक्षा ही नहीं है, वरन् ज्ञान संप्रेषण के सभी रूप शिक्षा के क्षेत्र में ही गिने जाएंगे शिक्षा के लिये माध्यम की आवश्यकता होती है। भाषा और लिपि के सर्वाधिक सर्वाधिक सशक्त माध्यम हैं। भाषा और लिपि के आविष्कार ने मनुष्य के विचारों, भावनाओं और गतिविधियों को लिपिबद्ध करने और उन्हें भविष्य के लिए सुरक्षित रखने की परंपरा को जन्म दिया। भाषा का महत्व असंदिग्ध है लेकिन शिक्षा के प्रसार के लिए अन्य माध्यमों की जरूरत भी होती है। शिक्षा का परंपरागत तरीका शिक्षक और शिष्यों का एक स्थान पर आमने-सामने बैठ कर संवाद करना था। लेकिन लिपि के आविष्कार ने यह संभव बनाया है कि ज्ञान की बातों को लिखकर सुरक्षित रखा जा सके। मुद्रण की पद्धति की खोज ने इस कार्य को इतना महत्वपूर्ण बना दिया कि ऐसी दुनिया की कल्पना करना भी हमारे लिए नामुमकिन- सा हो गया है जिसमें पुस्तकें न हों। लेकिन आज टंकण से कंप्यूटर तक और साइकलोस्टाइल से लेकर जीरोक्स मशीन तक ने शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व बदलाव ला दिया है।

शिक्षा का प्रारंभिक तरीका मौखिक बातचीत पर आधारित था। लेकिन यह तरीका न तो बहुत वैज्ञानिक हो सकता था और न ही बहुत व्यापक। संप्रेषण के नए माध्यमों ने अनुभवों के आदान-प्रदान के इतने स्रोत खोल दिए कि उनके आधार पर बौद्धिक गतिविधियों को ज्यादा प्रभावशाली ढंग से संचालित किया जाना संभव हो सका। सूचना और संप्रेषण में निहित शैक्षिक मूल्यवत्ता को शीघ्र पहचान लिया गया। पुस्तकों के जरिए परंपरागत ज्ञान को लिपिबद्ध किया जाने लगा। वे लोग जो पढ़-लिख नहीं सकते थे, रेडियो ने उनके लिए ज्ञान के नए द्वार खोल दिए। शीघ्र ही महसूस किया जाने लगा कि रेडियो के द्वारा लोगों तक तरह-तरह की सूचनाएं तत्काल पहुंचाई जा सकती हैं। इस प्रकार के लोग भी जिन्हें स्कूल जाने या पढ़ने-लिखने का मौका नहीं मिला वे भी रेडियो के द्वारा अपने बौद्धिक संसार का विस्तार करने में सक्षम हुए। रेडियो के बाद टेलीविजन ने इसमें एक और आयाम जोड़ा। यद्यपि यह माध्यम रेडियो की तुलना में सस्ता और सुलभ उस हद तक नहीं हो पाया। आज तो इंटरनेट की मदद से घर बैठे कम्प्यूटर पर आनलाइन शिक्षा प्रदान की जा सकती है।

जनसंचार माध्यमों द्वारा संप्रेषित होने वाला प्रत्येक संदेश चाहे वह सूचना के रूप में हो या मनोरंजन के लिए, उसमें शिक्षा का तत्व किसी-किसी न रूप में मौजूद अवश्य होता है। जरूरी नहीं कि संदेश से मिलने वाली शिक्षा का सामाजिक मूल्य सकारात्मक ही हो। लेकिन ज्ञान रहित या मूल्य रहित संदेश-जैसा कोई संप्रेषण नहीं होता। जनसंचार माध्यमों की बहुलता और इससे संदेशों की तीव्र और अत्यधिक प्रवाहमानता के कारण लोगों के जीवन को गढ़ने में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका हो गई है।

जनसंचार माध्यम जिस तरह का ज्ञान प्रस्तुत कर रहे हैं उसमें विविधता तो है लेकिन उन्हें परंपरागत बौद्धिक श्रेणियों में रखना कठिन है। इन माध्यमों द्वारा संप्रेषित ज्ञान में वास्तविक ज्ञान की मात्रा बहुत कम है जिसकी वजह से वास्तविक ज्ञान की पहचान करना बहुत मुश्किल होता जा रहा है। जनसंचार ने हमारी एक-सी प्रतीकात्मक पद्धतियों को मजबूत और समृद्ध किया है। उनकी अभिव्यक्ति और व्याख्या के नए मार्ग तलाश किए हैं। ऐसा करते हुए ये माध्यम अलग अलग समूहों की विशिष्ट पहचानों को कम करते हैं और उन्हें एक ही सांचे में ढालने लगते हैं। सांस्कृतिक पहचानों की मिटती हुई दूरी का नकारात्मक पहलू यह है कि इससे विभिन्न संस्कृतियों के बीच स्वाभाविक एकता का मार्ग अवरुद्ध होता है और प्रभुत्वशाली वर्गों का सांस्कृतिक वर्चस्व मजबूत होता है। इस प्रकार प्रत्येक समाज अपनी जरूरतों के मुताबिक स्वतंत्र और स्वाभाविक विकास का मार्ग छोड़ने पर विवश हो जाता है।

### 2.3.3 मनोरंजन करना

जनसंचार माध्यमों का एक प्रमुख कार्य मनोरंजन प्रदान करना है। मनोरंजन को प्रायः सतही और नकारात्मक चीज समझ लिया जाता है, लेकिन यह सही नहीं है। कुछ विद्वानों का तो मानना है कि जनसंचार माध्यमों में जो भी अंतर्वस्तु प्रस्तुत की जाती है, उसमें मनोरंजन का तत्व अवश्य होता है। लेकिन हम आमतौर पर मनोरंजन कार्यक्रम उन्हें ही समझते हैं जिनसे हमारी भावनाएं उत्तेजित हों। मनोरंजन निष्क्रिय भाव नहीं है, वह सक्रिय भाव भी है। यह रचना में, अभिव्यक्ति में और आस्वादन तीनों में निहित होता है।

जनसंचार माध्यमों के द्वारा जब कोई प्रतीकात्मक रूप संकेतीकृत किया जाता है तो यह प्रश्न स्वभावतः उठता है कि उसमें मनोरंजन का गुण कैसे सन्निहित होता है? दूसरा सवाल यह भी उठता है कि क्या सभी माध्यमों में मनोरंजन का समावेश एक ढंग से होता है? वस्तुतः प्रत्येक संप्रेषण माध्यम के कुछ अनकहे नियम होते हैं या कहना चाहिए कि माध्यम के अस्तित्व में आने के बाद धीरे-धीरे बनने लगते हैं और जनसंचार माध्यमों में काम करने वाला इन्हीं नियमों का पालन करने लगता है। प्रत्येक संचार माध्यम की अपनी संरचना होती है जिसके द्वारा मनोरंजक कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाता है। इस संरचना के दो महत्वपूर्ण अंग होते हैं- एक तो माध्यम का विशिष्ट व्याकरण और दूसरा, अंतर्वस्तु को परिभाषित करने वाले नियम। ये दोनों बातें संरचना में अंतर्गृथित होती हैं।

जनसंचार माध्यमों का विशिष्ट व्याकरण सिर्फ उनके हार्डवेयर से तय नहीं होता, बल्कि इस बात से भी तय होता है कि वह माध्यम किस रूप में प्रयुक्त हो रहा है। प्रत्येक माध्यम से जुड़े लोग अंतर्वस्तु की आवश्यकता के अनुसार, व्याकरण की अधिकतम संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए उसे संकेतीकृत करते हैं। अंतर्वस्तु की आवश्यकता इस बात से तय होती है कि क्या संप्रेषित किया जाना है और संप्रेष्य संकेतों का विसंकेतीकरण सफलतम रूप में कैसे संभव होगा।

मनोरंजन के संदर्भ में माध्यम की विशिष्टता का मतलब है कि उसकी प्रकृति के अनुसार अंतर्वस्तु को रूप देना मसलन, जैसे रेडियो एक श्रव्य माध्यम है इसलिए इसमें ध्वनि और शब्दों की अधिकतम संभाव्य क्षमता का प्रयोग किया जाता है। लेकिन दृश्य माध्यमों में शब्दों से ज्यादा बल दृश्यों पर रहता है। इसी प्रकार प्रत्येक माध्यम प्रेषक की जिंदगी में कुछ खास जगह बनाता है। टेलीविजन का आनंद लेने के लिए उसके सम्मुख बैठना आवश्यक है जबकि रेडियो का आनंद काम

करते हुए भी उठाया जा सकता है। इसलिए यह जरूरी है इन माध्यमों के लिए कार्यक्रमों का आयोजन करते हुए इन बातों को ध्यान में रखा जाए।

मनोरंजन का सवाल जब उठता है तो लोकप्रियता का सवाल भी सामने आता है। आमतौर पर इस बात को इस तरह प्रस्तुत किया जाता है कि जो लोकप्रिय है वहीं मनोरंजक है या जो मनोरंजक नहीं है वह लोकप्रिय भी नहीं हो सकता। लोकप्रियता का अर्थ है व्यापक रूप में जनता द्वारा स्वीकार किया जाना। लेकिन मामला इतना सीधा- सरल नहीं है। उपभोक्तावाद के इस दौर में लोकप्रियता को स्थान और काल की दृष्टि से भी देखा जाना चाहिए। लोकप्रियता का सही पैमाना लोगों के बीच स्वीकार किया जाना ही नहीं है, वरन् कितने व्यापक स्तर पर और कितने लंबे समय तक स्वीकार्य किया जाना भी है।

लोकप्रियता से दूसरा सवाल है, वास्तविक लोकप्रियता की पहचान। जनसंचार की ढांचागत और प्रबंधगत दुर्बलता इस रूप में भी दिखाई देती है कि ये प्रतीकात्मक रूपों की वास्तविक क्षमता का सही मूल्यांकन नहीं कर पाते और ऐसे रूपों को भी जरूरत से ज्यादा महत्व देते हैं जिनमें कोई तत्व की बात नहीं होती, लेकिन ऐसी कोशिशें लंबे समय तक टिक नहीं पातीं। यह तो संभव है कि जनसंचार माध्यमों की उपेक्षा के कारण वास्तविक, प्रतिभाएं सामने न आये लेकिन यह संभव नहीं है की अंतर्वस्तु और कलात्मक की दृष्टि से कमजोर अभिव्यक्तियां लंबे समय तक प्रभाव कायम रखने में सफल हो जाएं।

लोकप्रियता से जुड़ा तीसरा सवाल यह है कि मानवीय क्षमता की सतही और मन बहलाव का प्रयत्न करने वाली अभिव्यक्तियों और मानवीय सरोकार की गंभीर कोशिशों को एक स्तर की लोकप्रियता नहीं मिल सकती। दूसरे तरह के प्रयत्न अधिक स्थायी होते हैं। कई मामलों में सदियों तक व्याप्त और राष्ट्रों की सीमाओं से परे, लेकिन सदैव विभिन्न समाजों में इन्हें ग्रहण करने की क्षमता रखने वाले लोग उन लोगों की तुलना में सीमित संख्या में होते हैं, जो पहली तरह की अभिव्यक्तियों को ग्रहण करने के आदी होते हैं। प्रथम प्रकार की अभिव्यक्तियों में भी यदि स्वस्थ मानवीय मूल्य हों तो अंततः वे समाज के सांस्कृतिक विकास में मददगार ही होते हैं और उन्हें व्यापक स्तर पर जन अभिव्यक्तियों का वाहक भी बनाया जा सकता है।

## **बोध प्रश्न-2**

1. निम्नलिखित में से सूचना समाज की विशेषताएं कौन-कौन सी हैं -
  - क. जहां सूचना को खरीदा और बेचा जाता।
  - ख. जहां सूचनाओं का उत्पादन करने उनको पुनरावर्तित करने और उनका भंडारण करने का काम व्यावसायिक स्तर पर किया जाता है।
  - ग. जहां सूचनाओं को शक्ति समझा जाता है।
  - घ. जहां सूचनाएं लोगों को समाज के प्रति जिम्मेदार बनाती हैं।
2. क्या जनसंचार के प्रत्येक संदेश में शिक्षा का तत्व शामिल होता है? एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए।
3. जनसंचार माध्यमों में मनोरंजन का तत्व होना क्यों आवश्यक है ?
4. प्रेमचंद की लोकप्रियता को किस श्रेणी में रखेंगे और क्यों ?

---

## 2.4 जनसंचार की प्रक्रियाएं

---

जनसंचार के बारे में अब तक हमने जो भी अध्ययन किया है उससे यह साफ हो गया है कि जनसंचार का संबंध समाज से बहुत गहरा है। जनसंचार संदेशों को लोगों तक संप्रेषित करने का काम करता है। यह काम यह एक तरफा भी कर सकता है जैसे अखबार, रेडियो, सिनेमा और टेलीविजन में और दुतरफा रूप में भी जैसे टेलिफोन, फैक्स, ई-मेल आदि में। उपग्रह प्रणाली और इलेक्ट्रॉनिकी के बाद तो टेलीविजन और रेडियो का भी दुतरफा संप्रेषण के रूप में इस्तेमाल किया जाने लगा है।

जनसंचार की अब तक की बातचीत से आप यह तो समझ ही गए होंगे कि संदेश पहुंचाने का काम जनसंचार किस रूप में संपन्न करता है। हमने इस पाठ्यक्रम की पहली इकाई में बताया था कि संदेश को एक व्यक्ति से दूसरे तक पहुंचाने के लिए माध्यम की आवश्यकता है यह माध्यम सभी संदेशों को संप्रेषित करता है जो उसके द्वारा संप्रेषित किया जाना है। लेकिन यह ग्रहीता पर है कि वह उन संदेश को ग्रहण करे या नहीं। हम टेलीविजन और रेडियो में इस प्रक्रिया को देख सकते हैं। जब विविध भारती पर मनपसंद गाना नहीं आ रहा होता है तो हम दूसरे स्टेशनों पर कार्यक्रम सुनने लगते हैं। इसी प्रकार टेलीविजन पर हम कभी कोई चैनल लगाते हैं, कभी कोई। इसका अर्थ यह है कि रेडियो और टेलीविजन हमें एक ही समय कई तरह के कार्यक्रमों के विकल्प प्रदान करता है। यह हमें तय करना होता है कि हम कौन-सा कार्यक्रम चुनें।

अब हम इस बात पर विचार करें कि जनसंचार की प्रक्रिया घटित कैसे होती है। हमने पहली इकाई में इस पर संक्षेप में विचार किया था। आइए, उसी पर थोड़ा और विचार करें। हमने दंगे के संदर्भ में रिपोर्टर द्वारा भेजे जाने वाले संदेश का उल्लेख किया था। अखबार में दंगे का जो समाचार हमें पढ़ने को मिला वह किसी रिपोर्टर के जरिए ही पहुंचा। लेकिन हम तक पहुंचाने वाला रिपोर्टर ही अकेला व्यक्ति नहीं था। अगर हम ध्यान दें तो अखबार में आने से पहले हम इसे रेडियो पर समाचारों में सुन चुके थे। लेकिन हमने जितने विस्तार से समाचार को अखबार में पढ़ा था, उतने विस्तार से हमें रेडियो में सुनने को नहीं मिला। यह जरूर है कि दंगे का समाचार हमें रेडियो पर समाचारपत्र से पहले प्राप्त हुआ था। रेडियो के साथ-साथ ही हमने टेलीविजन पर इन समाचार को देखा। लेकिन यहां हमें दंगाग्रस्त क्षेत्र के दृश्य भी देखने को मिले। ये दृश्य हमें न तो रेडियो और न ही अखबार उपलब्ध करा सकता था। अखबार दंगों के कुछ स्थिर चित्र अवश्य छाप सकता था। इस प्रकार हम देखते हैं कि अलग-अलग माध्यम अलग-अलग रूपों में संदेश प्रसारित करते हैं। जनसंचार की पूरी प्रक्रिया इसी तरह के अलग-अलग कार्यों को करते हुए संपन्न होती है। ये प्रक्रियाएं क्या हैं, आइए, इसे समझने का प्रयत्न करें।

### 2.4.1 प्रसारण करना

जनसंचार की मुख्य प्रक्रिया प्रसारण है। प्रसारण यानी संदेशों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाना, एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक पहुंचाना। यह काम व्यक्ति भी करते हैं और यंत्र भी। जो रिपोर्टर तथ्यों को एकत्र करता है और उसे समाचारपत्र, रेडियो या टेलीविजन चैनल को भेजता है, वह भी प्रसारण का ही काम कर रहा है। और जिस रेडियो स्टेशन या अखबार के दफ्तर द्वारा यह काम किया जाता है, वह भी प्रसारण का ही काम कर रहा है। जनसंचार के क्षेत्र में प्रसारण का काम

सरल नहीं है। इसके लिए बहुत से लोगों, यंत्रों और संस्थाओं की जरूरत होती है। 1980 के बाद जब टेलीविजन का प्रसारण बढ़ाने का निर्णय लिया गया तो उसके लिए केवल उपग्रह की जरूरत नहीं पड़ी बल्कि देश के कोने-कोने में रिले केंद्रों की भी जरूरत पड़ी। इसी तरह कोई अखबार केवल छप जाने मात्र से ही अपने प्रसारण का दायित्व पूरा नहीं कर लेता। उसे हाकरों की बहुत बड़ी संख्या की जरूरत होती है जो अखबार को घर-घर तक पहुंचा सकें। अगर हम जनसंचार के प्रसारण की प्रक्रिया पर ध्यान दें तो वह एक विशाल तंत्र नजर आता है। यह तंत्र ही जनसंचार को महत्वपूर्ण बनाता है और शक्तिशाली भी। लेकिन यदि हम संप्रेषण की प्रक्रिया का ग्रहण करने वाले व्यक्ति के रूप में देखें तो यह विशाल तंत्र इन्हीं एक-एक व्यक्ति की पसंद और नापसंद पर टिका होता है। करोड़ों रुपयों की लागत से बनी फिल्म अपनी लागत को निकाल कर निर्माता को मुनाफा देगी या नहीं यह इस बात पर निर्भर करता है कि लोग उसे देखेंगे या नहीं। यह फिल्म देखने का निर्णय प्रत्येक व्यक्ति का निजी होता है और यह निर्णय सिर्फ फिल्म के मामले में नहीं बल्कि अखबार खरीदने के मामले में, टेलीविजन पर धारावाहिक देखने के मामले में भी लागू होता है।

इस प्रकार जनसंचार द्वारा संदेशों का प्रसारण संचार प्रौद्योगिकी की मदद से होता है लेकिन इस काम को अंजाम देने वाले लोगों और संस्थाओं का हस्तक्षेप भी इस प्रसारण की प्रक्रिया को प्रभावित करता है। प्रसारण की प्रक्रिया को वे लोग भी प्रभावित करते हैं जिन्हें इसकी जरूरत है।

#### 2.4.2 सीमित करना

जनसंचार की प्रक्रिया का दूसरा महत्वपूर्ण काम है संप्रेषित होने वाले संदेश को सीमित करना। हमने अखबार के मामले में देखा था कि रिपोर्टर जो संदेश भेजता है, वह घटना का पूरा और शब्दशः विवरण नहीं होता। वह उसमें बहुत कुछ छोड़ देता है। उसकी प्रस्तुति भी समाचारपत्र की जरूरत और रिपोर्टर की समझ के अनुसार होती है। हमने यह भी बताया था कि रिपोर्टर द्वारा भेजा गया संदेश यथावत् प्रकाशित नहीं होता बल्कि संपादक मंडल में काम करने वाले उसके सहकर्मी भी उसमें हेरफेर करते हैं। इस प्रकार जनसंचार की प्रक्रिया संदेश को सीमित करने का काम करती है। यह बात अन्य माध्यमों पर भी लागू होती है। यही नहीं, यह प्रक्रिया सूचना के अलावा शिक्षा और मनोरंजन प्रदान करने वाले कार्यक्रमों में भी देख सकते हैं। किसी सिनेमा में नायक को दिल्ली से कानपुर जाना है जाहिर है कि फिल्म में यह यात्रा पूरी दिखाना संभव नहीं है। इसके लिए फिल्म निर्देशक केवल तीन शॉट का इस्तेमाल करके यह संकेत कर देता है कि नायक दिल्ली से कानपुर पहुंच गया है। पहले शॉट में नायक को दिल्ली के स्टेशन पर सामान सहित दिखाकर, दूसरे शॉट में रेलगाड़ी को दौड़ता हुआ दिखाकर और तीसरे शॉट में नायक को कानपुर स्टेशन पर ट्रेन से उतरता हुआ दिखाकर। वस्तुतः सीमित करने की यह प्रक्रिया जनसंचार में बहुत महत्वपूर्ण होती है। यही प्रतीकात्मकता की प्रक्रिया भी है, लेकिन जन संचार के लिए इतनी स्वाभाविक है कि इसके बिना संप्रेषण का काम सफलता के साथ नहीं किया जा सकता।

सीमित करने की प्रक्रिया का संबंध और भी कई चीजों से है। जनसंचार के माध्यमों द्वारा प्रसारित होने वाले संदेश व्यापक जन समुदाय के लिए होते हैं इसलिए यह जरूरी हो जाता है कि केवल वही संदेश प्रेषित हो जो सभी के लिए स्वीकार्य हो। ऐसा कोई संदेश जो किसी समुदाय की भावनाओं

को आहत करने वाला या किसी व्यक्ति को लांछित करने वाला हो तो वह संदेश प्रेषित करने से रोक दिया जाता है या ऐसे अंशों को कार्यक्रम से निकाल दिया जाता है। ऐसे संदेश को भी जिनमें स्त्रियों की अवमानना की गई हो या बच्चों के कोमल मन पर बुरा असर डालने वाले हों तो उन्हें भी रोक दिया जाता है। यानी जनसंचार माध्यमों पर संदेश के संप्रेषण को नियमित करना जरूरी है। इसके लिए सरकारें कई तरह के कानून बनाती हैं। कई तरह के निकायों का गठन करती हैं, ताकि अनुचित संदेशों का प्रसारण न हो सके। मसलन, फिल्मों के लिए सेंसर बोर्ड से प्रमाणपत्र हासिल करना जरूरी होता है। लेकिन सरकारों की संदेशों को नियमित करने की सभी कोशिशें नेक इरादों से संचालित नहीं होती। कई बार अपने राजनीतिक लाभ के लिए या जनता को सच्चाई से दूर रखने के लिए भी वह संदेशों के प्रवाह को रोकती हैं।

इस प्रकार जनसंचार की यह प्रक्रिया जहां एक ओर अपनी विशिष्ट प्रौद्योगिकी की वजह से सीमित की जाती है, तो दूसरी ओर वह उन लोगों और संस्थाओं की वजह से भी सीमित की जाती है जिनके हाथ में संप्रेषण का नियंत्रण होता है।

### 2.4.3 फैलाना

जनसंचार की प्रक्रिया का तीसरा महत्वपूर्ण चरण है-संदेश को फैलाना। विस्तार की इस प्रक्रिया का संबंध दो बातों से है। एक, संदेश के मूल रूप को बढ़ाकर से ऐसा स्वरूप प्रदान करना जिससे कि प्रेषिती को संदेश की प्रासंगिकता और महत्व का बोध हो सके। मसलन, किसी घटना के घटित होने पर समाचारपत्र सिर्फ घटना का वर्णन ही पेश नहीं करते बल्कि उससे जुड़े दूसरे तथ्य, आकड़े, प्रसंग आदि का विवरण भी देते हैं ताकि लोगों को यह समझ आ सके कि इस संदेश का क्या महत्व है। यहां जो बातें बाद में जोड़ी गई हैं, वह संदेश का संप्रेषण करने वालों का अपना योगदान है। इससे वह अखबार अपने ग्राहकों के बीच अपनी विशिष्ट पहचान बनाता है। संदेश को फैलाने का यह काम लगभग सभी माध्यम करते हैं। इसके और भी कई तरीके हैं। मसलन, किसी घटना विशेष के बारे में लोगों की प्रतिक्रिया देना। हम राजनीति से इतर क्षेत्रों में भी इस प्रक्रिया को देख सकते हैं। किसी फिल्म के रिलीज होने के बाद उसके बारे में दर्शकों की प्रतिक्रियाओं को प्रस्तुत करना या उसकी समीक्षा छापना इसी तरह का काम है। इन सब बातों का संप्रेषण से गहरा नाता है। आपने खुद महसूस किया होगा कि अच्छा साक्षात्कार वह होता है जो केवल सवालियों और जवाबों को ही नहीं सवालियों का जवाब देते वक्त साक्षात्कार देने वाले व्यक्ति के व्यवहार और प्रतिक्रियाओं का भी साथ-साथ वर्णन करता चलता है।

संदेश का विस्तार करने की जरूरत एक और कारण से भी पड़ती है। जब कोई संदेश व्यापक जन समुदाय तक पहुंचाया जाना हो तो यह जरूरी हो जाता है कि उसे इस रूप में पहुंचाया जाए, ताकि वह अधिकतम लोगों के लिए उपयोगी साबित हो।

### 2.4.4 व्याख्या करना

संदेश के संप्रेषण की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण अंग है, संदेश की व्याख्या करना या पुनर्व्याख्या करना। इसकी जरूरत संचार माध्यमों में बराबर पड़ती रहती है। मसलन, सरकार द्वारा अपनाई गई कोई नीति जनता और देश पर क्या असर डालेगी, इसके लिए अखबार आमतौर पर उस नीति की व्याख्या

भी साथ- साथ देते हैं। इस तरह किसी राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय घटनाक्रम के साथ उसकी व्याख्या देना जनसंचार की प्रक्रिया का महत्वपूर्ण हिस्सा है। कई बार मूल समाचार बहुत लंबा चौड़ा नहीं होता लेकिन उसकी व्याख्या उसे विस्तार देती है। पोकरण में किए गए बम विस्फोट का समाचार तो बहुत संक्षेप में पेश किया जा सकता था। लेकिन इस घटना का सिर्फ हमारे देश के लिए ही नहीं, हमारे पड़ोसी देशों और भारत की अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा से भी गहरा संबंध था। यही कारण है कि विस्फोटों के महीनों बाद भी भारत इस घटनाक्रम से बाहर नहीं निकल पाया है और अब भी यह समाचारों की सुर्खी के रूप में अखबारों में मुखपृष्ठ पर मौजूद रहता है। जिस प्रकार एक अच्छी आलोचना रचना को समझने की नई दृष्टि प्रदान करती है उसी प्रकार जनसंचार के संदेशों की व्याख्या और पुनर्व्याख्या उन संदेशों को नया अर्थ प्रदान करती है।

इस प्रकार जनसंचार की प्रक्रिया को इन चार चरणों के द्वारा समझा जा सकता है। जाहिर है कि जनसंचार की संपूर्ण प्रक्रिया यह नहीं है। संपूर्ण प्रक्रिया तो जैसा कि हमने अपनी पहली इकाई में बताया था संदेश के निर्माण से उसके प्रेषिती को प्राप्त होने और उस पर उस संदेश के प्रभाव तक है। अब अगर हम इस प्रक्रिया को पूरे संदर्भ के साथ समझें तो हम इन्हें निम्न ढंग से रख सकते हैं-

1. संदेश जिसे प्रेषित किया जाना है।
2. संदेश को प्रेषित करने वाला प्रेषक।
3. संदेश जिस माध्यम से प्रेषित किया जाना है।
4. संदेश को प्राप्त करने वाला व्यक्ति।
5. संदेश का प्रेषिती पर पड़ने वाला प्रभाव।

संदेश के संप्रेषण की इन प्रक्रियाओं से जुड़ा प्रश्न यह भी है कि क्या जनसंचार के व्यापक प्रसार के बावजूद लोगों की विश्व दृष्टि और मानवीय संबंधों में किसी तरह का सकारात्मक अंतर आया है? इसका उत्तर देना सहज नहीं है। जनसंचार के इतने माध्यम हमारे चारों ओर बिखरे हैं और इनसे इतना अधिक शोर हो रहा है कि कोई सार्थक सूचना, शिक्षा और मनोरंजन की प्राप्ति लोगों को हो रही है, यह कहना बहुत मुश्किल है। जनसंचार के क्षेत्र में सक्रिय संगठन संस्थान और लोग प्रेषिती को उपभोक्ता से अधिक कुछ नहीं समझते। उनकी कोशिश यही रहती है कि लोगों की संस्कारबद्ध चेतना को बिना झकझोरे, उनके विवेक को बिना जगाए इसलिए जनसंचार की प्रक्रियाओं को समझना जितना जरूरी है जनसंचार के मौजूदा चरित्र को समझना।

### **बोध प्रश्न - 3**

1. जनसंचार की प्रक्रिया में संदेश को सीमित करना क्यों जरूरी होता है?
2. जनसंचार के माध्यमों में संदेश को फैलाने का कोई ऐसा उदाहरण दीजिए जो आपके अनुभव क्षेत्र से जुड़ा हो।
3. जनसंचार की प्रक्रियाएं किन-किन बातों पर निर्भर करती है?

## **2.5 सारांश**

जनसंचार की इस इकाई में आपने जनसंचार के लक्ष्यों कार्यों और प्रतिक्रियाओं का अध्ययन किया है। जनसंचार आधुनिक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। इसके लक्ष्यों को समाज की गतिविधियों के संदर्भ



में ही समझा जा सकता है। जनसंचार के लक्ष्य पर विचार करते हुए हमने कहा था कि इनके लक्ष्य समाज के लक्ष्यों से अलग करके नहीं देखे जा सकते। इसी संदर्भ में जनसंचार के राजनीतिक लक्ष्यों पर विचार करते हुए इकाई में बताया गया है कि जनसंचार ने सूचना के अधिकार का विस्तार किया है और इस तरह लोगों में राजनीतिक जागरूकता को बढ़ाया है। जनसंचार ने लोकतांत्रिक के प्रति लोगों को सजग बनाया है और वे अपने लोकतांत्रिक अधिकारों को हासिल करने के प्रति अधिक सावधान बने हैं। जनसंचार ने शासक वर्ग के राजनीतिक हितों का प्रचार करने में भी अहम भूमिका निभाई है और लोगों में राजनीतिक विश्रम बढ़ाने का भी काम किया है। जनसंचार के माध्यम राजनीतिक हस्तक्षेप का माध्यम भी हो सकते हैं।

जनसंचार ने आर्थिक गतिविधियों के विस्तार में मदद की है तो बाजार की ताकतों को बल प्रदान करने का काम भी किया है। जनसंचार ने लोगों को उत्पादों के प्रति जागरूक बनाया है तो उपभोक्तावादी प्रवृत्ति को भी बढ़ावा दिया है। जनसंचार की वजह से उद्योग और उत्पादन के नए क्षेत्र खुले हैं और सेवा के नए अवसर उपलब्ध हुए हैं। लेकिन जनसंचार के नए माध्यमों के विस्तार की वजह से कई परंपरागत क्षेत्रों का संकुचन भी हुआ है। जनसंचार ने पूंजी के केंद्रीयकरण को बढ़ावा भी दिया है।

जनसंचार ने सामाजिक व्यवहार को प्रभावित किया है। ये प्रभाव दोनों तरह के हो सकते हैं - सकारात्मक भी और नकारात्मक भी। जनसंचार के माध्यमों की वजह से लोगों के सामाजिक दृष्टिकोण का विस्तार हुआ है तो दूसरी ओर असामाजिक प्रवृत्तियों को बढ़ावा मिला है जनसंचार ने लोगों को शिक्षित और उदार बनने की प्रेरणा दी है तो उन्हें आत्मग्रस्त संकीर्ण और स्वार्थी भी बनाया है।

जनसंचार के आधुनिक माध्यमों की वजह से विभिन्न संस्कृतियां एक-दूसरे के करीब आई हैं और उनमें सामंजस्य बढ़ा है। जनसंचार ने आभिजात्य कला रूपों को जन-जन तक पहुंचाने का महत्वपूर्ण काम किया है तो लोककला और जनकला रूपों को नए नेत्र प्रदान किए हैं। लेकिन जनसंचार अपसंस्कृति का भी सबसे बड़ा प्रचारक कहा जा सकता है। जनसंचार ने लोगों की सृजनात्मक क्षमताओं के प्रकाशन के ज्यादा और बेहतर अवसर उपलब्ध कराए हैं तो सांस्कृतिक वर्चस्व को कायम रखने का जरिया भी जनसंचार ही है।

जनसंचार के तीन प्रमुख कार्य मान गए हैं और इकाई में इनकी चर्चा की गई है। सूचना जनसंचार का पहला महत्वपूर्ण कार्य है। सूचना की जरूरत सभी तरह के समाजों को होती है। सूचना प्रौद्योगिकी के विकास ने सूचना के महत्व को बिल्कुल बदल दिया है। सूचना अब अन्य उत्पादों की तरह एक उत्पाद में बदल गई है जिसे खरीदा और बेचा जा सकता है। सूचना के इस बढ़ते प्रभाव की वजह से आज के विकसित समाजों को सूचना समाज कहा जाने लगा है। सूचना ने कई तरह के मिथक पैदा किए हैं। लेकिन सिर्फ सूचना के बल पर समाज में व्याप्त गैर बराबरी और बदहाली को समाप्त नहीं किया जा सकता है।

जनसंचार का दूसरा प्रमुख कार्य शिक्षा के प्रसार में योग देना है। संप्रेषण के सभी माध्यम शिक्षा जरूर देते हैं चाहे वह शिक्षा लोगों पर सकारात्मक असर डाले या नकारात्मक। संचार के माध्यम औपचारिक और अनौपचारिक दोनों तरह की शिक्षा में मददगार होते हैं। जनसंचार के विस्तार ने वास्तविक ज्ञान को कम किया है। उसने प्रभुत्वशाली वर्गों में सांस्कृतिक वर्चस्व को बढ़ाया है और स्वतंत्र और स्वाभाविक विकास के मार्ग को बाधित किया है।

जनसंचार का तीसरा कार्य मनोरंजन प्रदान करना है। मनोरंजन निष्क्रिय भाव नहीं है। वह रचना, अभिव्यक्ति और आस्वादन तीनों क्रियाओं में निहित होता है। मनोरंजन के लिए जनसंचार के विशिष्ट व्याकरण को ध्यान में रखना होता है यह भी कि संप्रेष्य संकेतों को वह सफलतापूर्वक स्वीकृति से भी होता है। मनोरंजन के संदर्भ में लोकप्रियता का प्रश्न भी उपस्थित होता है। क्या जो लोकप्रिय हो वही मनोरंजक होता है? लोकप्रियता का संबंध लोगों की स्थायी और सर्वकालिक स्वीकृति से भी होता है। मानवीय भावों को प्रश्रय देने वाली कलात्मक से उत्कर्ष अभिव्यक्ति को ही स्वस्थ मनोरंजन का नाम दिया जा सकता है।

जनसंचार माध्यमों को समझने के लिए उनकी प्रक्रियों को समझने की भी जरूरत होती है। जनसंचार की प्रक्रिया को संपन्न करने के लिए लोगों यंत्रों और संस्थाओं की जरूरत होती है। जनसंचार की प्रक्रिया के चार चरण होते हैं। सबसे पहले संदेशों को प्रसारित करना। प्रसारण का काम जनसंचार का बुनियादी काम है। जनसंचार संदेशों को यथावत नहीं प्रसारित करता। वह उनमें माध्यम की विशिष्टता, उन पर अधिकार रखने वाले वर्गों की जरूरतों और उनका संचालन करने वाले लोगों की समझ और क्षमता के अनुसार रूपांतरित होकर संप्रेषित होता है। यह रूपांतरण संदेशों के सीमित होने, उसके होने और उसकी पुनर्व्याख्या के रूप में सामने आता है। जनसंचार की यह प्रक्रिया निर्मित होने से लेकर लोगों तक पहुंचने तक चलती रहती है। यहां तक कि जनसंचार द्वारा संदेशों का लोगों पर पड़ने वाला प्रभाव भी एक-सा नहीं होता। जनसंचार की इन प्रक्रियाओं को समझकर ही हम यह भी समझ सकते हैं कि जनसंचार के माध्यम के द्वारा जो लक्ष्य किए जाने हैं और जो कार्य संपन्न होने हैं, वे किस रूप में होंगे।

## 2.6 शब्दावली

**प्रौद्योगिकी समाज** : ऐसा समाज जो अपनी अधिकांश संपदा और आय उन उत्पादन विधियों से प्राप्त करता है जो ऊर्जा के आधुनिक स्रोतों जैसे कि कोयले, बिजली, पेट्रोल, शक्ति इत्यादि पर आधारित हो।

**मुक्त अर्थव्यवस्था** : ऐसी आर्थिक व्यवस्था जिसके अंतर्गत उपभोक्ता मांगों की पूर्ति का काम गैर-सरकारी क्षेत्र में रहने दिया जाता है और उन पर सरकार का काम व्यक्तियों का संरक्षण और उनके स्वतंत्र अनुबंधों को लागू करना होता है।

**औपचारिक शिक्षा** : स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों पर आधारित शिक्षा पद्धति। इस तरह की शिक्षा करने के बाद प्रमाण पत्र, उपाधि या डिप्लोमा प्राप्त होता है।

**अनौपचारिक शिक्षा** : लोगों को शिक्षित करने के वे तरीके जिनका मकसद डिग्री, डिप्लोमा आदि हासिल करना न हो और जो स्कूल, कॉलेज पर निर्भर न हो।

**संस्कृति**: मनुष्य की पहचान जो उसे जानवरों से अलग करती है, वह है उसकी विवेक क्षमता। यह विवेक क्षमता उसके जीवन को सांस्कृतिक आयाम देती है। संस्कृति मनुष्य जीवन की सभी क्रियाओं में समाहित होता है। उसके खाने-पीने, पहनने-ओढ़ने से लेकर उसके रचने, बनाने की सारी क्रियाओं का संबंध संस्कृति से हैं। संस्कृति मनुष्य को मनुष्य होने के अर्थ देती है।

---

## 2.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

---

**जनमाध्यम: संप्रेषण और विकास** - देवेन्द्र इस्सर, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, के- 71, कृष्णनगर, दिल्ली  
I - 110051, संस्करण :1995

**जनसंचार माध्यमों का सामाजिक चरित्र-** जवरीमल्ल पारख, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 29ए, पाकेट-डी, दीप एन्कलेव, अशोक विहार, दिल्ली - 110052

**जनसंचार माध्यम विविध आयाम** - बृजमोहन गुप्त, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

**हिंदी पत्रकारिता की भूमिका** - सनतकुमार, लोक संवाद प्रकाशन, इंदौर

**मेनी वाइसेज वन वर्ल्ड** - संपादक सीन मेकब्राइड, यूनेस्को का प्रतिवेदन, कोगन पेज लि, लंदन,  
संस्करण : 1998

**कम्यूनिकेशन** - रेमंड विलियम्स, पेंग्विन बुक्स, मिडिलसेक्स

**मास कम्यूनिकेशन-** जान आर. बटिनर, एलिन एंड बेकन, लंदन

**आइडियोलोजी एंड मोडर्न कल्चर** : जान बी थाम्पसन, पोलिटी प्रेस, यू.के.

---

## 2.8 निबंधात्मक प्रश्न

---

1. आप रेडियो या टी.वी. पर फिल्मी गीत जरूर सुनते होंगे । अगर आप को फिल्मी गीत पसंद नहीं है तो ऐसे लोगों को जरूर जानते होंगे जो फिल्मी गीतों सुनना पसंद करते हैं । आप अपने अनुभव के आधार पर बताइए कि लोग फिल्मी गीतों क्यों सुनते हैं ? इस तरह के गीत सुनने से किस तरह के लक्ष्यों की पूर्ति होती है ? क्या इसे अपसंस्कृति का प्रसार कहा जा सकता है ? आप अपने मत को स्पष्ट कारणों के साथ प्रस्तुत कीजिए ।
2. आप अखबारों के लिए किसी तरह की संहिता पक्ष में हैं या नहीं ? अपने मत को हमारे देश की राजनीतिक व्यवस्था के संदर्भ में व्याख्यायित कीजिए ।
3. किसी एक दिन के अखबारों में प्रकाशित किसी एक प्रमुख घटना का विवरण चार हिन्दी समाचारपत्रों में पढ़िए और उनकी तुलना कर बताइए कि इन घटनाओं में कौन- से सामान्य तथ्य हैं और उनकी प्रस्तुति में क्या-क्या अंतर हैं? अंतर की वजह भी बताइए ।
4. भारत जैसे देश में जहां अभी भी आधी आबादी निरक्षर है वहां संचार माध्यमों का इस्तेमाल करते हुए किन बातों को प्राथमिकता देनी चाहिए ? 'सब को शिक्षा' के उद्देश्य को प्राप्त करने में संचार के आधुनिक साधन किस हद तक उपयोगी हो सकते हैं, यह भी बताइए ।

---

## इकाई 3 जनसंचार माध्यम एवं सामाजिक परिवर्तन

---

### इकाई की रूपरेखा

- 3.0 उद्देश्य
- 3.1 प्रस्तावना
  - 3.1.1 जनसंचार और जनसंचार माध्यम
  - 3.1.2 सामाजिक एवं नागरिक चेतना तथा जनसंचार माध्यम
  - 3.1.3 जनसंचार माध्यम: एक संगठित रूप
- 3.2 जनसंचार माध्यमों की विकासात्मक भूमिका
  - 3.2.1 जनसंचार परक शोध की स्थिति
  - 3.2.2 जनसंचार माध्यम के रूप
    - 3.2.2.1 मुद्रित माध्यम
    - 3.2.2.2 इलाक्ट्राय माध्यम
      - 3.2.2.2.1 रेडियो
      - 3.2.2.2.2 टेलिविजन
      - 3.2.2.2.3 फिल्म
      - 3.2.2.2.4 अन्य जनसंचार
  - 3.2.3 जनसंचार माध्यमों की परिवर्तनकारी भूमिका
- 3.3 सामाजिक परिवर्तन : अर्थ एवं प्रतिमान
  - 3.3.1 सामाजिक परिवर्तन का अर्थ
  - 3.3.2 सामाजिक परिवर्तन के प्रतिमान
  - 3.3.3 सामाजिक परिवर्तन एवं सांस्कृतिक परिवर्तन
  - 3.3.4 सामाजिक परिवर्तन के कारक
- 3.4 सामाजिक परिवर्तन का स्वरूप
  - 3.4.1 सामाजिक विकास के उपकरण
  - 3.4.2 सांस्कृतिक नवोन्मेष
  - 3.4.3 सामाजिक परिवर्तन का स्वरूप
- 3.5 सामाजिक परिवर्तन और जनसंचार
- 3.6 सारांश
- 3.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें
- 3.8 निबंधात्मक प्रश्न

---

### 3.0 उद्देश्य

---

जनसंचार तो विशेष प्रकार का संचार है। अब तक आप यह जान चुके हैं कि जनसंचार के विविध माध्यम क्या-क्या हैं और उनका उपयोग अथवा प्रयोग कैसे किया जाता है? जनसंचार माध्यमों का उपयोग समाज और समाज के व्यक्ति एवं व्यक्ति इकाइयों द्वारा किया जाता है। इकाई के अध्ययन के उपरांत आप जान सकेंगे कि: -

- जनसंचार माध्यम का मूल उद्देश्य क्या है ?
- विभिन्न माध्यमों का समाज से संबंध क्या है ?
- जनसंचार माध्यमों की सामाजिक परिवर्तन की भूमिका कैसी होती है ?
- सामाजिक परिवर्तन का वर्तमान परिप्रेक्ष्य कैसा होता है ?

---

### 3.1 प्रस्तावना

---

#### 3.1.1 जनसंचार और जनसंचार माध्यम

जनसंचार एक विशेष प्रकार का संचार है जो यंत्रचालित और संदेश का दुगुना-तिगुना कर दूर-दूर तक भेजता है। जनसंचार में संदेश माध्यम प्रापक की प्रकृति के साथ शोर और फीड बैक का भी महत्व होता है। यहां संचार का प्रवाह का हर व्यक्ति को छूता है। कुछ को जानकारी अन्तर्व्यक्तिक माध्यम से तो कुछ तो जनसंचार माध्यम से मिलती है। कभी-कभी माध्यम का पता नहीं चल पाता है लेकिन जनसंचार माध्यम मनुष्य और समाज के चारों ओर फैले हुए हैं। इनमें मुद्रित माध्यम के अतिरिक्त इलाकट्राय माध्यम (रेडियो और टेलीविजन) फिल्म, प्रदर्शनी, जनसंपर्क माध्यमों के अतिरिक्त लोक माध्यमों की व्यापकता ने सारे समाज को प्रभावित किया है।

#### 3.1.2 सामाजिक एवं नागरिक चेतना तथा जनसंचार माध्यम

जनसंचार की भूमिका सामाजिक एवं नागरिक चेतना के विस्तार में बहुत ही महत्वपूर्ण एवं निर्णायक होती है। इस दिशा में टेलीविजन और फिल्मों तो सशक्त संचार माध्यम हैं, इन्हें केवल मनोरंजन माध्यम भर नहीं कहा जा सकता। आजकल चाहे शिक्षित वर्ग हो या निरक्षर वर्ग सभी पर जनसंचार माध्यम अपना प्रभाव व्यापक रूप से फैला चुका है क्योंकि निर्धारण में माध्यमों की भूमिका विस्मृत नहीं की जा सकती। भिन्न सामाजिक पृष्ठभूमि से आए लोग अलग ढंग से संचरण करते हैं। अतः उनके पारस्परिक व्यवहार में कोई परिवर्तन आता है तो उसमें जनसंचार माध्यमों की भूमिका विशिष्ट रहती है।

#### 3.1.3 जनसंचार माध्यम एक संगठित रूप

जनसंचार वास्तव में एक संगठित संचार है। यह मूलतः यंत्रचालित माध्यम के रूप में प्रभावी रहता है। यह कहना उचित होगा कि इस माध्यम में जनसंचार की भूमिका बहुत व्यापक ही नहीं जटिल भी होती है। जनसंचार यंत्रचालित होने के कारण व्यक्ति विशेष के आधार पर ही संचारित नहीं होता है और जनसंचार के महंगे होने के कारण भी संचारक स्वेच्छा से इनका प्रयोग नहीं कर पाता है। ऐसी स्थिति में यह स्पष्ट है कि जनसंचारक स्वतन्त्र रूप से काम नहीं कर सकता क्योंकि जब भी माध्यम का आश्रय ग्रहण करता है या आश्रय ग्रहण किया जाता है तो जनसंचार माध्यम के बहुत सारे संचारक एक साथ गतिशील होते हैं।

ऐसी स्थिति में संदेश की विषयवस्तु, उसका चयन रख विवेचन प्रापक या श्रोता को ध्यान में रखकर किया जाता है और यह प्रापक या श्रोता विशिष्ट वर्ग का न होकर आम प्रापक या श्रोता ही होता है। संदेश निर्धारण के साथ ही प्रापक के अनजान वर्ग, उनकी संस्कृति, भाषा, रुचियों आदि की विभिन्नता आदि का भी ध्यान रखना होता है। इसके साथ ही संदेश के पक्ष या विपक्ष में प्रापक या

श्रोता में उत्पन्न प्रतिक्रिया या फीड की ओर भी ध्यान देना होता है। यदि जन माध्यम का संचारक आम प्राप्त या श्रोता से फीड बैक पाता है तो आगे जनसंचार माध्यम से प्रेषित संदेश के प्रभाव का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि जनसंचार एक जटिल प्रक्रिया है। इस जनसंचार माध्यम की प्रक्रिया का अपना महत्व कम नहीं है। इस जनमाध्यम के निमित्त ऐसा प्रयास किया जाता है कि किस प्रकार सूचना या संदेश विविध जनसंचार माध्यमों के द्वारा अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाई जा सके। इसमें संदेह नहीं है कि जनसंचार माध्यम जनमत निर्धारण की दिशा में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका रखता है लेकिन आज के सेटलाइट युग में आम आदमी की शिक्षा, सामाजिकता, संदेशग्राह्यता और फीडबैक आदि का विश्लेषण और विवेचन किया जाना बहुत आवश्यक है।

### 3.2 जनसंचार माध्यमों की विकासात्मक भूमिका

जनसंचार माध्यम की भूमिका विकासात्मक है। आज तृतीय विश्व की दृष्टि से देखा जाए तो विकासशील देशों में जनसंचार माध्यम की तीन प्रमुख भूमिका हैं चौकसी, नीति निर्धारण और शिक्षण। ये तीनों विकास के आरंभिक चरण में वास्तविक आवश्यकताओं के सर्वेक्षण की भागीदारी करके दूसरे स्तर पर जनसंचार माध्यम नीति निर्धारण में जनसाधारण की रुचि बढ़ाते हैं तथा नए दायित्वों को स्वीकार करने का नैतिक बल भी प्रदान करते हैं। इसके साथ ही ये जन माध्यम औपचारिक और अनौपचारिक दोनों ही प्रकार की शिक्षण व्यवस्था करके आशाओं एवं आकांक्षाओं की वृद्धि करते हैं।

अभिनव परिवर्तन के रूप में व्यक्तिगत स्तर पर छः चरण जागरूकता, रुचि, सूचना, संग्रहण, मानसिक, मूल्यांकन, परीक्षण और स्वीकरण होते हैं। इन अभिनव परिवर्तनों के वितरण की सामाजिक प्रक्रिया में पांच प्रकार-प्रयोगधर्मी, अग्रगामी, अग्रबहुमत, विलंबित बहुमत और विलंबी-के समाजों का उल्लेख किया जाता है। किसी भी राष्ट्र के आर्थिक विकास में समाज की आर्थिक उत्पादकता में वृद्धि समाहित है और योजनाबद्ध विकास का लक्ष्य जन संसाधन के विकास में निहित है। अतः जनसंचार माध्यम, कृषि, स्वास्थ्य, औपचारिक शिक्षा एवं अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट अभियानों का आधार निर्धारित करते हैं।

#### 3.2.1 जनसंचारपरक शोध की स्थिति

जनसंचार माध्यम तीन दृष्टियों से प्रभावी होते हैं -

क जनसंचार: एक सामाजिक संस्था

ख प्रभाव की परिस्थितियां

ग प्रभाव का साक्ष्य और प्रकृति

आजकल समाज में हो रहे परिवर्तन के संबंध में परिमाणात्मक शोध (क्वांटिटिव रिसर्च), परिवर्तनशील कारकों (वेरियेबल्स), गुणा (ट्रिव्युट्स) और आयामों (डायमेंशंस) का मिश्रित एवं व्यवस्थित अध्ययन के रूप में सामने आया है। इस प्रकार के शोध के लिए संचार वैज्ञानिकों ने कई प्रस्थापनाएं विभिन्न प्रकार के बाच अंतर-संबंधों की स्थापना एवं घटनाओं की व्याख्या की जाती है। इस शोध के परिणाम के रूप में डॉ.वाई.वी. लक्ष्मण राव के मतानुसार यह कहा जा सकता है कि देश के सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तनों में जनसंचार माध्यमों का सीधा होना होता है क्योंकि जनसंचार माध्यम जन-सामान्य को सूचना-विशेष से परिचित करता है। लोगों के अध्ययन परिवर्तन की आवश्यकता पर

केंद्रित रहता है तथा परिवर्तन के अवसरों एवं माध्यमों के विषय में अध्ययन कर लोगों की इच्छाओं एवं आकांक्षाओं को उद्वेलित करता है ।

सुबैया अरुणाचलम् के मतानुसार-इंटरनेट या कोई भी अन्य टेक्नॉलॉजी अपने साथ नई समस्याएं लेकर आती है । इतिहास गवाह है कि टेक्नॉलॉजी हमेशा विषमता को बढ़ाती है । उदाहरण के लिए भारत में विज्ञान अनुसंधान को ही लें । शोधकर्ताओं के लिए यह जानना जरूरी होता है कि दुनिया भर में क्या अनुसंधान चल रहा है और अन्य लोगों तक यह सूचना पहुंचाना भी जरूरी होता है कि वे खुद क्या कर रहे हैं । जानकारी ज्ञान की वृद्धि के लिए अनिवार्य है तथा जानकारी का प्रसार विज्ञानकर्म के लिए जरूरी है । जानकारी का प्रसार संचार माध्यमों के जरिए होता है । आजादी से पूर्व भारत में सी.वी.रमन, मेघनाद साह, जे.सी.बोस और एस.एन.बोस जैसे वैज्ञानिक विज्ञान से उत्तम कोटि का योगदान दे रहे थे । उस समय जानकारी के प्रसार का मुख्य माध्यम पत्रिकाएं थीं । उस समय शोध पत्रिकाएं भी बहुत कम थीं । जहां तक जानकारी का सवाल है, दुनिया भर के वैज्ञानिक लगभग एक ही स्तर पर होते थे । यह सही है कि अधिकांश शोध पत्रिकाएं यूरोप से प्रकाशित होती थीं । इसलिए रमन व अन्य भारतीय वैज्ञानिकों को ये पत्रिकाएं चंद महीने देरी से मिलती थीं । आज शोध पत्रिकाओं की तादाद बहुत ज्यादा बढ़ गई है और इनमें से कई पत्रिकाओं की कीमत बहुत ज्यादा है । इसलिए ये गरीब देशों के पुस्तकालयों की पहुंच से बाहर ही रहती हैं । ये पत्रिकाएं प्रायः निजी कम्पनियां प्रकाशित करती हैं ।

भारत में विज्ञान का सर्वोत्तम पुस्तकालय 'इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंसेज' का है । यहां 1562 शोध पत्रिकाएं मंगवाई जाती हैं । डीलर और पाउंड की विनिमय दर बढ़ते जाने के कारण भारत के विज्ञान पुस्तकालय पत्रिकाओं की संख्या कम करते जाने को विवश हैं । अफ्रीका में तो हालात और बदतर हैं । नाजीरिया के एक प्रोफेसर बताते हैं : 'जब आप हमें वैज्ञानिक कहते हैं, तो हमें हंसी आती है । हम जानते हैं कि हम अब विज्ञान में योगदान नहीं दे सकते । मुझे यही पता नहीं कि कीनिया या लंदन में मेरे साथी वैज्ञानिक क्या कर रहे हैं । ऐसे में मैं कोई मौलिक योगदान कैसे दे सकता हूँ ? यदि मैं अपने छात्रों को दस साल पुराने नोट्स से पढ़ाता हूँ तो मुझे वैज्ञानिक कहलाने का हक नहीं है । 'हमारे विश्वविद्यालय के कई लोगों को यही नहीं मालूम है कि विज्ञान की वर्तमान स्थिति क्या है । वैज्ञानिकों के पास जानकारी का स्रोत कई बार सिर्फ अखबार होते हैं । ऐसे लोगों से कैसे उम्मीद की जा सकती है कि वे आत्मविश्वास से भरपूर हों? संयुक्त राज्य अमरीका या यूरोप के विश्वविद्यालयों में 50-50 हजार पत्रिकाएं आती हैं ।

और अब स्थिति यह है कि कई सारी शोध पत्रिकाओं व अन्य सेवाओं ने इलेक्ट्रॉनिक शक्ल अपना ली है । आज अधिकांश वैज्ञानिक को नवीनतम जानकारी इंटरनेट पर मिलती है । इस तरह की कई इलेक्ट्रॉनिक सेवाएं मौजूद हैं । करंट कंटेंट्स कनेक्ट, साई फाइंडर, केमिकल एबस्ट्रेक्ट या वेब ऑफ साइंस जैसी कई सूचना सेवाएं वेब पर उपलब्ध हैं । परन्तु इनका उपयोग करने के लिए जितना शुल्क देना होता है, वह विकासशील देशों के अधिकांश विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों के लिए बहुत ज्यादा है । आजकल तो मौलिक शोधपत्र प्रकाशित करने वाली पत्रिकाएं भी साइंस डायरेक्ट नामक सेवा के जरिए वेब पर उपलब्ध होती हैं ।

मगर साइबर स्पेस (यानी इलेक्ट्रॉनिक नेटवर्क)से जानकारी प्राप्त करने के लिए अचल तो उपयुक्त टेक्नॉलॉजी होनी चाहिए । टेक्नॉलॉजी का प्रसार अक्सर धीमी गति से होता है । विकासशील

देशों के अधिकांश वैज्ञानिकों के पास आज नई सूचना टेक्नॉलॉजी उपलब्ध नहीं है। लिहाजा उनके प्रदर्शन पर इसका असर पड़ता है। हो सकता है कि उनमें से कई ठीक-ठाक भौतिक या रसायनशास्त्री हों, मगर उनके पास इलेक्ट्रॉनिक माध्यम सी.डी. रोम ऑनलाइन या वेब उपलब्ध नहीं होते। अतः उन्हें जरूरी जानकारी नहीं मिल पाती। स्थिति यह है कि सी.डी.रोम की जो संभावनाएं हैं, वे छपी हुई सामग्री में नहीं है तथा वेब की जो संभावनाएं हैं, वे सी.डी.रोम में नहीं हैं। इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में जानकारी का उपयोग करना सरल है और साथ ही दूर-दूर तक तेजी से जानकारी भेजी जा सकती है। विकासशील देशों की इक्का-दुक्का प्रयोगशालाओं के पास ही ऐसे जानकारी स्रोतों को वेब पर हासिल करने की क्षमता है। ऐसे वैज्ञानिक दुनिया में बराबरी से कैसे खड़े हो सकते हैं? अतः मुद्रित माध्यमों से इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों की ओर बदलाव के कारण खाई बढ़ने की आशंका है। इसके चलते हाशिए पर पड़े वैज्ञानिक और बाहर हो जाएंगे।

अधिकांश विकासशील देशों में कंप्यूटर टर्मिनल, नेटवर्क, बैंड विड्थ आदि जैसी बुनियादी सुविधाएं भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं हैं। इन सुविधाओं को उपयुक्त रूप में प्राप्त करने में अभी समय लगेगा। इसलिए सूचना के सृजन व प्रसार के विश्वस्तरीय उद्यम में बराबरी के भागीदार बनने में भी उन्हें समय लगेगा। लातिन अमरीका के सामुदायिक रेडियो पल्साल के भूतपूर्व निदेशक बस गिरार्ड के मुताबिक दुनिया के 95 प्रतिशत कंप्यूटर विकसित देशों में हैं। 10 विकसित देशों में, जहां दुनिया की आबादी का मात्र 20 प्रतिशत भाग निवास करता है, दुनिया की कुल टेलीफोन लाइनों में से 75 प्रतिशत है। भारत में 100 व्यक्तियों पर 1.5 टेलीफोन लाइन के हिसाब से टेली-घनत्व है। और इनमें से भी ज्यादातर टेलीफोन महानगरों में ही हैं। कई वैज्ञानिकों के पास डेस्क पर अपना टेलीफोन तक नहीं है। कई विश्वविद्यालयों में न तो इंटरनेट है और न ही ई-मेल (इलेक्ट्रॉनिक डाक)। कई विश्वविद्यालयों में कनेक्शन है मगर बहुत कम क्षमता के। इनकी वैंडविड्थ इतनी कम है कि ईमेल भेजने-पाने का काम तो हो सकता है, मगर इंटरनेट पर मनचाही जानकारी की तलाश नहीं की जा सकती। तथ्य यह है कि जानकारी का यह महामार्ग सब लोगों को बराबरी से उपलब्ध नहीं है। विकासशील देशों में ऐसे लोगों की तादाद बहुत ज्यादा है जिन्हें सूचना क्रांति ने छुआ तक नहीं है।

आजकल बहुत सारी शोध पत्रिकाएं शोधकर्ताओं से पांडुलिपि ईमेल पर ही प्राप्त करती हैं। वे इनकी समीक्षा भी ई-मेल पर ही करवाती हैं। कई पत्रिकाएं इलेक्ट्रॉनिक शकल में ही उपलब्ध हैं। ऐसी पत्रिकाओं के संपादक रेफरी के रूप में विकासशील देशों के वैज्ञानिकों को नियुक्त करने से कतराते हैं, क्योंकि उनसे संपर्क करना बहुत मुश्किल होता है। और कई सारे वैज्ञानिक इन इलेक्ट्रॉनिकरूप पत्रिकाओं में शोध पत्र प्रकाशित भी नहीं करवा पाते।

राष्ट्र संघ संचार सुविधाओं की गैर बराबरी को लेकर काफी चिंतित है। राष्ट्र संघ समन्वय प्रशासनिक समिति ने 1997 में एक वक्तव्य जारी किया था। इसका संबंध बुनियादी संचार व सूचना सेवाओं की सार्वभौमिक उपलब्धता से था। वक्तव्य में कहा गया था : 'हम सूचना व संचार के क्षेत्र में पहुंच संसाधनों अवसरों की बढ़ती असमानता को लेकर बहुत चिंतित हैं। औद्योगिक विकासशील देशों के बीच सूचना टेक्नॉलॉजी की खाई और इससे संबंधित विषमताएं बढ़ती जा रही हैं। एक नए किस्म की गरीबी-सूचना टेक्नॉलॉजी की खाई और इससे संबंधित विषमताएं बढ़ती जा रही हैं। एक नए किस्म की गरीबी-सूचना की गरीबी-हावी हो रही है'। अधिकतर विकासशील देश संचार क्रांति में भागीदार नहीं हैं, क्योंकि उनके पास अनेक चीजों का अभाव है -



ई-मेल व इंटरनेट से युक्त संस्थानों और व्यक्तियों की वर्तमान संख्या तथा उसमें वृद्धि की धीमी रफ्तार से इस बात की पुष्टि होती है। जैसे-जैसे इलेक्ट्रॉनिक प्रकाशनों में वृद्धि होगी, वैसे-वैसे विकसित देशों के वैज्ञानिक और भी तेजी से परस्पर सम्पर्क कर पाएंगे। मेरी प्रमुख चिंता यह है कि इसके चलते हमारे वैज्ञानिक अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक विचार-विमर्श से अलग-थलग पड़ जाएंगे। यह विचार-विमर्श ज्ञान की प्रगति के लिए अनिवार्य है। आज जब अधिकांश प्रकाशन मुद्रित रूप में होता है, तब भी भारतीय वैज्ञानिकों के पर्चे असरदार पत्रिकाओं में बहुत कम छपते हैं। इलेक्ट्रॉनिक प्रकाशनों के चलते यह खाई और बढ़ेगी। परिणामस्वरूप प्रतिभा-पलायन भी बढ़ सकता है और ज्ञान का साम्राज्यवाद भी हावी हो सकता है।

व्यक्तिगत प्रयासों के आगे जाकर जरूरत व्यवस्थित रख संगठित किए जाने की है। जितनी जल्दी हो सके संस्थानों को उपग्रह-आधारित इंटरनेट सुविधा उपलब्ध कराई जानी चाहिए। यह सस्ती दरों पर उपलब्ध हो तथा खास तौर पर से डेटाबेस व पत्रिकाएं कम कीमत पर मिल सकें। अभी जो कुछ चल रहा है, व संतोषजनक नहीं है। मसलन भारत इतना खर्च तो आसानी से वहन कर सकता है कि 100 शहरों में इंटरनेट व्यवस्था बन जाए। ये वे शहर होंगे, जहां हमारी अधिकांश प्रयोगशालाएं हैं।

जनसंचार ही आज विकास है तथा विल्वर श्राम के कथनानुसार जनसंचार माध्यम संसार का नक्शा बदल सकते हैं तो इस जनसंचार माध्यम की भूमिका विकास कार्यों में निर्दिष्ट की जा सकती है। देश में राष्ट्रीय विकास की सूचना देना, परिवर्तन की आवश्यकता पर लोगों का ध्यान केंद्रित करना तथा परिवर्तन के अवसरों और माध्यमों के संबंध में आम लोगों को बताकर उनमें वैसी इच्छा पैदा करना जन माध्यमों का काम हो सकता है।

जनसंचार माध्यम वर्तमान सेटेलाइट युग में आज अधिक से अधिक लोगों तक सूचना पहुंचाने तथा विकास के क्षेत्र में नए निर्णय लेने की दशा में बहुत ही महत्वपूर्ण है। से आज की तीसरे विश्व की विकासात्मक प्रगति में सहयोगी सामयिक घटनाओं का विश्लेषण प्रस्तुत करते हैं।

### 3.2.2 जनसंचार माध्यम के रूप

जनसंचार यांत्रिक और यंत्रचालित होता है। इसके निम्नलिखित रूप हैं :

- अ - मुद्रित माध्यम
- |                        |               |
|------------------------|---------------|
| (क) समाचारपत्र         | (ख) पत्रिकाएं |
| (ग) वार्षिक प्रतिवेदन  |               |
| (घ) अन्य               |               |
| 1 गृह पत्रिका          | 2 ब्रोशर्स    |
| 3 हैंड आउट्स           | 4 फोल्डर्स    |
| 5 अन्य मुद्रित सामग्री |               |
- आ - इलाक्ट्रॉनिक माध्यम
- |            |              |
|------------|--------------|
| (च) रेडियो | (छ) टेलीविजन |
| (ज) फिल्म  | (झ) अन्य     |
- इ अन्य जनसंचार माध्यम

(प) प्रदर्शनी	(फ) जनसंपर्क
(ब) विज्ञापन	(भ) लोक माध्यम
1 लोक गीत एव नृत्य	3 मेलेतमाशे -
2 लोक नाट्य	4 लोकोत्सव

### 3.2.2.1 मुद्रित माध्यम

मुद्रित माध्यम का नाम लेते ही हमारे समक्ष पत्र-पत्रिकाएं तथा पुस्तकाकार रूप में मुद्रित एवं प्रसारित सामग्री आती है। जनसंचार के क्षेत्र में पत्रकारिता का मुद्रित रूप मुद्रण यंत्रों के विकास के साथ ही आरंभ हो जाता है। मुद्रित माध्यम के रूप में सावधि समाचारपत्रों-दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक, अर्द्धवार्षिक, वार्षिक पत्र-पत्रिकाओं के अतिरिक्त विभिन्न संस्थानों के वार्षिक प्रगति-प्रतिवेदन एवं गृह पत्रिकाएं आदि तो हैं लेकिन इनके अतिरिक्त जनसंचार योग्य मुद्रित सामग्री में ब्रॉशर्स, फोल्डर्स, हैंडआउट्स, पोस्टर्स आदि भी सम्मिलित हैं।

### 3.2.2.2 इलाक्ट्रॉय माध्यम

इलाक्ट्रॉय माध्यम का आधार इलेक्ट्रॉनिक यंत्र है। ऐसे यंत्र जनसंचार के क्षेत्र में अपनी विशेष भूमिका रखते हैं क्योंकि अंतर्व्यक्तिक और समूह संचार की स्थिति में एवं सीम्स से निकल कर संचार अपने व्यापक क्षेत्र में प्रवेश करता है जहां दर्शक या श्रोता संदेशदाता के निकट नहीं होते अपितु दूरस्थ होते हैं तथा वे कई अवसरों पर दल के दल उसके पास समूह में नहीं होते हैं, वे खेतों, खलिहानों, जंगलों, घरों, उद्योग-धंधों में व्यस्त होते हैं। अतः इलाक्ट्रॉय माध्यम के रूप रेडियो, टेलीविजन, फिल्म, ओडियो-विजुअल आदि के रूप में प्रयोग किए जाकर उनके पास अपना संदेश पहुंचाने की व्यवस्था की जाती है।

#### 3.2.2.2.1 रेडियो

इलाक्ट्रॉय माध्यम के रूप में रेडियो सर्वाधिक प्राचीन जनसंचार माध्यम है। इसमें भी जन संबोधन उपकरण (पब्लिक एड्रेस इक्विपमेंट्स)की भांति श्रोताओं के समक्ष पहुंचाने की सक्षमता है। भारत जैसे विकासशील देश में जहां अभी तक मुद्रित माध्यम (समाचार पत्र आदि)की पहुंच नहीं हो पाई है और अधिसंख्य क्षेत्र साक्षर नहीं हो सके हैं, वहां रेडियो माध्यम की पहुंच बहुत व्यापक रही है। ट्रांजिस्टर क्रांति के आते ही यह जनसंचार माध्यम सर्व-सुलभ हो गया है। इसके लिए श्रोता का साक्षर होना आवश्यक नहीं है। अतः अशिक्षित क्षेत्र की जनता के लिए भी इस माध्यम की उपयोगिता स्वयंसिद्ध है।

#### 3.2.2.2.2 टेलीविजन

जनसंचार के स्तर पर इलाक्ट्रॉय माध्यम के रूप में दूसरा महत्वपूर्ण माध्यम टेलीविजन है। यह माध्यम अपेक्षाकृत अधिक मूल्य रखता है और सर्वसुलभ नहीं है लेकिन इसकी विशेषता यह है कि यह सचित्र माध्यम है, स्वर या ध्वनि आधारित होकर भी संदेशवाहक का चित्र भी साथ आता है। अतः यह जनसंचार का लोकप्रिय माध्यम है। यह दृश्य एवं श्रव्य माध्यम के रूप में ऐसी क्रांति है जिसने प्रत्येक विशिष्ट और आम जन जीवन को सर्वाधिक प्रभावित किया है। हमारे देश में पिछले

दो दशकों में टेलीविजन का बड़ी तेजी से विकास हुआ है। यह कहा जा सकता है कि टेलीविजन ने जनमानस तक सूचना या संदेश तथा जनमत निर्धारण में अपनी क्रांतिकारी भूमिका निर्वाह की है। आज देश के अनिश्चित जीविकोपार्जन के साधनों पर जीवनयापन करने वाली जनसंख्या के अतिरिक्त समस्त जनता के शयनकक्ष या सार्वजनोपयोगी कक्ष तक अपनी पहुंच बना ली है। यह शिक्षा, राष्ट्रीय विकास, जन मनोरंजन तथा सामाजिक चेतना जगाने का महत्वपूर्ण माध्यम सिद्ध हुआ है।

### 3.2.2.2.3 फिल्म

टेलीविजन की भांति फिल्म भी दृश्य एवं श्रव्य के रूप में जनसंचार का अत्यंत महत्वपूर्ण माध्यम है। इस माध्यम की विशेषता यह है कि इसमें प्रकाश, ध्वनि, रंग एवं दृश्य का प्रयोग कर युवा-वृद्ध, स्त्री-पुरुष, बालक- किशोर, शिक्षित-अशिक्षित, निर्धन- धनी, कृषक-मजदूर सभी वर्गों की प्रशंसा प्राप्त की है तथा उनका मनोरंजन करके उन्हें संमोहित किया है। टेलीविजन पर भी इतना कुछ उपलब्ध होने के साथ ही टेलीविजन से अधिक महत्व इस जनसंचार माध्यम को इसलिए मिला है कि इसका पर्दा टेलीविजन पर्दे से कहीं अधिक बड़ा है।

इसमें विवाद नहीं हो सकता कि फिल्मों केवल मनोरंजन का साधन ही नहीं हैं, अपितु वह शिक्षा, सामाजिक चेतना, आर्थिक विकास के विभिन्न कार्यक्रमों के साथ राष्ट्रीय एकता के लिए उपयुक्त सामाजिक कुरीतियों के निवारण के लिए एक सशक्त साधन भी हैं। अंतर्राष्ट्रीय बंधुत्व के विकास में भी फिल्मों की भूमिका विशेष है। आजकल ऑडियो (श्रव्य) और वीडियो (दृश्य) माध्यमों की भूमिका भी कम नहीं मानी जा सकती है।

### 3.2.2.2.4 अन्य जनसंचार माध्यम

जनसंचार के अन्य माध्यमों के रूप में यह उल्लेख करना भी आवश्यक है कि अपने-अपने क्षेत्र में प्रदर्शनी, जनसंपर्क, विज्ञापन आदि का महत्व कम नहीं आंका जा सकता है। ठीक उसी प्रकार ये सभी माध्यम आधुनिक वैज्ञानिक विकास की देन के रूप में स्वीकार किए जा सकते हैं लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि हमारे देश में जनसंचार माध्यम इस वैज्ञानिक युग की देन से पूर्व प्रचलन में ही नहीं थे। लोक जनसंचार माध्यम के रूप में लोक जीवन में अनेक माध्यम आज भी सामाजिक जीवन से अलग नहीं हो सके हैं। लोक जनसंचार माध्यम के रूप में लोकनृत्य, लोक नाट्य, मेले- तमाशे, लोकोत्सव आदि लोक जीवन की जीवंत विधाएं हैं तथा उनकी सफलता असंदिग्ध और अत्यधिक सफल है। एक बार ये आधुनिक वैज्ञानिक स्तर के जनसंचार माध्यम असफल हो सकते हैं, लेकिन लोक माध्यम के विविध प्रचलित रूप बाढ़, सूखा, भूकंप, सामाजिक विघटन के विविध स्तरों पर भी अपनी लोकप्रियता और उपयोगिता को सार्वजनिक बनाते हैं।

### 3.2.3 जनसंचार माध्यमों की परिवर्तनकारी भूमिका

जनसंचार माध्यम का उद्देश्य जहां सूचना करना, परिवर्तन के लिए इच्छा उत्पन्न करना तथा प्रबलतम समर्थन देकर नई व्यवस्था के प्रति पर्याप्त जनमत निर्माण करने में अपनी भूमिका निर्धारित करना है, वही जनसंचार माध्यम सामाजिक व्यवस्था में भी अपनी भूमिका की महत्ता स्थापित करता है। जनसंचार माध्यम की शोधपरक दृष्टि कहीं परिवर्तनापेक्षी भी सिद्ध होती है। यह कहना अन्यथा

नहीं है कि आधुनिक राजनीतिक, आर्थिक एवं अन्य क्षेत्रों के साथ सामाजिक विकास की प्रक्रिया में जनसंचार माध्यम अपनी छवि और स्थान निर्धारित कर चुके हैं ।

#### **बोध प्रश्न- 1**

1. जनसंचार और जनसंचार माध्यम का आशय स्पष्ट कीजिए ।
2. जनसंचार माध्यम का संगठित रूप कैसा होता है?
3. जनसंचार माध्यम की विकासात्मक भूमिका स्पष्ट कीजिए ।
4. जनसंचारपरक शोध की स्थिति स्पष्ट कीजिए ।
5. जनसंचार माध्यमों का परिचय दीजिए ।

---

### **3.3. सामाजिक परिवर्तन: अर्थ एवं प्रतिमान**

---

#### **3.3.1 सामाजिक परिवर्तन का अर्थ**

सामाजिक परिवर्तन शब्द में सामाजिक परिवर्तन का विशेषण है और परिवर्तन स्वयं विशेष्य। सामान्यतः परिवर्तन का अर्थ किसी भी निश्चित दिशा में प्रवहमान किसी क्रिया अथवा किसी भौतिक अथवा अभौतिक तत्व के किसी पक्ष में विचलन से लिया जाता है । समाजशास्त्री फीचर की मान्यता है कि परिवर्तन पहले की अवस्था या अस्तित्व के प्रकार में अंतर को कहते हैं ।

सामाजिक परिवर्तन का अर्थ मैकाइवर एव पेज के अनुसार - 'सामाजिक संबंधों में होने वाले परिवर्तन को ही सामाजिक परिवर्तन कहते हैं ।' जबकि किंग्सले डेविस का कहना है कि- 'सामाजिक परिवर्तन से हम केवल उन्हीं परिवर्तनों को समझते हैं जो सामाजिक संगठन अर्थात् समाज के ढांचे और प्रकार्यों में घटित होते हैं । जैनसन का विचार है कि सामाजिक परिवर्तन को लोगो के कार्य करने और विचार करने के तरीकों में होने वाले रूपांतरण के रूप में परिभाषित किया जा सकता है । जॉनसन ने उसे अपने मूल अर्थ सामाजिक ढांचे में परिवर्तन से माना है ।

परिभाषाएं और भी अनेक विद्वानों ने दी है, परन्तु सही अर्थों में सामाजिक परिवर्तन उसे कहा जा सकता है जो सामाजिक प्रक्रियाओं, सामाजिक संगठन के किसी भाग में होने वाले संशोधनों में व्यक्त होता है ।

#### **3.3.2 सामाजिक परिवर्तन के प्रतिमान**

सामाजिक परिवर्तन का स्वरूप भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में भिन्नता लिए हुए हो सकता है और यह स्वाभाविक भी है । सामाजिक परिवर्तन निरंतर बहु दिशागामी और पूर्वानुमान रहित प्रक्रिया है । मैकाइवर एंक्वेज ने सामाजिक परिवर्तन के तीन प्रतिमान बताए हैं -

1. प्रथम प्रतिमान - रेखीय परिवर्तन
2. द्वितीय प्रतिमान - ऊर्ध्व-अध वाला परिवर्तन
3. तृतीय प्रतिमान - चक्रीय परिवर्तन

#### **रेखीय परिवर्तन प्रतिमान**

कभी-कभी अचानक परिवर्तन और नवीन परिवर्तन होने तक निरंतरता में होने वाले प्रतिमान परिवर्तन को रेखीय परिवर्तन कहा जाता है । क्योंकि ये परिवर्तन किसी एक दिशा या रेखा में ही होते

हैं तथा मानव के बौद्धिक विकास का परिणाम होते हैं और ये सामाजिक परिवर्तन को एक निश्चित पूर्व निर्धारित रूप में देखते हैं। प्रौद्योगिकी (तकनीकी) परिवर्तन इसी कोटि में आते हैं।

### ऊर्ध्व-अध परिवर्तन प्रतिमान

द्वितीय प्रतिमान ऊर्ध्व-अध यानि उतार-चढ़ाव वाले परिवर्तन आते हैं, जिसके अंतर्गत सामाजिक परिवर्तन की दशा प्रतिगामी या ऊर्ध्व होती है तो कभी उसकी दशा उलटी अथवा अध होती है और हासोन्मुखी दिखाई देती है। जनसंख्या संबंधी परिवर्तन या आर्थिक क्रियाओं के परिवर्तन इस कोटि में लिए जा सकते हैं। राष्ट्रीय रख अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की दिशा ऊर्ध्वगामी भी हो सकती है तो कभी अधोगामी। सदैव निश्चित दिशा नहीं हो सकती जबकि प्रथम प्रतिमान में दिशा एक ही दिशा में होती है।

### चक्रीय परिवर्तन प्रतिमान

सामाजिक परिवर्तन का यह तृतीय प्रतिमान चक्रीय कहा गया है। जिस प्रकार सर्दी-गर्मी-वर्षा का एक क्रम चलता है अथवा रात-दिन, दिन-रात के परिवर्तन का क्रम निरंतर है, उसी प्रकार मानवीय क्रियाएं, राजनीतिक आंदोलन, सामाजिक मूल्य, अलंकरण, सौंदर्य प्रसाधन, वस्त्र आदि के प्रतिमानों में एक के बाद दूसरा, फिर तीसरा फिर पुनः क्रम आता है तो उसी प्रकार सामाजिक परिवर्तन भी चक्रीय रूप में परिचालित होते हैं।

### 3.3.3 सामाजिक परिवर्तन एवं सांस्कृतिक परिवर्तन

सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तनों को एक मान लिया जाता है लेकिन दोनों में भिन्नता है। सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन की भिन्नता कि पीछे यह देख लेना जनसंचारकर्मी के लिए अत्यंत उपयुक्त होगा कि जब 'समाज' और 'संस्कृति' दो भिन्न प्रत्यय हैं तो दोनों के परिवर्तन एक कैसे हो सकते हैं। समाजशास्त्री गिलन ने सामाजिक परिवर्तन के लिए सांस्कृतिक आधार ही स्वीकार किए हैं तो मैरिल एवं एल्ड्रिन ने उसे "मानवीय क्रियाओं में परिवर्तन" कहा है।

*वास्तविकता यह है कि समाज में होने वाले परिवर्तन को संस्कृति का परिवर्तन कहना उचित नहीं है। समाज का निर्माण सामाजिक संबंधों से होता है जबकि संस्कृति का निर्माण मानव निर्मित भौतिक वस्तुओं या तथ्यों से होता है। संस्कृति के दो पक्ष होते हैं - भौतिक और अभौतिक जिसमें से दूसरे पक्ष देखा या छुआ नहीं जा सकता, केवल अनुभव किया जा सकता है। पर इतना अवश्य है कि सामाजिक परिवर्तन संस्कृति के इसी अभौतिक पक्ष से ही संबंधित है जबकि सांस्कृतिक परिवर्तन संस्कृति के दोनों ही भौतिक एवं अभौतिक से संबंधित है।*

यह भी ध्यान रखने योग्य है कि सांस्कृतिक परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन की तुलना में अधिक व्यापक है। इसी को लक्ष्य करते हुए पारसन्स ने कहा है कि 'सांस्कृतिक परिवर्तन का संबंध विभिन्न मूल्यों, विचारों और प्रतीकात्मक अर्थपूर्ण व्यवस्थाओं में परिवर्तन से है जबकि सामाजिक परिवर्तन का संबंध व्यक्ति और समाज के बीच होने वाली अंत- क्रियाओं में परिवर्तन से हैं।

उसमें संदेह नहीं कि संस्कृति में परिवर्तन होने पर सामाजिक परिवर्तन भी होते हैं और सामाजिक परिवर्तन होने पर संस्कृति में भी परिवर्तन आता है। पर यह कहा जा सकता है कि सामाजिक

परिवर्तन प्राकृतिक कारणों तथा जानबूझकर किए गए प्रयत्नों के कारण उत्पन्न होते हैं, सांस्कृतिक परिवर्तन नियोजित प्रयत्नों के कारण उत्पन्न होते हैं ।

### 3.3.4 सामाजिक परिवर्तन के कारक

सामाजिक परिवर्तन के दस कारक माने जाते हैं ।

1. जनसंख्यात्मक
2. प्रौद्योगिकीय
3. सांस्कृतिक
4. प्राकृतिक या भौगोलिक
5. प्राणिशास्त्रीय या जैविकीय
6. आर्थिक
7. राजनीतिक
8. मनोवैज्ञानिक
9. वैचारिक
10. महापुरुषों की भूमिका

#### 1. जनसंख्यात्मक कारक

सामाजिक परिवर्तन के लिए जनसंख्यात्मक कारक सर्वाधिक उत्तरदायी हैं । किसी समाज की जनसंख्या उसकी सामाजिक व्यवस्था और सामाजिक संगठन को किसी न किसी रूप में प्रभावित करती है । उदाहरण के लिए यह कहा जा सकता है कि जिस देश की जनसंख्या कम होगी, वहां के समाज का जीवन स्तर अपेक्षाकृत उच्च होगा और जैसे ही जनसंख्या की वृद्धि होती जाएगी वैसे ही निर्धनता में भी वृद्धि होती जाएगी ।

यही नहीं, जनसंख्या वृद्धि के साथ समाज में जन्म और मृत्यु दरें भी सामाजिक परिवर्तन को प्रभावित करती हैं । सामाजिक परिवर्तन को जनसंख्यात्मक कारक के स्तर पर पारगमन (माइग्रेशन)भी प्रभावित करता है । यही नहीं जनसंख्यात्मक संरचना को प्रभावित करना और सामाजिक परिवर्तन की बाध्यता आयु की बहुलता, सी- पुरुष अनुपात और वैवाहिक प्रथा पर भी निर्भर करती है।

#### 2. प्रौद्योगिकीय कारक

आधुनिक युग में सामाजिक परिवर्तन का एक प्रमुख कारक प्रौद्योगिकीय विकास है । कार्लमार्क्स का कहना है कि प्रौद्योगिकी प्रकृति के साथ मनुष्य के व्यवहार करने के ढंग और उत्पादन की प्रक्रिया व्यक्त करती है, जिसके द्वारा मनुष्य अपना जीवन पोषित करता है, सामाजिक संबंधों की रचना करता है तथा उन संबंधों से उत्पन्न मानसिक धारणाओं की व्यवस्था करता है ।

प्रौद्योगिकी सामाजिक जीवन पर प्रभाव डालती है । परिणामस्वरूप व्यक्तिवादिता, सामुदायिक जीवन का ह्रास, आवासीय व्यवस्था का अभाव, स्त्री-पुरुष में आनुपातिक असमानता, संघर्ष एव प्रतिस्पर्धा का विकास एव मानसिक रोग, मनोरंजन का व्यवसायकरण बढ़ जाता है ।

#### 3. सांस्कृतिक कारक

सामाजिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण कारक सांस्कृतिक परिवर्तन भी है । किसी देश की संस्कृति उसके सामाजिक जीवन का अभिन्न अंग है । बिना संस्कृति के किसी समाज की कल्पना नहीं की जा सकती । अतः संस्कृति के किसी भी अंग में परिवर्तन आने से उस समाज में भी परिवर्तन आना स्वाभाविक है । सांस्कृतिक परिवर्तन के स्तर पर संस्कृति के असंतुलन, भौतिकवादी तता की प्रधानता, प्रौद्योगिकीय विकास या प्रतिरोध, स्वार्थपूरित अवरोध सांस्कृतिक संघर्ष, पर संस्कृति का आयात आदि महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं ।

#### 4. प्राकृतिक या भौगोलिक कारक

सामाजिक परिवर्तन के लिए उत्तरदायी प्राकृतिक या भौगोलिक कारक-भूकम्प, बाढ़, अकाल, महामारी आदि होते हैं। जहां प्रकृति का प्रकोप प्रभावी न होता हो, वहां वैज्ञानिक विकास और नवीन निर्माण भी सामाजिक परिवर्तन में सहायक होते हैं। भौगोलिक स्तर पर किसी देश की जलवायु सभ्यता और संस्कृति भी सामाजिक परिवर्तन की बाध्यता निर्धारित करती है क्योंकि प्राकृतिक आपदाओं के कारण व्यक्ति नए स्थान पर जाता है और धीरे-धीरे उस स्थान के रीति-रिवाज, प्रथाएं, मूल्य, आदर्श आदि अपना लेता है जिससे उसकी सामाजिक संरचना में परिवर्तन हो जाता है।

#### 5. प्राणिशास्त्रीय या जैविकीय कारक

सामाजिक परिवर्तन का कारक प्राणिशास्त्रीय भी है, जो जनसंख्या के प्रकार निर्धारण करते हैं। व्यक्तियों के स्वास्थ्य, शारीरिक एवं मानसिक क्षमता, वैवाहिक आयु, प्रजनन-दर, कद, शारीरिक गठन आदि सभी जैविकीय कारकों से संबंधित है। किसी समाज के लोगों की औसत आयु कम है तो वहां विधवा विवाह के रूप में सामाजिक परिवर्तन आ सकता है और स्त्री की परिस्थिति एवं संतान की शिक्षा आदि भी प्रभावित हो सकती है। इसी प्रकार अंतःजातीय विवाह से प्रतिभाशाली संतान उत्पन्न होती है तथा प्राणिशास्त्रीय दृष्टि से श्रेष्ठ सामाजिक उन्नति प्राप्त कर सकते हैं तथा इसके विपरीत स्थिति होने पर समाज अवनति प्राप्त कर सकता है।

#### 6. आर्थिक कारक

सामाजिक परिवर्तन के लिए आर्थिक कारकों को कार्लमार्क्स सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानते हैं। उनकी मान्यता है कि प्रत्येक समाज में दो वर्ग पूंजीपति और श्रमिक होते हैं और ये वर्ग उत्पादन के साधनों एवं सम्पत्ति पर अधिकार की दृष्टि से हैं। इन दोनों वर्गों में सदैव संघर्ष होता है। वर्ग-संघर्ष एक समाज व्यवस्था को समाप्त कर दूसरी सामाजिक व्यवस्था को जन्म देता है।

किसी भी समाज में विवाह, आवास, स्वास्थ्य, जनसंख्या, विवाह विच्छेद, बेकारी, गरीबी, आत्महत्या, मद्यपान का संबंध आर्थिक स्थिति से होता है। राजनीतिक परिवर्तन, आतंक, क्रांति आदि के जन्म का कारण भी आर्थिक परिस्थितियां होती हैं। इसके अतिरिक्त सम्पत्ति का वितरण, लोगों का जीवन स्तर, वर्ग-संघर्ष, उत्पादन, व्यापार आदि सामाजिक संरचना को प्रभावित करते हैं। अतः समाज की आर्थिक संरचना भी सामाजिक परिवर्तन का कारक सिद्ध होती है।

#### 7. राजनीतिक कारक

सांस्कृतिक कारकों की भांति राजनीतिक कारक भी सामाजिक परिवर्तन के लिए उत्तरदायी होते हैं। इतिहास साक्षी है कि जब-जब सत्ता में परिवर्तन हुआ है तो उसके अनुसार समाज में भी अनेक परिवर्तन हुए हैं। प्रत्येक राजनीतिक दल अपनी नीतियों के अनुसार समाज में परिवर्तन का उत्तरदायी होता है। अंग्रेजों की दासता से मुक्ति के बाद लोकतंत्रीय भारत में छुआछूत की समाप्ति, दास प्रथा की समाप्ति, बैंकों का राष्ट्रीयकरण, आरक्षण, राजाओं के अधिकारों की समाप्ति, जमींदारी उन्मूलन आदि ने अनेक सामाजिक परिवर्तन किए हैं।

क्रांतियों और युद्ध के पीछे भी राजनीतिक कारण होते हैं और सामाजिक परिवर्तन को प्रभावित करते हैं। युद्ध या क्रांति में मारे गए लोगों की स्त्रियां और बच्चे, बूढ़े दूसरों स्थानों पर जाकर शरणार्थी

बनकर पहुंचते हैं और धीरे-धीरे वहां की संस्कृति अपना लेते हैं। इस प्रकार राजनीतिक कारक सामाजिक परिवर्तन के लिए उत्तरदायी होते हैं।

### 8. मनोवैज्ञानिक कारक

मनोविज्ञान मानव व्यवहारों का अध्ययन करता है। माना जाता है कि व्यक्ति के सभी प्रकार के व्यवहारों से व्यक्ति प्रभावित होता है और सामाजिक स्तर पर परिवार प्रभावित होता है तथा धीरे-धीरे सामाजिक व्यवस्था में भी परिवर्तन आ जाता है। पारिवारिक विघटन या विवाह विच्छेद का कारण पति-पत्नी के मध्य समायोजन का अभाव ही होता है कि जो व्यक्ति के मानसिक तनाव, निराशा, संघर्ष आदि को जन्म देता है। आत्महत्या और हत्या जैसे जघन्य अपराध भी इसी मानसिक असंतुलन का परिणाम होते हैं। यह स्थिति धीरे-धीरे संपूर्ण समाज को प्रभावित करती है तथा सामाजिक परिवर्तन का कारण बन जाती है।

### 9. वैचारिक कारक

विचाराधारण भी सामाजिक परिवर्तन के लिए उत्तरदायी होती हैं। किसी समस्या के निराकरण के लिए समाज में रहने वाले विचारक अपने विचार प्रस्तुत करते हैं तथा वे समाज द्वारा मान्य हो जाते हैं। इस प्रकार सामाजिक संरचना में परिवर्तन का कारण सिद्ध होता है। विचारों में परिवर्तन के कारण ही समाज की प्रथाएं, कानून, रीति रिवाज भी परिवर्तित

हो जाते हैं। कई बार परस्पर विरोधी दो विचार भी समाज में सक्रिय होते हैं तो दोनों के मान्य होने पर संपूर्ण समाज दो भागों में बट जाता है तथा वे सामाजिक परिवर्तन लाते हैं।

### 10. महान लोगों की भूमिका

सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन का महत्वपूर्ण कारक समाज के महान लोगों की भूमिका होती है। सामाजिक क्रांतियां, आंदोलन आदि किसी न किसी महापुरुष के नेतृत्व के कारण ही हुए हैं। आरंभ में अछूतोद्धा, विधवा-विवाह, सती-प्रथा निवारण, पर्दाप्रथा आदि के लिए राजा राममोहन राय, ईश्वचंद्र विद्यासागर, केशवचंद्र सेन, स्वामी विवेकानंद, रामकृष्ण परमहंस, दयानंद सरस्वती आदि का योगदान रहा है। भारत की आजादी में महात्मा गांधी, मोतीलाल नेहरू, तिलक आदि की भूमिका भी महत्वपूर्ण कारक सिद्ध हुई है। इसी प्रकार जवाहरलाल नेहरू इंदिरा गांधी आदि की भूमिकाएं भी सामाजिक संरचना के परिवर्तन का कारक रही हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि सामाजिक परिवर्तन में उपर्युक्त सभी कारक अपनी महत्वपूर्ण भूमिका रखते हैं। अनेक कारकों के सम्मिलित योग से सामाजिक परिवर्तन की गति भी तीव्र हो जाती है।

### बोध प्रश्न-2

1. सामाजिक परिवर्तन का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
2. सामाजिक परिवर्तन के कितने प्रतिमान होते हैं?
3. सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन किसे कहते हैं?
4. सामाजिक परिवर्तनों के कारक बताइए।
5. टिप्पणी लिखिए-
  1. जनसंख्यात्मक कारक और समाज परिवर्तन
  2. राजनीतिक कारक और समाज परिवर्तन



## 3.4 सामाजिक परिवर्तन का स्वरूप

### 3.4.1 सामाजिक विकास के उपकरण

सामाजिक विकास के क्षेत्र में समाज विज्ञानी यह मानकर चलते हैं कि इस समय परंपरागत स्थिति का त्याग और नवीनता के प्रति सापेक्ष दृष्टि का विस्तार हुआ है। जनसंचार माध्यमों की सुगमता के कारण सामाजिक विकास के उपकरण के रूप में मानव के हाथ और मस्तिष्क की सक्रियता का विकास व्यापक ढंग से हुआ है। मानव अपने हाथों का उपयोग व्यवहार के व्यापक क्षेत्र में करता है। दूसरे शब्दों में मानव अपनी रक्षा के निमित्त पैरों का प्रयोग करके भागने का प्रयास नहीं करता अपितु अपने हाथ में रक्षार्थ अस्त्र ग्रहण करता है। इसी प्रकार मानव का मस्तिष्क भी उसके हाथों की अपेक्षा कम विलक्षण नहीं है क्योंकि वह मानव की योग्यता का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्रोत है, जो जटिल क्रियाओं का नियंत्रण एवं संचालन करता है।

सांस्कृतिक जीवन में मानव अपने आपको पूर्णतः डूबा हुआ पाता है। इसका एक छोटा धर्म है, दूसरा भाषण, संगोष्ठी, संगठन और प्रौद्योगिकी (टेक्नॉलॉजी) अन्य या तीसरा छोटा धर्म है। अतः मानव व्यवस्था के स्तर पर उन चारों की स्थिति वाले नवोन्मेष में 'चर' आरंभिक स्थिति में तटस्थ दृष्टि रखता है, पर परिवर्तनशीलता और शिक्षा के निरंतर विकासात्मक स्तर पर वह कतिपय सांस्कृतिक संचार (कल्चरल कम्यूनीकेशन) के कारण कतिपय परिवर्तनों के प्रति भी उन्मुख होता है।

### 3.4.3 सामाजिक परिवर्तन का स्वरूप

सामाजिक जीवन के विकास को समझने के लिए यह आवश्यक है कि सामाजिक परिवर्तन का स्वरूप समझा जाए। सामाजिक परिवर्तन के स्वरूप प्रायः निम्न बिन्दुओं पर आधारित रहता है-

1. संचार या आवागमन के साधन
2. आर्थिक सुविधाओं की उपलब्धता
3. वैज्ञानिक एवं तकनीकी शिक्षा का विस्तार
4. सांस्कृतिक एवं सामाजिक उत्थान के अवसर
5. यौन संबंधों की सुलभता और दांपत्य

**1. संचार या आवागमन के साधन-** सामाजिक स्वरूप को समझने के लिए यह पहली आवश्यकता है कि किसी समाज या ग्राम समाज या कस्बई स्तर पर संचार व्यवस्था क्या है। सामाजिक परिवर्तन का साधन एक विशेष प्रक्रिया में संचार या आवागमन के साधनों की उपलब्धता है। यदि आवागमन के साधन उपलब्ध हैं तो समाज विशेष का दूसरे समाज के साथ संपर्क होने से जीवन की गतिशीलता में वृद्धि की जा सकती है। अतः सड़क, रेल, फोन, रेडियो, समाचारपत्रादि विषयक सुविधाएं जहां जितनी सुगमता से उपलब्ध होंगी, सामाजिक परिवर्तन उतना ही अधिक सक्रियता के साथ वहां संभव होगा।

**2. आर्थिक सुविधाओं की उपलब्धता-** सामाजिक स्वरूप के परिवर्तन की दूसरी स्थिति उस समाज के नागरिकों या सदस्यों को आर्थिक सुविधाओं की उपलब्धता पर निर्भर करती है। अलग-अलग

समाज को इस दृष्टि से देखना अधिक आवश्यक है कि उसकी इकाई या सदस्यों के लिए अल्पतम आर्थिक सेवाएं किस स्तर पर उपलब्ध हैं। पेट भर अनाज और श्रम के अभाव में समाज के स्वरूप का निर्धारण नहीं किया जा सकता। ग्रामीण समाज में आर्थिक साधनों एवं सुविधाओं की वृद्धि से भले ही जीवन स्तर के परिवर्तन में तीव्र विकास दृष्टिगोचर न हो लेकिन पेट भरने और आर्थिक संसाधन जुटाने के लिए आर्वाजनकारी स्थितियों का अध्ययन किया जा सकता है कि ग्रामीण समाज इकाई से कितने लोग जीविकोपार्जन के लिए शहर की ओर पलायन करते हैं और उनमें क्या परिवर्तन आ रहे हैं।

**3. वैज्ञानिक एवं तकनीकी शिक्षा का विस्तार-** सामाजिक स्वरूप के परिवर्तन का अध्ययन करने के लिए यह देखना भी महत्वपूर्ण है कि किसी समाज में शिक्षा पद्धति की व्यवस्था कैसी है तथा उन्हें अपने ज्ञान विस्तार के लिए उचित वैज्ञानिक एवं तकनीकी शिक्षा उपलब्ध है। किसी समाज को सुगमता से वैज्ञानिक और तकनीकी शिक्षा का अवसर मिलता है तो समाज की युवा पीढ़ी में उस शिक्षा के प्रसार के परिणामस्वरूप अपने ज्ञान एवं कार्यकुशलता के विस्तार का भी अवसर मिलता है। अतः सामाजिक स्वरूप में परिवर्तन लाने के लिए ऐसी शिक्षा पद्धति लागू करना या रहना महत्वपूर्ण रखता है जो वैज्ञानिक तथा यांत्रिक ज्ञान द्वारा उन्नत कृषि, उन्नत कृषियंत्र, पशु नस्ल सुधार, ग्रामीण कला एवं शिल्प और स्थायी रूप से प्रचलित उद्यमों को समुन्नत बनाने में योग दे सके।

**4. सांस्कृतिक एवं सामाजिक उत्थान के अवसर-** सामाजिक स्वरूप के परिवर्तन के संबंध में चौथी महत्वपूर्ण स्थिति यह है कि सरकारी नीतियों का समाज के संदर्भ में कैसा योगदान है। यदि सरकारी नीति इस प्रकार विकसित की जाती है जो नगर और ग्राम की जनसंख्या के आधार पर उनके जीवन सुधार के अवसर जुटाती है तो उसके लिए यह भी देखने की अनिवार्यता है कि क्या वह नीति आर्थिक सुधारों के अतिरिक्त समाज विशेष के सांस्कृतिक एवं सामाजिक उत्थान के अवसर भी जुटाती है अथवा नहीं।

पारंपरिक समाज, अशिक्षा और संचार साधनों के अभाव में भारत के अनेक क्षेत्रों में सामाजिक स्वरूप में परिवर्तन मंद गति से हो रहा है। सामाजिक परिवर्तन जो गत पचास वर्षों में हुआ है, उसकी गतिशीलता इतनी महत्वपूर्ण उपलब्धि नहीं रही है। आज इस ओर ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है।

**5. यौन संबंधों की सुलभता और दांपत्य आरंभ में परिवार की संयुक्त इकाई के निर्माण में** यौनाकर्षण एवं यौन संबंधों की सुलभता तथा दांपत्य संबंधों की सहजता पर अधिक ध्यान दिया गया था। युवा वर्ग में परिवारों में आयोजित उत्सवों में एवं दूसरे के प्रति आकर्षण और विहित रूप में यौन संबंधों के विकास तथा दांपत्य संबंधों के निर्वाह में परिवार की इकाई का महत्व था। संतान के प्रति मोह के स्वाभाविक एवं मनोवैज्ञानिक कारण विद्यमान थे। कृषि आधारित अर्थतंत्र में सामूहिक श्रम का योगदान भी कृषकों के लिए संयुक्त परिवार की महत्ता स्थापित करता रहा है।

वैज्ञानिक उपकरणों के विकास और एकल परिवार की मानसिक स्थिति के परिणामस्वरूप यह परंपरा परिवर्तित हो चुकी है। अब विवाहित पुत्र अपने बच्चों के भरण-पोषण के लिए कटिबद्ध होकर न तो माता-पिता के साथ रहना पसंद करते हैं और न बच्चों के विद्यालय जाने या अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर पाने की क्षमता पा जाने के उपरांत संयुक्त परिवार में रहना पसंद करते हैं।

देश में कई जातियां ऐसी हैं, जहां विवाह निश्चित हो जाने पर युवक अपने युवा मित्रों के सहयोग से अपना नया घर या झोंपड़ी बनाता है और विवाहोपरांत वह नए घर में जाकर अपनी पत्नी के साथ रहने लगता है। अतः संयुक्त परिवार इकाई और समाज में परिवर्तन का कारण यौन संबंधों की सुलभता और दांपत्य निर्वाह भी है।

### 3.5 सामाजिक परिवर्तन और जनसंचार-

सामाजिक परिवर्तन या समाज में हो रही उथल-पुथल को सार्वजनिक में जनसंचार की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण है। जनसंचार (मास कम्यूनीकेशन) सामाजिक स्तर पर एक परिस्थिति से दूसरी परिस्थिति के संपर्क सूत्र जोड़ने और विशेष परिस्थितियों में सूत्र तोड़ने के लिए प्रेरक सिद्ध होते हैं। इसी कारण यह कहा जा सकता है कि समाज की संरचना में आए हुए किसी भी परिवर्तन के लिए जनसंचार के विभिन्न माध्यम अपनी भूमिका की महत्ता स्थापित करते हैं।

### 3.6 सारांश

जनसंचार ऐसी संचार व्यवस्था का रूप है जो यांत्रिक संचालन के साथ-साथ सामूहिक रूप से समाज की प्रत्येक इकाई की भूमिका लिए हुए है। समाज और जनसंचार एक दूसरे के पूरक हैं तभी तो सामाजिक एवं नागरिक चेतना के विकास में जनसंचार माध्यम अपना प्रभावी योगदान करते हैं। जनसंचार माध्यमों के विविध रूप सामाजिक संरचना को प्रभावित ही नहीं करते अपितु सामाजिक परिवर्तन के लिए भी उत्तरदायी होते हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति अछूतोद्धार आरक्षण आदि के संबंध में जनसंचार की भूमिका महत्वपूर्ण रही है तथा उससे नए समाज परिवेश की रचना भी हुई है।

### 3.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. वर्मा, वीरेन्द्र प्रकाश : समाजशास्त्र के सिद्धान्त
2. माथुर, जगदीशचंद्र : बहुजन हिताय माध्यम
3. कुलश्रेष्ठ, विजय : संचार पत्रकारिता, शिवा पब्लिकेशनर्स, उदयपुर

### 3.8 निबंधात्मक प्रश्न

1. सामाजिक परिवर्तन में जनसंचार माध्यमों की भूमिका पर विचार प्रकट कीजिए।
2. जनसंचार माध्यम सामाजिक परिवर्तन का विस्तार करते हैं- स्पष्ट कीजिए।
3. सांस्कृतिक नवोन्मेष और जनसंचार पर अपने विचार प्रकट कीजिए।
4. संक्षिप्त टिप्पणियां लिखिए।
  - अ. सामाजिक परिवर्तन के प्रतिमान
  - ब. सांस्कृतिक नवोन्मेष
  - स. जनसंचारपरक शोध स्थिति

---

## इकाई 4 जनसंचार माध्यम विशेषज्ञों के विशेष प्रतिवेदन मैकब्राइड प्रतिवेदन

---

### मैकब्राइड प्रतिवेदन

1977 में यूनेस्को ने विश्व के संचार-माध्यमों की समस्या का अध्ययन करने के लिए सीन मैकब्राइड की अध्यक्षता में अंतर्राष्ट्रीय आयोग नियुक्त किया था। सभी पहलुओं पर विचार कर आयोग ने 1979 के अंत में अपनी रपट दी थी। प्रस्तुत हैं रपट के मुख्य अंश

अंतर्राष्ट्रीय समाचारों के वर्तमान संप्रेषण के संबंध में आरोप और प्रत्यारोप लगाए जाते हैं। पश्चिमी प्रेस पर आरोप लगाया जाता है कि वह तीसरे विश्व उपद्रवों पर ही सारा जोर लगाता है, तो दूसरी ओर विकासशील देशों के बारे में आरोप लगाया जाता है कि वे समाचारों के स्रोतों पर नियंत्रण लगाते हैं। आखिर, इस समस्या का समाधान क्या है? संभवतः विश्व में एक नई सूचना-व्यवस्था की स्थापना करना। हमें भूलना न होगा कि इस बारे में भी पर्याप्त कठिनाइयां हैं।

विकासशील देशों की यह चिंता स्वाभाविक है कि संचार माध्यमों पर पश्चिमी देशों की अबाध प्रभुता बनी हुई है। यद्यपि इस समय विश्व भर में 120 के लगभग संवाद समितियां विद्यमान हैं, किंतु कुछ प्रमुख संस्थाएं ही जन शक्ति, साधन, सुविधाओं और तकनीक की दृष्टि से शेष सभी पर अपना प्रभुत्व हुए जमाए हैं। अधिकांश विकासशील देश अपने अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय प्रसारण के लिए चार प्रमुख संवाद समितियों-रायटर, एसोसिएटेड प्रेस, युनाइटेड प्रेस इन्टरनेशनल, एजेन्सी फ्रांस-और निगमीभूत कापी तथा समुद्रपारीय रेडियो स्रोतों से मिलने वाली सामग्री काफी होती है। संवाद-पीठ (या न्यूज डेस्क) पर इन चार बड़ी संवाद समितियों और सोवियत संवाद समिति 'तास' से मिलने वाले तीन लाख शब्दों की प्रतिदिन छानबीन करनी पड़ती है।

एक ओर कहा जाता है कि समाचारों की प्रामाणिकता तथा निष्पक्षता के कारण ही विश्व के अधिकांश अखबार इन संवाद समितियों के ग्राहक हैं, तो दूसरी ओर यह आरोप लगाया जाता है कि उनकी सेवाएं गुणवत्ता पर आश्रित न होकर साम्राज्यवाद की ऐतिहासिक परिस्थिति एवं तकनीकी श्रेष्ठता पर आधारित हैं। इन पश्चिमी संवाद समितियों के मुख्य संवादों का स्रोत औद्योगिक पश्चिम है, फलतः वे विकासशील विश्व को एक अपरिचित विदेशी वाणी के रूप में प्रतीत होते हैं। यदि 'काफी' की कीमतें अचानक बढ़ जाए तो पश्चिम की तथाकथित अन्तर्राष्ट्रीय भाषा में उसे 'काफी के संकट' के रूप में प्रचारित किया जाता है।

पश्चिम प्रचार-माध्यमों के बारे में केन्या 'वीकली रिव्यू' की यह टिप्पणी उल्लेखनीय है- संचार माध्यमों के द्वारा पश्चिमी जगत का जो प्रचार किया जाता है, उससे तीसरे विश्व की जनता में हीनता की गहरी भावना पैदा होती है। पश्चिमी प्रेस पर अभियोग लगाया जाता है कि वह सत्ता परिवर्तनों, उपद्रवों और छिछली राजनीतिक गतिविधियों पर ही अधिक ध्यान देता है। ऐसा करते हुए विकासशील देशों की महत्वपूर्ण समस्याओं-गरीबी, अशिक्षा, जनसंख्या में तीव्र वृद्धि, पूंजीनिवेश के सीमित साधनों-आदि की उपेक्षा करता है। जब पश्चिमी पत्रकार इन मुद्दों की चर्चा करते भी हैं तो वे पश्चिमी ऐनक के मापदंड से ही सफलता या विफलता का मूल्यांकन करते हैं। विकासशील देशों की मांग है कि उनके समाचार न केवल अधिक सहानुभूति से पेश किए जाएं, बल्कि उनके प्रस्तुतीकरण में किसी

तरह का नियंत्रण भी नहीं होना चाहिए। विश्व के संचार - माध्यमों एवं संवाद समितियों की क्या स्थिति होनी चाहिए, उनकी वर्तमान अवस्था कैसे बदली जाए, इस बारे में यूनेस्को (संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं संस्कृति संगठन) तथा तटस्थ राष्ट्रों के विभिन्न सम्मेलनों में चर्चा होती रही है। संचार माध्यमों की वर्तमान समस्याओं पर विचार करने के लिए यूनेस्को ने संचार माध्यमों के विशेषज्ञों की विभिन्न बैठकों का समय-समय पर आयोजन किया है। 1977 में यूनेस्को के तत्कालीन महानिदेशक अमाद मथार एम-बो ने जनसंचार की समस्याओं का अध्ययन करने के लिए आयरिश कूटनीतिज्ञ एवं नोबल पुरस्कार प्राप्त सीन मैकडब्राइड की अध्यक्षता में एक अंतर्राष्ट्रीय आयोग की स्थापना की है। 1979 के अंत में इस आयोग ने अपनी रपट दी। यहां इस आयोग की रपट के पांचवें भाग का सार-संक्षेप प्रस्तुत किया जा रहा है।

प्रस्तुत रपट में दिए गए सर्वेक्षण में संचार माध्यमों के संसाधनों एवं संभावनाओं के नाटकीय प्रसार का लेखा-जोख प्रस्तुत किया गया है। हमें देखना चाहिए कि चार माध्यम सत्ता के साधन, क्रांतिकारी शस्त्र व्यावसायिक उत्पादक शिक्षा के साधन बन सकते हैं तो उनका उपयोग मुक्ति या उत्पीड़न-दोनों के लिए अथवा व्यक्तित्व के लिए अथवा मानव समाज को अनुशासनबद्ध करने के लिए किया जाता है। प्रत्येक समाज को प्रगति के भौतिक, सामाजिक एवं राजनैतिक बाधक तत्वों के निवारण की सर्वोत्तम व्यवस्था का स्वतः निर्धारण करना होगा।

भावी विकास के लिए सिफारिशों का सारांश इस प्रकार है-

1. संचार माध्यमों के विश्वव्यापी स्वरूप का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि विभिन्न देशों ने अनेक परंपराओं, सामाजिक व्यवस्थाओं, आर्थिक एवं सांस्कृतिक जीवन, जरूरतों एवं संभावनाओं के आधार पर विविध प्रकार के समाधान खोजे हैं। यह विविधता महत्वपूर्ण है, इसकी सुरक्षा होनी चाहिए। इस सबके बावजूद इस अन्योन्याश्रित विश्व में सामान्य हितों पर आधारित व्यापक परिप्रेक्ष्य में सामान्य हितों और सामान्य मूल्यों का निर्धारण संभव है। शस्त्रात्रों की होड़ और अंतर्राष्ट्रीय विषमताओं को जबरन लादने के कारण सम्पूर्ण मानव जाति संकटग्रस्त है। इन दोनों ही अवस्थाओं के कारण संघर्ष बढ़ते हैं तथा मानव का भविष्य और अस्तित्व सकट में पड़ता जाता है। वर्तमान स्थिति का तकाजा है कि अधिक न्यायपूर्ण एवं अधिक प्रजातांत्रिक सामाजिक व्यवस्था बने और मौलिक बुनियादी अधिकार उपलब्ध हों। ये लक्ष्य स्वतंत्र, उन्मुक्त एवं संतुलित संचार-माध्यमों की उपलब्धि से उत्पन्न समझ-बूझ एवं सहिष्णुता के व्यवहार से प्राप्त हो सकते हैं।

2. यह अनुभूति भी हुई है कि संचार-माध्यमों एवं उसके संगठनों, विशेषतः सूचना-प्रवाह, में विद्यमान असंतुलन एवं असमानता का अंत करने को सर्वाधिक महत्ता दी जानी चाहिए। विकासशील देशों के लिए आवश्यक है कि उनका परावलंबन घटे तथा वे संचार- माध्यमों के क्षेत्र में एक नए अधिक न्यायपूर्ण तथा निष्पक्ष संगठन का निर्माण करें।

3. हमारे निष्कर्ष इस सुदृढ़ विचार पर आश्रित हैं कि संचार माध्यम जहां बुनियादी व्यक्तिगत अधिक हैं, वहां सभी जन-समूहों और राष्ट्रों पर सामूहिक रूप से इसे प्राप्त करने का भी दायित्व भी है। सूचना संबंधी स्वतंत्रता, विशेषतः सूचनाओं के आदान-प्रदान का अधिकार, मौलिक मानवीय अधिकार है। इस दृष्टि से राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रजातांत्रिक समाज के व्यापक विकास के लिए संचार माध्यमों का लोकतांत्रिक बनना बहुत जरूरी है।

4. इन लक्ष्यों की पूर्ति के लिए तथा सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं प्रसार संबंधी लक्ष्यों के अनुकूल उपयुक्त राष्ट्रीय सरकारों एवं अंतर्राष्ट्रीय बिरादरी को उच्चतम प्राथमिकता के संचार साधनों में नियोजन तथा वित्तीय संसाधनों की आवश्यकता अंगीकार करनी होगी। प्रत्येक देश को अपनी स्थिति, आवश्यकताओं और परंपराओं के अनुरूप अपने संचार का विकास करना होगा। इसी से उनके अस्तित्व, स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता की सुरक्षा संभव है।

5. हमें यह ध्यान रखना होगा कि जिस प्रकार राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और तकनीकी विषमताएं चिंताजनक एवं अस्वीकार्य हैं। उसी प्रकार राष्ट्रीय सूचनाओं एवं संचार-माध्यमों में भी असंतुलन है। संचार माध्यमों के प्रसार के संबंध में राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण निर्णय शीघ्र लिए जाने चाहिए।

परावलम्बन का अंत होना चाहिए एवं आत्मनिर्भरता को सुदृढ़ करना चाहिए। सभी व्यक्तियों को निजी रूप में तथा जनता को सामूहिक रूप से राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दृष्टि से न्यूनतम सामाजिक स्थिति के आधार पर समुन्नत जीवन प्राप्त करने का अविच्छेद अधिकार है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए व्यक्तिगत सामर्थ्य बढ़ानी होगी, भयंकर विषमताएं समाप्त करनी होंगी। इस तरह के दोष सामाजिक व्यवस्था एवं अंतर्राष्ट्रीय शांति के लिए संकटप्रद हैं। वर्तमान हानिप्रद परावलम्बन की स्थिति से आत्मनिर्भरता द्वारा ही हम प्रगति की ओर बढ़ सकेंगे, क्योंकि संचार माध्यम जीवन के प्रत्येक पहलू से संबंधित हैं, फलतः विश्व भर में संचार माध्यमों का अभाव दूर करना बहुत अधिक महत्वपूर्ण है। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए चार महत्वपूर्ण उपाय ठीक रहेंगे -

1. जनसंचार एक भौगोलिक सेवा मात्र नहीं है, इसका विकास संयोग पर नहीं छोड़ा जा सकता है। सभी राष्ट्रों, विशेषतः विकासशील देशों को अपने सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक लक्ष्यों की पूर्ति के लिए बोधगम्य संचार नीतियां निर्धारण करनी चाहिए।

2. भाषाएं जनता की सांस्कृतिक अनुभूतियों की प्रतीक हैं। इसलिए आधुनिक संचार की पेचीदा तथा विविध आवश्यकताओं के अनुरूप सभी भाषाओं का समुचित विकास होना चाहिए, इसीलिए विकासशील देश तथा बहुभाषा जन समुदाय ऐसी भाषानीति अपनाए, जिसमें सभी राष्ट्रीय भाषाओं की समुन्नति का अवसर देते हुए आवश्यकता के अनुसार संचार, उच्च शिक्षा तथा प्रशासन के क्षेत्र में अधिक व्यापक प्रयोग के लिए कुछ भाषाएं चुन ली जाएं, इसी के साथ कुछ परिस्थितियों में बहुभाषी क्षेत्रों की स्वीकृति राष्ट्रभाषाओं के लिपियों के ग्रहण, सरलीकरण, प्रमाणीकरण, कुंजी पटलों के प्रसार, शब्दकोशों के निर्माण, भाषा विज्ञान के आधुनिकीकरण एवं साहित्य के प्रतिलिपिकरण संबंधी बहु तसी जरूरतें हैं। भाषाओं के कारण बंटे समाज को मिलाने के लिए व्याख्या और अनुवाद संबंधी व्यावहारिक एवं यांत्रिक व्यवस्थाएं अपनानी होंगी।

अशिक्षा दूर करने के लिए प्राथमिक शिक्षा की सर्वाधिक व्यवस्था की जाए। औपचारिक विद्यालय शिक्षा के साथ रेडियो, टेलीविजन एवं पत्राचार के दूरवर्ती साधन अपनाकर अनौपचारिक शिक्षा दी जा सकती है।

सभी देश अपने राष्ट्रीय विकास लक्ष्य का ख्याल कर अपनी प्राथमिकता तय कर सकते हैं। साधनों का जायजा लेकर संचार के सभी माध्यम अपनाएं जा सकते हैं।

**क्षमता बढ़ाने के लिए** - संचार माध्यम संबंधी नीति ऐसी हो, जिससे सूचना तथा माध्यम की प्राथमिकताएं निर्धारित करने तथा समुचित तकनीक के निर्धारण का मार्ग प्रशस्त किया जा सके। इस बारे में निम्नलिखित उपाय कारगर हो सकते हैं-

1. विकासशील देश अपने संचार-माध्यम, मुद्रण-माध्यम, प्रसारण, दूर संचार संबंधी प्रशिक्षण एवं निर्माण सुविधाएं स्थापित करें।

2. प्रत्येक देश की राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सूचनाओं की स्थिति सुधारने के लिए सुदृढ़ राष्ट्रीय संवाद समितियां अनिवार्य हैं। जहां संभव हो समाचार प्रवाह को बढ़ाने एवं क्षेत्र के सभी प्रमुख भाषा समूहों की सेवा के लिए क्षेत्रीय संगठन स्थापित किए जाने चाहिए।

संस्थाओं को संवाद संग्रह एवं वितरण के लिए शहरी और देहाती क्षेत्रों में अपनी शाखाएं स्थापित करनी चाहिए।

3. राष्ट्रीय पुस्तक निर्माण को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इसी प्रकार पुस्तकों, समाचारपत्रों और नियतकालिकों के वितरण की व्यवस्था की जानी चाहिए। राष्ट्रीय लेखकों की रचनाएं विभिन्न भाषाओं में छपी जानी चाहिए।

4. राष्ट्रीय रेडियो प्रणाली का लाभ दूरदराज के गांवों को देने के लिए उसका विस्तार किया जाना चाहिए। दूरदर्शन की अपेक्षा रेडियो को प्राथमिकता की जानी चाहिए। जहां उचित हो, वहां टेलीविजन को भी प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। उन क्षेत्रों पर विशेष ध्यान देना चाहिए, जिनमें शिक्षा ज्यादा नहीं है।

5. प्रसारण सामग्री का निर्माण करने के लिए राष्ट्रीय क्षमता जरूरी है। उपयुक्त कार्यक्रम विनिमय को छोड़कर बाह्य स्रोतों पर निर्भरता अवांछनीय है। इस क्षमता में राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय प्रसारण सम्मिलित है, फलतः बुनियादी वितरण-केंद्रों के साथ फिल्मों एवं समाचारों के संग्रह तथा वितरण की व्यवस्था भी होनी चाहिए।

6. संचार-माध्यमों एवं निर्माण केंद्रों के लिए उपयुक्त कमियों की पूर्ति के लिए उपयुक्त शैक्षिक एवं प्रशिक्षण-सुविधाएं अपेक्षित हैं। साथ ही प्रबंधकों, शिल्पियों और रख-रखाव करने वाले कर्मचारियों की व्यवस्था होनी चाहिए। इस संबंध में पड़ोसी देशों में विशिष्ट क्षेत्रों के अंतर्गत आपसी संपर्क की जरूरत है।

**बुनियादी जरूरतें** - सभी देश पूंजी-निवेश की प्राथमिकताओं के निर्धारण में अपनी विशिष्ट दिलचस्पी रखेंगे। विकासशील देश संभावित विकल्पों और कई बार परस्पर-विरोधी हितों के बीच चुनाव करते हुए अपनी जनता की अनिवार्य जरूरतें पूरी करने के विषय में प्राथमिकता देंगे। संचार न केवल सूचना की एक प्रणाली है, बल्कि वह शिक्षा एवं प्रसारण का भी अविभाज्य अंग है। जनसंचार को प्राथमिकता देने के लिए निम्न आठ उपाय आवश्यक हैं -

क सभी विकास योजनाओं में संचार माध्यमों के लिए उपयुक्त वित्तीय साधन जुटाएं जाएं। कृषि, स्वास्थ्य, परिवार कल्याण, शिक्षा, धर्म, उद्योग आदि विकास के सभी क्षेत्रों में पहल तथा अमल से विकास कार्यों में जनसंचार से योगदान मिलता है।

ख छोटे ग्रामीण विद्युत एक्सचेंजों के माध्यमों से बुनियादी डाक सेवाओं तथा दूरसंचार सेवाओं के प्रसार से अनिवार्य संचार आवश्यकताएं पूर्ण की जा सकती हैं।

- ग ग्रामीण क्षेत्रों व छोटे शहरों में सामुदायिक प्रेस के प्रसार आर्थिक एवं सामाजिक प्रसार संबंधी गतिविधियों के लिए छपाई की सुविधा मिल सकेगी । इससे नवसाक्षरों के लिए उपयोगी साहित्य के सृजन की भी संभावना है ।
- घ स्थानीय रेडियो, दूरदर्शन एवं वीडियो प्रणालियों से सामुदायिक विकास योजनाओं के अमल में एव सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों में मदद मिल सकेगी ।
- ङ संचार माध्यमों के शैक्षिक व सृजनात्मक प्रयोग को मनोरंजन के समान प्राथमिकता मिलनी चाहिए । साथ ही शिक्षा प्रणालियां युवाओं को संचार साधनों के लिए प्रशिक्षित करें ताकि विद्यार्थी प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तरों पर समाचारपत्र पढ़ सकें, रेडियो तथा दूरदर्शन के कार्यक्रमों का मूल्यांकन कर सकें । उन्हें संचार माध्यमों की प्रारंभिक जानकारी के साथ उनका प्रयोग भी मालूम होना चाहिए । इससे युवा वास्तविकता को समझ सकेंगे और सामयिक विषयों तथा समस्याओं का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे ।
- च सामुदायिक श्रव्य एवं दृश्य समूहों के संगठन कुछ परिस्थितियों में मनोरंजन और शैक्षिक आदान-प्रदान के लिए स्थानीय संचार केंद्रों की व्यवस्था की जा सकती है । उनकी सहायता के लिए विकेंद्रीभूत संचार माध्यम केंद्र स्थापित किए जा सकते हैं ।
- छ संचार माध्यमों को राष्ट्रीय विकास में सर्वोच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए । उसके लिए उपयुक्त वित्तीय साधनों को स्थायी व्यवस्था की जानी चाहिए । इसके लिए संपन्न नागरिक क्षेत्रों पर वित्तीय भार डाला जा सकता है । लक्ष्य की पूर्ति के लिए व्यावसायिक विज्ञापनों का सहारा लिया जा सकता है ।

### तीन विशिष्ट चुनौतियां

- क संचार माध्यमों के व्यापक प्रसार में कागज की पूर्ति भी एक बड़ी बाधा है । इस कमी को दूर करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय शोध एवं विकास के प्रयत्न होने चाहिए । कागज (जिसमें अखबारी कागज भी सम्मिलित है)की विश्वव्यापी कमी तथा बढ़ती हुई कीमतें संघर्षशील समाचारपत्रों, नियतकालिकों तथा प्रकाशन उद्योग (विशेषतः विकासशील देशों में)के लिए भारी बोझा बन रही है । यूनेस्को को खाद्य व कृषि संगठन के सहयोग से कागज तथा अखबारी कागज के अधिक उत्पादक का प्रयत्न करना चाहिए । इसके लिए हए तथा पुराने कच्चे माल के स्रोतों की खोज की जानी चाहिए । इस बारे में प्रारंभिक परीक्षण आशाप्रद सिद्ध हुए हैं ।
- ख समाचारों के मुक्त व संतुलित प्रसार में सीमा शुल्क दूर संचार दरें, समाचारों के आदान-प्रदान पर हवाई डाक शुल्क, समाचारपत्रों, नियतकालिकों, पुस्तकों तथा दृश्य-श्रव्य सामग्री पर यातायात व्यय आदि मुख्य बाधाएं हैं । इस स्थिति में, विशेषतः विकासशील देशों की स्थिति में, सुधार होना चाहिए । सभी सरकारों को अपनी डाक-तार की रीति नीति की समीक्षा करनी चाहिए । ऐसी सेवाओं को मुनाफे की दृष्टि से काम नहीं करना चाहिए । सूचनाओं और संस्कृति के क्षेत्र में उन्हें व्यवस्थित कार्य करना चाहिए । उनके सीमा शुल्क ऊंचे राष्ट्रीय लक्ष्यों के अनुकूल होने चाहिए । इस संबंध में अंतर्राष्ट्रीय कार्रवाई से छोटे उपभोक्ताओं को राहत मिल सकेगी । पिछले दिनों 154 देशों के प्रतिनिधियों ने डाक-तार दरों को घटाने के बारे में आपसी विचार विमर्श किया था । विकासशील देशों को इस संबंध



में तुरंत राहत मिलनी चाहिए । इन देशों में क्षेत्रीय तथा आपसी आदान-प्रदान में रियायती दरें लागू की ही जा सकती हैं ।

ग मानवता तथा उसकी ज्ञान-विज्ञान की उन्नति के लिए नए ब्रह्मांडीय वैद्युतिक चुंबकीय संचार माध्यमों एवं साधनों का सर्वाधिक उपयोग होना चाहिए । उसमें कृत्रिम या भौगोलिक बाधाएं नहीं आनी चाहिए ।

**नई सामाजिक जिम्मेदारियां** - विकास कार्यों की रीति-नीति ऐसी होनी चाहिए कि चुनी हुई प्राथमिकताओं की योजना व अमल में संचार-नीतियां भी सम्मिलित की जानी चाहिए । इस दृष्टि से संचार माध्यमों को महत्वपूर्ण विकास साधन समझना चाहिए । संचार माध्यम राष्ट्रीय प्राथमिकताओं में मूल्यांकन, वास्तविक राजनीतिक भागीदारी तथा नीति निर्धारण में केंद्रीय सूचना केंद्र तथा महत्वपूर्ण विकास माध्यम के रूप में प्रतिष्ठित किए जा सकते हैं इस संबंध में उल्लेखनीय उपाय संभव हैं-

क संचार माध्यमों एवं विकास की केंद्रीय नीति निर्धारित की जानी चाहिए । विकास कार्यों का लेखा-जोखा लेते हुए उनके लिए उपयुक्त संचार माध्यमों का समय-समय पर मूल्यांकन किया जाना चाहिए ।

ख विकास संबंधी समस्याओं और लक्ष्यों के विषय में जनरुचि जागृत करने के लिए उपयुक्त संचार माध्यम नीति निर्धारित करते हुए प्रचलित लोक भाषाओं एवं चिन्हों का प्रयोग करना चाहिए । इस दृष्टि से प्रसारित समाचारों की महत्ता एवं रीति-नीति के अनुसार विकास संबंधी सूचनाएं प्रसारित की जानी चाहिए । इन समाचारों के प्रस्तुतीकरण में सामाजिक जरूरतों का भी ध्यान रखा जाना चाहिए ।

**प्रौद्योगिक चुनौती का सामना**- संचार माध्यमों में प्रौद्योगिक विस्फोट से नई संभावनाएं और खतरे बढ़े हैं । उनके नतीजे इस पर आश्रित हैं कि इस बारे में निर्णय कौन और कब करता है, इसलिए राष्ट्रीय स्तर पर रीति-नीति का निर्धारण करते हुए चार बातों का ख्याल किया जाना चाहिए-

क सामाजिक स्थिति का लेखा-जोखा करने के लिए जीवन पद्धतियों का मूल्यांकन, समाज के उपेक्षित वर्गों की स्थिति, सांस्कृतिक प्रभाव, रोजगार आदि की संभावनाओं का उचित जायजा लेने में नए शक्तिशाली प्रौद्योगिकी तकनीकी माध्यमों का उपयोग अधिक मदद दे सकता है ।

ख सामाजिक प्राथमिकताओं के मूल्यांकन एवं निर्धारण में नए संचार माध्यमों में तकनीक अधिक सहायक हो सकती है ।

ग विकासशील देशों में बुनियादी जरूरतों का ख्याल करते हुए क्षेत्रीय एवं स्थानीय स्तरों पर शोध व विकास के कार्य किए जा सकते हैं । उपयुक्त प्रौद्योगिक अनुसंधान के लिए ज्यादा धनराशि रखना ठीक होगा । जरूरी उपकरणों की व्यवस्था व रख-रखाव में भी पहले से ही सावधानी रखनी होगी ।

घ आज कुछ ही विकसित देशों व संस्थानों में संचार प्रौद्योगिकी केंद्रित ही गई है, जिसे इस क्षेत्र में पैदा हुआ एकाधिकार राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर किए गए उपायों से ही खत्म किया जा सकता है । इस संबंध में मौजूदा पेटेंट कानून एवं परंपराओं में उपयुक्त सुधार हो सकता है ।

**सांस्कृतिक पहचान का संरक्षण-** प्रत्येक समाज की सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखने के लिए दूसरी संस्कृतियों से उसका उपयुक्त व संतुलित आदान-प्रदान होना चाहिए । इस बारे में निम्न तीन व्यवस्थाएं ठीक रहेंगी ।

1. हर देश की सांस्कृतिक नीति निर्धारित होनी चाहिए, जिससे उसकी सांस्कृतिक पहचान और उन्नति हो सके । इसके लिए उपयुक्त संचार-माध्यम काम में लाए जा सकते हैं । राष्ट्रीय संस्कृति की पूरी जानकारी भी दी जानी चाहिए । (आयोग के अध्यक्ष श्री मैकब्राइड की टिप्पणी-में यह भी कहना चाहूंगा कि आध्यात्मिक एवं धार्मिक मूल्यों की सांस्कृतिक महत्ता की दृष्टि से तथा नैतिक मूल्यों की पुनर्प्रतिष्ठा के लिए रीति-नीति में धार्मिक विश्वासों और परंपराओं का भी ख्याल रखा जाना चाहिए ।)हमें यह भी ध्यान रखना होगा कि हर संस्कृति की अलग पहचान कायम रहे ।
2. संचार माध्यमों व संस्कृति के बारे में बनी नीतियां ऐसी होनी चाहिए कि सृजनशील कलाकार तथा भूमिपत्र संचार माध्यमों के द्वारा अपनी वाणी प्रसारित करवा सकें, विभिन्न संस्कृतियों के जन प्रतिनिधि रेडियो, टेलीविजन या फिल्मों का प्रयोग कर सकें । अंतर्राष्ट्रीय सहायता से विभिन्न देशों के बीच आपसी समझौते इस दिशा में कारगर हो सकते हैं ।
3. राष्ट्रीय मापदंडों व परंपराओं के अनुसार विज्ञापन नीति निर्धारित की जा सकती है । यह विकास योजना व सांस्कृतिक व्यक्तित्व की सुरक्षा के अनुकूल होनी चाहिए । यह भी ध्यान रखना होगा कि इसका प्रभाव बच्चों और युवकों पर कैसा पड़ेगा ? प्रसारित विज्ञापनों के संबंध में जनता की शिकायतें या उपभोक्ताओं की प्रतिक्रिया जानने के लिए विशिष्ट कक्षों की व्यवस्था की जा सकती है ।

व्यवसायीकरण कम करने के लिए-संचार साधनों के व्यवसायीकरण से होने वाले सामाजिक प्रभाव निजी तथा सार्वजनिक संस्थानों में नीति निर्धारण अमल में चिंता का विषय है । इसलिए तीन सावधानियां जरूरी हैं-

1. संचार प्रणालियों और संचार माध्यम का विस्तार करते हुए संचार के अव्यावसायिक रूपों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए । प्रत्येक देश की अपनी परंपराओं, संस्कृति, विकास के लक्ष्यों और सामाजिक-राजनीतिक ढांचे के अनुसार संचार माध्यमों का विस्तार होना चाहिए। शिक्षा की भांति इसके लिए भी कोष की व्यवस्था की जानी चाहिए ।
2. राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय संचार माध्यमों के प्रयोग में बाजार व व्यापारिक प्रभावों की रोकथाम के लिए संचार साधनों की आय के लिए उपयुक्त साधन जुटाए जाने चाहिए ।
3. इस संबंध में व्यावसायिक संचार माध्यमों के वर्तमान वित्तीय खर्च पर ध्यान देना चाहिए। साथ ही संचार माध्यमों द्वारा सामाजिक कार्यों की प्रगति तथा समाज सेवा को सुदृढ़ करने के लिए विज्ञापन, लागत, मूल्य, निर्धारण, स्वैच्छिक अंशदान, सहायता करों, वित्तीय उत्प्रेरकों आदि का लेखा-जोखा लेना चाहिए, ।

प्राविधिक सूचनाओं की प्राप्ति-विकास के लिए राष्ट्रीय तथा राष्ट्र की सीमाओं के बाहर प्राविधिक सूचनाएं बेरोकटोक मिलनी चाहिए । संवाद के स्रोतों की तरह प्राविधिक सूचनाएं भी राष्ट्रों के प्राविधिक निर्णयों में उपयोगी होती हैं । इस प्रकार की सूचनाएं आम तौर से आसानी से नहीं मिलती हैं । वे अधिकतर

विशाल प्रौद्योगिक संस्थानों में केंद्रित होती हैं। विकसित देश भी इस प्रकार की पर्याप्त सूचनाएं विकासशील देशों को नहीं देते। इस स्थिति में सुधार के लिए निम्न पांच उपाय किए जा सकते हैं-

- क. विकासशील देश शैक्षिक, वैज्ञानिक व संचार नीतियों का समन्वय करें।
  - ख. विभिन्न देशों के प्राविधिक आकड़े और ब्यौरे व्यवस्थित रूप से एकत्र किए जाएं।
  - ग. अनिवार्य साक्ष्यकी एकत्र करने के लिए उपयुक्त बुनियादी सामग्री प्राप्त की जाए।
  - घ. सारे ब्यौरे एकत्र करने के लिए उचित कुशलता तथा संगणकों की व्यवस्था की जानी चाहिए।
2. प्राप्त सूचनाओं का लाभ सब देशों को उठाना चाहिए। इस सिद्धांत के आधार पर विकासशील देश प्राविधिक सूचनाओं का आदान-प्रदान करें। इस क्षेत्र में विद्यमान विषमताओं का अंत करने के लिए प्रौद्योगिक सूचनाओं के संग्रह, संपादन और व्यवस्थापन के लिए सभी संस्थात्मक व प्रादेशिक कठिनाइयों का ख्याल न करते हुए सहकारी आधार पर कार्य करना चाहिए। इस संबंध में "युनिसिस्ट" की गतिविधियां अधिक व्यापक होनी चाहिए।
3. विकासशील देश अपनी राष्ट्रीय नीति को प्राथमिकता दें।
- क. वे प्राविधिक विकल्प की खोज करें।
  - ख. वे अपनी खरीद केंद्रीभूत करें।
  - ग. वस्तु सामग्री के स्थानीय उत्पादन को प्राथमिकता दें।
  - घ. शिक्षा, स्वास्थ्य, उपभोक्ता सेवाओं, स्थानीय एवं क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा दिया जाए।
4. अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इन बातों पर ध्यान दिया जाए।
- क. विभिन्न विशिष्ट क्षेत्रों में विद्यमान संगठित ब्यौरे का आकलन किया जाए।
  - ख. कार्यक्रम में प्रभावी ढंग से भाग लेने तथा वर्तमान व्यवस्थाओं के आयोजन व प्रबन्ध के लिए बहुराष्ट्रीय समझौते होंगे, विकासशील देशों द्वारा प्राप्त सूचनाओं के प्रयोग को व्यवस्थित करने के लिए उपयुक्त व्यावसायिक तथा प्राविधिक उपायों का विश्लेषण किया जाए।
  - ग. सभी देशों के लिए लाभप्रद सूचना क्षेत्र में शोध एवं विकास की दृष्टि से आवश्यक अंतरराष्ट्रीय प्राथमिकताओं पर समझौते किए जाएं।
5. बहुराष्ट्रीय निगम विभिन्न देशों के कानूनों के अंतर्गत कानूनी कार्यों व प्रशासन के लिए उपयुक्त सभी सूचनाएं दें। उन्हें स्थानीय जनता, श्रम संगठनों, तथा संबंधित संस्थाओं को अपनी गतिविधियों से संबंधित सूचनाएं देनी चाहिए।

**पत्रकारों की जिम्मेदारी-** पत्रकारों की स्वतंत्रता और जिम्मेदारी एक दूसरे से जुड़ी हुई है जिम्मेदारी के साथ बिना स्वतंत्रता से बुराइयां पैदा कर देती हैं जबकि जिम्मेदारी के साथ मिली स्वतंत्रता से व्यावसायिक आचार संहिता की चिंता पैदा होती है। समाचार संतुलित दृष्टि से दिए जाने चाहिए। सब पहलुओं का ख्याल करते हुए परिस्थितियों का विश्लेषण किया जाना चाहिए किन्तु हमेशा इस नियम का पालन नहीं किया जाता। इस बारे में ये पांच उपाय ठीक रहेंगे -

1. समसामयिक विश्व में पत्रकार के काम के महत्व को ध्यान में रखकर समाज में उचित गरिमा मिलनी चाहिए, किन्तु पत्रकारों को भी अपना मानदंड बनाए रखना होगा ।
2. सफल पत्रकार बनने के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त करना होगा । इसके लिए इस पेशे के प्रवेशार्थियों को जहां उपयुक्त प्रशिक्षण-कार्यक्रम का लाभ उठाना चाहिए, वहां अनुभवी पत्रकारों को अपनी योग्यता बढ़ाने के लिए संगोष्ठियों और सम्मेलनों में जाना चाहिए । ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम राष्ट्रीय और क्षेत्रीय आधार पर आयोजित किए जाएं ।
3. सब जगह सच्चाई, पूर्णता और मानव अधिकारों का सम्मान आदि नहीं किया जाता । केवल आदेशों द्वारा उंचा व्यावहारिक मापदंड तथा उत्तरदायित्व नहीं लाए जा सकते और न उनके लिए हर पत्रकार की सद्भावना पर ही निर्भर रहा जा सकता है, जिसे उसकी व्यावसायिक क्षमता को घटाने या बढ़ाने वाली संस्थाओं द्वारा नियुक्त किया जाता है। पत्रकारों को आत्म सम्मान, प्रामाणिकता तथा अंतःस्फूर्ति से किए जाने वाले उनके अच्छे कामों का महत्व ज्यादा है । समाचारपत्र संस्थानों तथा पत्रकारों के संगठनों को व्यावसायिक निष्ठा का स्तर उंचा करना चाहिए । इस बारे में समाचारपत्र संस्थानों, उनके स्वामियों तथा प्रबंधकों को पत्रकारों से अलग समझा जाना चाहिए ।
4. दूसरे पेशों की तरह पत्रकार तथा जनसंपर्क संस्थाएं प्रत्यक्ष जन सेवा करती हैं, इसलिए जनता उनके कार्यों का लेखा-जोखा ले सकती है । विभिन्न देशों में पत्रकारों के कामों की समीक्षा करने के लिए प्रेस या माध्यम परिषदों की व्यवस्था की जाती है । इस बारे में नागरिकों से उचित सहयोग लिया जा सकता है । माध्यम संस्थाओं में स्वैच्छिक स्वयं-स्फूर्त मदद का अधिक महत्व है ।
5. संसार के बहुत से देशों में पत्रकारिता के लिए व्यावसायिक आचार संहिता स्वीकार की गई है, इसलिए विभिन्न देशों में राष्ट्रीय व क्षेत्रीय आधार पर यही नीति अपनाई जा सकती है। अधिक अच्छा हो कि सरकारी हस्तक्षेप के बिना ही पत्रकार अपनी आचार संहिता स्वयं बना लें ।

विश्व सूचना व्यवस्था में सुधार के लिए-एक देश के पूर्ण तथ्यात्मक संवाद दूसरे देशों तक पहुंचाना स्थायी समस्या है । इसके बहुत से कारण हैं । सबसे बड़ा कारण संवाददाताओं की कार्यस्थिति उनकी योग्यता तथा प्रवृत्तियां हैं । समाचारों, सूचनाओं और सरकारी दृष्टिकोण के भेद से भी इसमें अंतर आता है । विश्व भर में समाचारों का आदान-प्रदान व्यवस्थित करने के लिए निम्न दीर्घकालीन उपाय किए जा सकते हैं-

1. सभी देश विदेशी संवाददाताओं के प्रवेश, उनके द्वारा संवादों के संग्रह तथा भेजने की व्यवस्था करें । इस बारे में हैलसिंकी सम्मेलन की सिफारिशों पर अमल होना चाहिए । निष्पक्ष तथा संतुलित संवाद भेजने के लिए संवाद के स्रोतों तक पत्रकारों की खुली पहुंच होनी चाहिए । इस दृष्टि से सभी देशों के सरकारी और गैर सरकारी संवाद स्रोतों तक पहुंच निर्बाध होनी चाहिए । साथ ही आतिथेय देशों की प्रभुसत्ता तथा राष्ट्रीय हितों का उचित सम्मान होना चाहिए ।

2. यदि विकसित तथा विकासशील देशों की घटनाओं तथा प्रवृत्तियों का न्यायपूर्ण व निष्पक्ष विवरण प्रस्तुत करने के लिए पाठक और श्रोता अधिक सजग रहें तो संवादों के सग्रह, मापदंड तथा स्वीकृत संवाद मूल्य पुनर्मूल्यांकन किए जा सकते हैं। विविध संस्कृतियों तथा विश्वासों से पूर्ण वर्तमान संसार में उचित तथ्यात्मक संवाद भेजने के लिए पत्रकारों पर गंभीर जिम्मेदारी आती है।
3. विभिन्न देशों में काम करने वाले पत्रकार उन देशों की भाषाओं, इतिहास, संस्थाओं, राजनीति, अर्थ-व्यवस्था तथा सांस्कृतिक वातावरण का परिचय प्राप्त करें।
4. औद्योगिक देशों के अखबारों तथा प्रसारण माध्यमों को उन देशों, विशेषतः विकासशील देशों, की घटनाओं का विवरण देते हुए पृष्ठभूमि बताने वाली सामग्री को अधिक स्थान और समय देना होगा। इसी प्रकार विकासशील देशों के संपादकों तथा प्रोड्यूसरों को छपने और प्रसार के लिए सामग्री तैयार करने से पहले उन देशों की संस्कृतियों तथा अवस्थाओं की अच्छी जानकारी कर लेनी चाहिए। साथ ही विकासशील देशों की समाचार-क्षमता सुदृढ़ की जानी चाहिए तथा औद्योगिक देशों को संतुलित ढंग से समाचार देने चाहिए।
5. अंतर्राष्ट्रीय समाचारों का अधूरा तथा दुर्भावनापूर्ण नकारात्मक प्रस्तुतीकरण रोकने के लिए उनके उचित उत्तर तथा संशोधन का अधिकार दिया जाना चाहिए। गलत तथा तोड़-मरोड़ कर पेश किए गए समाचार घातक हो सकते हैं। संशोधन तथा प्रत्युत्तर उपयोगी रहेंगे। इस संबंध में 1952 में अंतर्राष्ट्रीय करार के प्रावधानों पर अमल किया जाना चाहिए।
6. बहुत से देश अपनी जासूसी गतिविधियों के लिए पत्रकारों को नियुक्त कर देते हैं। यह प्रवृत्ति अत्यंत निंदनीय है। इससे पेशे की विश्वसनीयता संदिग्ध हो जाती है। इस प्रवृत्ति से कुछ स्थितियों में दूसरे पत्रकारों के प्रति भी अनुचित संदेह और शारीरिक खतरा पैदा हो जाता है। पत्रकारों तथा अखबारों के संचालकों से हम अनुरोध करते हैं कि वे इस प्रकार संभावित प्रयत्नों से सावधान रहें। हम सरकारों से अनुरोध करते हैं कि वे जासूसी के लिए पत्रकारों का उपयोग न करें।

**पत्रकारों का संरक्षण-** अपने पेशे की जिम्मेदारी निभाने पर पत्रकारों के लिए उत्पन्न होने वाले खतरों, परेशानियों, धमकियों, कारावास, शारीरिक हिंसा, हत्या आदि के बारे में संसार भर में रोज खबरें मिलती हैं। मानवीय अधिकारों पर होने वाले इस प्रकार के हमलों के प्रति दुनिया का ध्यान केंद्रित करने के लिए सतत जागरूकता जरूरी है। इस दृष्टि से दो बातें की जा सकती हैं

1. समाचार एकत्र करने वाले व देने वाले व्यक्तियों की स्वतंत्रता, निष्पक्षता और अभिव्यक्ति की रक्षा की जानी चाहिए। कई बार पत्रकारिता संकटपूर्ण पेशा बन जाता है, इसलिए अपने दायित्व को निभाने वाले पत्रकारों के संरक्षण के लिए किसी विशेषाधिकार की हम सिफारिश नहीं कर सकते। पत्रकार विशिष्ट श्रेणी के व्यक्ति नहीं हैं, वे अपने संबंधित देशों के नागरिक हैं, उन्हें दूसरे नागरिकों के समान मानवीय अधिकार मिलने चाहिए। 12 अगस्त, 1979 के जेनेवा समझौते के अन्तर्गत युद्धों के मोर्चा पर जाने वाले पत्रकारों के लिए विशेष व्यवस्था की गई है। इस प्रकार के अतिरिक्त संरक्षण होगा, तब पत्रकारों के ऐसे अधिकारों का स्वतः संरक्षण हो जाएगा (मैकब्राइड की टिप्पणी-वर्तमान गंभीर परिस्थिति के समाधान

के लिए सुझाव अपर्याप्त है। संचार साधनों तथा संवाद प्रवाह को सुरक्षित करने तथा पत्रकारों के कार्यों की महत्ता देखते हुए मेरा सुझाव है कि पत्रकारों को विशिष्ट स्थिति और संरक्षण मिलना चाहिए। उचित सुविधाएं न मिलने पर पत्रकारों को अपनी करने का अधिकार मिलना चाहिए। इस बारे में मैंने अपने विचार 'पत्रकारों की सुरक्षा': सी.आ.सी. डोक्यूमेंट नं 9 : में लिख दिए हैं।

पत्रकारों से संबंधित समस्याओं पर सं.रा. बाल आपात कोष (युनिसेफ)को समय-समय पर पत्रकारों, संचार माध्यमों के प्रबंधकों, शोधकर्त्ता व न्यायविदों का गोलमेज सम्मेलन बुलाना चाहिए तथा उपयुक्त उपाय ढूंढने चाहिए। (मैकब्राइड की टिप्पणी-मेरा सुझाव है कि ऐसा गोलमेज सम्मेलन प्रति पांचवें वर्ष बुलाया जाना चाहिए।)

**संचार माध्यमों का लोकतंत्रीकरण-** मानवीय अधिकारों की पूर्ति के लिए बोलने, अखबार निकालने, सूचना पाने और समूहबद्ध होने की स्वतंत्रता जरूरी है। व्यक्ति तथा समूह दोनों स्तरों पर संप्रेषण का अधिकार लोकतांत्रिक प्रक्रिया का भाग है। सभी स्त्रियों, पुरुषों और जन समुदायों को बराबर मानवीय अधिकार हैं। सभी मानवीय अधिकारों का संरक्षण संचार माध्यमों का सबसे महत्वपूर्ण कर्त्तव्य है। इस संबंध में तीन कदम उठाए जाने चाहिए-

1. संचार माध्यमों में काम करने वाले सभी व्यक्ति इन माध्यमों के बारे में यूनेस्को घोषणा-पत्र, हेलसिंकी करार तथा मानवीय अधिकारों के विषय में अंतर्राष्ट्रीय कानून आदि की भावना ध्यान में रखते हुए व्यक्तिगत व सामूहिक मानवीय अधिकारों की पूर्ति में योग दें। इस संबंध में संचार माध्यमों का सहयोग न केवल इन सिद्धांतों की सुरक्षा करेगा, बल्कि उनसे इन सिद्धांतों के हनन और उनकी उपेक्षा संबंधी तथ्य भी प्रकाश में आ सकेंगे। मानवीय अधिकारों के संरक्षण के लिए किए गए कामों में पत्रकारों को उपयुक्त जन सहयोग मिलना चाहिए।
2. संचार माध्यम विदेशी हस्तक्षेप से मुक्ति चाहने वाले और स्वतंत्रता के इच्छुक जन आन्दोलनों का भी समर्थन करें। उपनिवेशवाद, धार्मिक तथा जातीय भेदभाव से संघर्ष करने वाले शोषित व्यक्तियों के लिए (जिन्हें अपने देशों में अभिव्यक्ति का कोई अवसर नहीं है) इस तरह का समर्थन अधिक वांछनीय है।
3. जनतांत्रिक समाज में सूचना मिलने और देने का अधिकार, अपने ढंग से रहने का अधिकार, संचार माध्यमों के उपयोग का अधिकार आदि विशिष्ट अधिकारों का प्रसार होना चाहिए। व्यापक रूप में ये मानव अधिकार हैं। संचार माध्यमों के प्रयोग संबंधी पूरे अधिकार प्राप्त होने ही चाहिए।

**बाधाओं का निवारण** - जन-जन के मन में तथा व्यवहार पर प्रभाव डालने की अपनी असीम क्षमता के कारण संचार माध्यम समाज के लोकतंत्रीकरण तथा किसी भी अंतिम निर्णय करने में व्यापक जन सहयोग प्राप्त करने में शक्तिशाली सिद्ध हो सकते हैं। संचार माध्यमों के उचित विकास तथा सब प्रकार के हस्तक्षेपों व पक्षपातों से मुक्त सूचनाओं और समाचारों के खुले आदान-प्रदान की अधिकतम सुविधा से यह काम बखूबी हो सकता है। इस संबंध में चार उपाय उपयोगी हो सकते हैं

1. सभी देशों में नागरिकों के दैनिक जीवन के लिए उपयुक्त सूचना-स्रोतों के विस्तार की व्यवस्था होनी चाहिए। जनता तक सूचना पहुंचने की प्रक्रिया तथा गोपनीयता की व्यवस्था में मर्यादा लाने के लिए मौजूदा कानूनों व नियमों की गंभीर समीक्षा की जानी चाहिए।
2. सूचनाओं का सेंसर या स्वैच्छिक नियंत्रण समाप्त कर देना चाहिए। (एस. लोस्बे की टिप्पणी-इस संबंध में प्रत्येक देश कानून बनाकर सेंसर या स्वैच्छिक नियंत्रण की रोकथाम कर सकता है।) उचित क्षेत्रों में उपयुक्त प्रतिबंध कानून के अंतर्गत ही लगाने चाहिए और उन पर संयुक्त राष्ट्र घोषणा-पत्र, मानवीय अधिकारों के अंतर्राष्ट्रीय घोषणा-पत्र तथा अंतर्राष्ट्रीय परंपराओं के अनुरूप स्वीकृत सिद्धांतों के अनुसार न्यायिक पुनरीक्षण होना चाहिए। (मैकब्राइड की टिप्पणी-इस बारे में यूरोपीय करार की अपेक्षा 1979 का अमरीकी करार अधिक ठीक है।)
3. इस संबंध में उन बाधाओं और प्रतिबंधों पर ध्यान देना चाहिए, जो संचार माध्यमों के स्वामित्व के केंद्रीयकरण (चाहे वह निजी हो या सार्वजनिक) अखबारों तथा प्रसारण के व्यावसायिक प्रभुत्व तथा निजी या सरकारी विज्ञापनों से होने वाले प्रभाव से पैदा होता है। माध्यमों के संचालन में वित्तीय परिस्थितियों से होने वाली कठिनाइयों की गहरी समीक्षा की जानी चाहिए और संपादक स्वतंत्रता को सुरक्षित रखने वाले उपाय सुदृढ़ करने चाहिए।
4. कारगर कानूनी उपाय किए जाएं, जिनसे
  - क केंद्रीयकरण तथा एकाधिकार की प्रक्रिया मर्यादित हो,
  - ख राष्ट्रीय कानूनों तथा विकास नीतियों का सम्मान हो,
  - ग संचार माध्यमों का विस्तार होने पर तथा संप्रेषण का प्रभाव बढ़ने के बाद भी माध्यमों का केंद्रीयकरण न हो,
  - घ संपादकीय नीति तथा प्रसारण कार्यक्रम पर विज्ञापनों का प्रभाव घटे,
  - च निजी, सार्वजनिक तथा सरकारी स्वामित्व के संचार माध्यमों के प्रबंध तथा संपादकीय नीति निर्धारण में अधिक स्वतंत्रता की व्यवस्था हो सके।

**विविधता तथा अभिरुचि-** संचार सामग्री में विविधता तथा अभिरुचि के लिए प्रजातांत्रिक भागीदारी होनी चाहिए। व्यापक सूचनाओं तथा नाना प्रकार के संदेशों तथा सम्मतियों के आधार पर प्रत्येक व्यक्ति और विशिष्ट समूह को अपनी राय देने का अधिकार मिलना चाहिए। विकेंद्रीभूत विविधता भरे संचार माध्यमों से संप्रेषण की प्रक्रिया में जनता को असली प्रत्यक्ष भागीदारी का अवसर मिल सकेगा। इस बारे में तीन उपाय ठीक रहेंगे-

1. विशिष्ट प्रविष्टियों का ढांचा अपनाने से पहले सार्वजनिक सूचना स्रोतों की जरूरतों का आकलन किया जाना चाहिए।
2. महिलाओं की संप्रेषण आवश्यकता के प्रति ध्यान दिया जाना चाहिए। उन्हें संप्रेषण-साधनों का पूरा लाभ मिलना चाहिए। संचार माध्यम के स्रोतों अथवा विज्ञापनों द्वारा उनकी छवि या गतिविधियां गलत ढंग से पेश नहीं की जानी चाहिए।
3. बच्चों और युवकों की स्थिति, राष्ट्रीय, धार्मिक तथा भाषागत अल्पसंख्यकों, दूर दराज के क्षेत्रों में रहने वाली प्रजातियों, वृद्धों तथा पिछड़े हुए वर्गों का भी विशेष ख्याल रखना

चाहिए। वे समाज के बड़े संवेदनशील भाग का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनकी विशिष्ट संप्रेषण आवश्यकताएं हैं।

**एकीकरण और भागीदारी** - समसामयिक समाज से संपर्क स्थापित करने के लिए मानव को उचित संचार साधनों का प्रयोग करना चाहिए। व्यक्तिगत रूप से सूचना व मनोरंजन के लिए तकनीक बहुत मदद करते हैं, परंतु उनसे कई बार समूहगत सामाजिक या सांस्कृतिक संपर्क नहीं सध सकते। इस बारे में निम्न चार वैकल्पिक संचार माध्यम उपयुक्त रहेंगे-

1. जीवन व काम संबंधी वातावरण के लिए उपयुक्त संचार माध्यम अपनाए जाने चाहिए।
2. सामान्यतः पाठक, श्रोता और दर्शक सूचनाओं के निष्क्रिय प्राप्तकर्ता समझे जाते हैं। संचार माध्यमों की नीति बनाने वाले जनता के संगठित सामाजिक समूहों या जनता के सदस्यों के दृष्टिकोण का ख्याल रखते हुए समाचारपत्रों और प्रसारणों में अधिक स्थान या समय देकर श्रोताओं या पाठकों को संप्रेषण में अधिक सक्रिय भाग लेने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।
3. सभी स्तरों पर उचित संचार सुविधाएं प्रतिष्ठित की जाएं, जिससे संचार माध्यमों के प्रबंध तथा वित्तीय व्यवस्था में जनता का अधिक सहयोग प्राप्त किया जा सके।

संचार नीति बनाने वालों को ऐसे तरीके अपनाने चाहिए, जिनसे राष्ट्रीय परंपराओं और विशिष्टताओं का सम्मान करते हुए निम्नलिखित श्रेणियों का सहयोग लेते हुए माध्यमों को लोकोत्तांत्रिक स्वरूप दिया जा सके -

- क पत्रकार तथा पेशेवर संप्रेषणकर्ता
- ख रचनात्मक कलाकार
- ग कला वैज्ञानिक,
- घ माध्यमों के स्वामी तथा प्रबंधक
- च चजन प्रतिनिधि

माध्यमों के ऐसे लोकतंत्रीकरण में वहां के सभी कर्मचारियों का हार्दिक सहयोग मिलना चाहिए। इससे संपादन और प्रबंधन में उनका सक्रिय सहयोग प्राप्त किया जा सकेगा।

**अंतर्राष्ट्रीय सहयोग में वृद्धि**- इन दिनों आर्थिक विषमता, आर्थिक या राजनीतिक दुरभिसंधियों या सांस्कृतिक प्रभुता या उपेक्षा आदि के कारण संचार माध्यमों की सुविधाओं में असमानता है। मौजूदा हालत के चाहे जो कारण रहे हों, परंतु ये भयंकर असमानताएं समाप्त होनी ही चाहिए। नई विश्व सूचना व संचार व्यवस्था का लक्ष्य ही अंतर्राष्ट्रीय सहयोग प्राप्त करना है। इसके प्रमुख अंग हैं अंतर्राष्ट्रीय समझ पैदा करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग तथा मदद। विश्व स्तर पर सहयोग बढ़ाने में संचार माध्यम विशेष महत्वपूर्ण हो गए हैं। पराधीनता, प्रभुत्व और असमानता के स्थान पर एक-दूसरे पर निर्भरता तथा एक-दूसरे के पूरक होने के अधिक फलप्रद तथा आपसी हितों पर आश्रित संबंधों की स्थापना के लिए अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को कोशिश करनी चाहिए। ऐसा अंतर्राष्ट्रीय सहयोग वर्तमान स्थिति बदलकर ही संभव है। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए तीन उपाय जरूरी हैं-

1. नई विश्व सूचना व संचार व्यवस्था स्थापित करने के लिए राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तरों पर कई कदम उठाने की जरूरत है।



2. संचार माध्यमों के विकास के लिए अन्य क्षेत्रों (स्वास्थ्य, कृषि, उद्योग, विज्ञान, शिक्षा आदि)में भी अंतर्राष्ट्रीय सहयोग होना चाहिए, क्योंकि सूचना व्यक्तिगत और सामूहिक प्रगति तथा सब दिशाओं का बुनियादी साधन है। इस ओर सरकारों और अंतर्राष्ट्रीय तथा क्षेत्रीय संगठनों के बीच द्विपक्षीय समझौतों से मिलने वाले धन या साधनों से बढ़ा जा सकता है। इस संबंध में विकासशील देशों की जरूरतें ध्यान में रखी जानी चाहिए।

3. इस बारे में प्राविधिक संस्थाओं को नई अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था तथा नई संचार व्यवस्था स्थापित करते हुए दोनों के घनिष्ठ संबंधों पर ध्यान देना चाहिए। संयुक्त राष्ट्र संघ को अंतर्राष्ट्रीय विकास नीति तय करते हुए संचार को उसका अविभाज्य अंग स्वीकार करना चाहिए।

**सामूहिक आत्मनिर्भरता-** विकासशील देशों को संचार के क्षेत्र में अपने पैरों पर खड़ा होने के लिए अपनी बुनियादी जिम्मेदारी स्वीकार करनी चाहिए। हालांकि इस क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर काम शुरू किया जाएगा, लेकिन क्षेत्रीय स्तर पर होने वाले द्विपक्षीय समझौते से उसमें गति आएगी। नई अंतर्राष्ट्रीय सूचना व संचार व्यवस्था में आत्मनिर्भरता की सबसे ज्यादा जरूरत है।

1. विकासशील देशों के आर्थिक सहयोग के वर्तमान समझौतों और कार्यक्रमों के संचार विस्तार को भी शामिल कर लिया जाना चाहिए।

2. विकासशील देशों को संचार माध्यमों के विस्तार के लिए अधिक व्यवस्थित और उन्नत पारस्परिक सहयोग करना चाहिए। रेडियो और दूरदर्शन के कार्यक्रम तथा फिल्मों के आदान-प्रदान के लिए संवाद समितियों का प्रसारण संगठनों के समूहीकरण का विकास करने की कोशिश की जानी चाहिए।

3. प्राविधिक सूचनाओं के क्षेत्र में आपसी सहयोग बढ़ाने के लिए विविध केंद्रों में उपयुक्त सांख्यिकी केंद्र स्थापित किए जाने चाहिए।

4. गैर लक्ष्यात्मक विशेषतः आर्थिक सूचनाएं एकत्र की जानी चाहिए। समुद्रपारिय अंतर्राष्ट्रीय नियमों बैंकों, आर्थिक सर्वेक्षण, दीर्घकालीन योजनाओं आदि के क्षेत्रों में ये सूचनाएं उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं।

5. एक विकासशील देश को अन्य विकासशील देशों के समाचार अपने संचार माध्यमों से अधिक देने चाहिए।

6. संचार के क्षेत्र में विभिन्न देशों की व्यावसायिक संस्थाओं और विशेषज्ञों के बीच संपर्क तथा समझौते सुदृढ़ किए जाने चाहिए। आपसी हितों को सुदृढ़ करने और पारस्परिक अनुभवों तथा संयुक्त योजनाओं पर अमल करने के लिए भी ऐसा करना लाभप्रद रहेगा।

**अंतर्राष्ट्रीय संपर्क** - संचार माध्यमों के प्रसार में आपसी सहयोग अंतर्राष्ट्रीय समस्या है, इसलिए सदस्यों राष्ट्रों को विचार विनिमय करके तथा सहयोग बढ़ाकर इस दिशा में कोशिश करनी चाहिए। संचार से जुड़ी अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के ढांचों तथा उनके कामों का सरकारें लेखा-जोखा करें और अपनी जरूरतों को देखते हुए परिवर्तनों का सुझाव दें। इस बारे में चार उपाय अपनाए जा सकते हैं-

1. सदस्य राष्ट्र इस संबंध में यूनेस्को के काम में सहयोग दें। यूनेस्को के शिक्षा, विज्ञान तथा संस्कृति के क्षेत्रों में उपयोगी लक्ष्यों के कारण इन माध्यमों का महत्व है। संचार की उन्नति से इन लक्ष्यों की पूर्ति में मदद मिलेगी।

2. यूनेस्को तथा संयुक्त राष्ट्र संघ की अन्य संस्थाओं के अंतर्गत विभिन्न संचार माध्यम अधिक संतुलित किए जाने चाहिए।

3. संयुक्त राष्ट्र संघ के अंतर्गत अधिक व्यवस्थित सूचना व्यवस्था स्थापित की जानी चाहिए। इसका अपना प्रसारण केंद्र होना चाहिए। संभव हो तो उसे स्वतंत्र उपग्रह संचार व्यवस्था का लाभ उठाना चाहिए जिससे विश्व के सभी सदस्य राष्ट्रों तक उसका संदेश पहुंचाया जा सके। भारी आर्थिक खर्च के बावजूद इस दिशा में कोशिश की जानी चाहिए।

4. सूचना व प्रचार के अध्ययन तथा आयोजन के लिए यूनेस्को के अंतर्गत एक अंतर्राष्ट्रीय केंद्र की स्थापना की जानी चाहिए। इसके पांच प्रमुख लक्ष्य हो सकते हैं-

(क) विकासशील देशों में राष्ट्रीय संचार माध्यमों का विस्तार किया जाए और अंतर्राष्ट्रीय सूचना प्रवाह का लाभ सबको दिया जाए।

(ख) साधन एकत्रित किए जाए तथा आवश्यक धन जुटाया जाए।

(ग) संचार के प्रसार कार्यक्रम में रुचि लेने वाले समूहों तथा संगठनों में समन्वय स्थापित किया जाए।

**अंतर्राष्ट्रीय समन्वय-** सभी देश शांति और अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा बनाए रखने, आपसी सहयोग बढ़ाने तथा तनाव बढ़ाने के पक्ष में हैं। इन लक्ष्यों की प्राप्ति में संचार माध्यम कारगर मदद कर सकते हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ की आम सभा ने हथियारों की होड़ रोकने के लिए जनमत बनाने की दृष्टि से संचार माध्यम के सहयोग पर जोर दिया था। अंतर्राष्ट्रीय सद्भाव पैदा करने, शांति व अंतर्राष्ट्रीय समझ को सुदृढ़ बनाने के लिए तथा जातिवाद, रंगभेद तथा युद्ध भड़काने की प्रवृत्तियों का सामना करने में संचार माध्यमों की भूमिका के बारे में यूनेस्को घोषणापत्र उपयोगी प्रकाश डालता है। राष्ट्रों के बीच शांतिपूर्ण सहयोग में सूचना तथा संचार व्यवस्था का एक नया संगठन उपयुक्त बन सकता है। इस बारे में निम्नलिखित चार सुझाव उपयोगी रहेंगे-

1. राष्ट्रों के बीच सद्भाव तथा शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व का वातावरण पैदा करने के लिए राष्ट्रीय संचार नीतियां अंतर्राष्ट्रीय संचार नीतियों के अनुकूल होनी चाहिए। राष्ट्रों को प्रसारण तथा संचार के अन्य माध्यमों का उपयोग शांति, अंतर्राष्ट्रीय सद्भाव बढ़ाने के लिए करना चाहिए। उन्हें राष्ट्रीय, जातीय तथा धार्मिक घृणा के प्रचार तथा भेदभाव, शत्रुता और हिंसा या युद्ध की उत्तेजना फैलाने से बचना चाहिए।

2. शांति और निःशस्त्रीकरण के लिए काम कर रहे संयुक्त राष्ट्रसंघ यूनेस्को, विश्व शांति संगठन तथा दूसरे राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के उल्लेखनीय दस्तावेजों के प्रचार में मुद्रित, दृश्य व श्रव्य साधन ज्यादा से ज्यादा काम में लिए जाने चाहिए। विश्वविद्यालयों तथा पत्रकारिता के पाठ्यक्रमों में अंतर्राष्ट्रीय विषय शामिल किए जाने चाहिए।

3. दूसरे देशों और संस्कृतियों के बारे में निकट से जानकारी देने वाले संचार माध्यमों, व्यक्तियों तथा संगठनों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

4. संकट तथा तनाव के समय अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं और घटनाक्रम का विवरण पूरी सावधानी और जिम्मेदारी से दिया जाना चाहिए। ऐसे समय विरोधी पक्ष के साथ संचार माध्यम एक महत्वपूर्ण कड़ी का काम करते हैं। इसलिए उन्हें अपनी जिम्मेदारी रचनात्मक और संवेदनशील ढंग से निभानी चाहिए।

**बारह महत्वपूर्ण सुझाव-** इस रपट में सूचना एवं संचार के क्षेत्र में हर देश के सामने मौजूद काम की महत्ता और अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रों के समुदाय के सामने खड़ी चुनौती पर विचार किया गया है। नए संचार माध्यमों की तकनीक का लाभ सभी देश उठा सकते हैं। वे उन माध्यमों से अपने संबंध अधिक व्यवस्थित कर सकते हैं। सर्वेक्षण में इस महत्वपूर्ण उपलब्धि के साथ इस तथ्य पर भी बल दिया गया है कि सूचनाओं के आदान-प्रदान और प्रवाह में इस समय विश्वव्यापी असंतुलन है। हमारी कोशिश होनी चाहिए कि वर्तमान संचार विषमताएं अधिक न बढ़ें और विश्व भर के स्त्री-पुरुष अधिक समृद्ध जीवन जी सकें। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए आयोग के सदस्यों ने बारह सुझाव दिए हैं-

1. विभिन्न सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्थाओं वाले धनी तथा निर्धन देशों के हितों की एक-दूसरे पर निर्भरता का गहराई से अध्ययन करने की जरूरत है।
2. इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए विभिन्न देशों में विविध माध्यमों से प्राप्त परिणामों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाना चाहिए।
3. भाषागत सीमाएं लांघकर अंतर्राष्ट्रीय सद्भाव पर आधारित अंतर्राष्ट्रीय सहयोग किया जाना चाहिए।
4. समाचार संग्रह और वितरण, सांख्यिकी कोशों, प्रसारण कार्यक्रम बैंकों व विनिमय केन्द्रों तथा विवरणों के आदान-प्रदान से ही नई सूचना व संचार व्यवस्था की स्थापना संभव है।
5. विभिन्न कठिनाइयां दूर करने तथा विश्व संचार व्यवस्था को तर्कसंगत बनाने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ और उसकी संबद्ध संस्थाओं के मसौदों का ज्यादा से ज्यादा प्रचार किया जाना चाहिए।
6. आचार संहिता निर्धारित करके पत्रकारिता व्यवसाय को उचित मान्यता दी जानी चाहिए।
7. सांस्कृतिक, व्यक्तिगत तथा नैतिक मूल्यों की रक्षा करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय विज्ञापन आचार संहिता निर्धारित की जानी चाहिए।
8. विश्व भर में समाचारों के संग्रह और उनके प्रसार के व्यावसायिक, आचारशास्त्रीय और न्यायिक पहलुओं से संबद्ध समस्याओं के उचित अध्ययन के बाद गोलमेज संमेलन आदि की व्यवस्था की जानी चाहिए।
9. अपने काम को अंजाम देते हुए पत्रकारों के संरक्षण के विषय में विशेष अध्ययन होना चाहिए। किसी प्रकार का परिचयपत्र छीन लेने पर या उसे उससे वंचित करने पर उसे न्याय प्राप्त करने का अधिकार दिया जाना चाहिए।
10. संचार के उपेक्षित ग्रामीण क्षेत्रों में दृश्य, श्रव्य प्रसारणों की सुविधा, करों की छूट, कम ब्याज के ऋणों, सहायता आदि के द्वारा रेडियो और टेलीविजन सेटों का अधिक वितरण होना चाहिए। साथ ही जिन क्षेत्रों में बिजली नहीं पहुंची है, उनके लिए शक्तिशाली जेनरेटर बनाए जाने चाहिए जिससे कम विकसित देश भी संचार माध्यमों का ज्यादा से ज्यादा लाभ उठा सकें।
11. राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तरों पर संचार माध्यमों की कमी के कारण जानने के लिए राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय साधनों, उनकी मौजूदा लागत, नए वित्तीय साधनों की खोज आदि का व्यवस्थित अध्ययन किया जाना चाहिए।

12. नए साधनों की खोज कच्चे माल पर अतिरिक्त लाभ से मिले साधनों, विकासशील देशों के लिए अतिरिक्त अंतर्राष्ट्रीय उपकार की व्यवस्था, बहु राष्ट्रीय निगमों द्वारा विकासशील देशों में लगाए जा रहे दूर संचार उपकरणों पर अतिरिक्त करों की व्यवस्था आदि से की जा सकती है ।

मैकब्राइड आयोग ने अपनी रपट में विश्व जनसंचार माध्यमों के सर्वत्र प्रयोग के बारे में जिस नई व्यवस्था की स्थापना का सपना लिया है, वह कोई लक्ष्य नहीं है, बल्कि वह मानव की यात्रा का एक पड़ाव मात्र है । आयोग का एकमात्र प्रयत्न यही है कि संसार भर के समाज, देश और जन समुदाय अधिक स्वतंत्र, समान और न्यायपूर्ण स्थिति पाने की अपनी आकांक्षा पूरी करने के लिए प्रयत्नशील हो सकें ।

**विशेष** - भारतीय प्रतिवेदन के अंतर्गत प्रथम प्रेस आयोग एवं द्वितीय प्रेस आयोग का अध्ययन आप बी.जे.एम.सी. पी. जी. डिप्लोमा पत्रकारिता पाठ्यक्रम के अंतर्गत कर चुके हैं ।

## NOTES

## विश्वविद्यालय द्वारा संचालित पाठ्यक्रमों की सूची

पाठ्यक्रम का नाम	अवधि
1. स्नातक उपाधि प्रारम्भिक पाठ्यक्रम	6 माह
2. भोजन एवं पोषण में सर्टिफिकेट	6 माह
3. कम्प्यूटर ज्ञान एवं प्रशिक्षण का प्रारम्भिक पाठ्यक्रम	6 माह
4. सर्टिफिकेट इन कम्प्यूटिंग	6 माह
5. पंचायती राज प्रोजेक्ट में प्रमाण-पत्र	6 माह
6. संस्कृति एवं पर्यटन में प्रमाण-पत्र	6 माह
7. महिलाओं में वैधानिक बोध में प्रमाण-पत्र	6 माह
8. राजस्थानी भाषा एवं संस्कृति में प्रमाण-पत्र	6 माह
9. बी.ए.एफ./बी.सी.एफ. (त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम)	1 वर्ष
10. एम.ए.(अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, इतिहास, हिन्दी)	2 वर्ष
11. एम.बी.ए.	3 वर्ष
12. पी.जी.डी.एच.आर.एम.	1 वर्ष
13. पी.जी.डी.एफ.एम.	1 वर्ष
14. पी.जी.डी.एम.एम.	1 वर्ष
15. पी.जी.डी.एल.एल.	1 वर्ष
16. टी.एच.एम.	1 वर्ष
17. डी.एन.एच.ई.	1 वर्ष
18. डी.सी.ओ.	1 वर्ष
19. डी.एल.एस.	1 वर्ष
20. डी.सी.सी.टी.	18 माह
21. बी.जे.(एम.सी.)	1 वर्ष
22. एम.जे.(एम.सी.)	2 वर्ष
23. बी.लिब.	1 वर्ष
24. पर्यावरण विज्ञान में स्नातकोत्तर डिप्लोमा	1 वर्ष
25. बी.एड.	2 वर्ष
26. पी.एच.डी.	3 वर्ष
27. पी.जी.डी.ई.एस.डी.	1 वर्ष